॥ श्रीगणेशायनमः ॥

श्री कृष्ण पुस्तक माला नं: १

चोर सुलतान

एक विचित्र मनोहर बंग भाषाके
उपन्यास का अनुवाद

अनुवादक मथुरा निवासी
श्रीकृष्णकुमार देवशर्म्मा

जिसको
लाला श्यामलाल अग्रवाल ने
अपने श्यामकाशी प्रेस
मथुरा में
छापकर प्रकाशित
किया

सम्वत् १९६९ मूल्य १)

निवेदन

मैंने यह पुस्तक बंग भाषा के चोर सुलतान नामक पुस्तक से अनुवाद की है ग्रन्थकार महाशय ने अपना नाम प्रकट नहीं किया है जैसा कि अगाडी भूमिका पढ़ने से मालूम होगा। यह पुस्तक स्त्री पुरुष सब के पढ़ने लायक है। इसमें यह दिखलाया गया है कि मनुष्य जी चाहे जितने कठिन काम को कर सकता है और स्त्री पुरुष अपने धर्म की रक्षा किस प्रकार से भली भांति कर सकते हैं।

होली दरवाजा मथुरा | निवेदक
चैत्रबदी७रविवार सं. १९६८ | श्रीकृष्णकुमारदेवशर्मा

भूमिका।

कुछ दिन पहले लण्डन नगर के एक अंग्रेज से मेरी मुलाकात हुई, कुछ दिन में ही मुलाकात से मित्रता का भाव पैदा होगया। उस सज्जन का नाम रोजार गिवसन, वह खूब जवान, उमर तीस वर्ष अति सुपुरुष था; और अनेक जगह घूमने और नाना प्रकार के सुखोंसे मुंह प्रफुल्ल, आंखें उज्वल, देखने से मालूम होता है कि मनुष्य असाधारण बुद्धिमान है। उसका साहस भी अतुलनीय है; वह पृथ्वी के अनेक देशों की अनेक जातियों से मिला है, और नाना प्रकार के दुःसाहस के काम किये हैं। वह कहां किस तरह विपत्त में पड़ा था एवम् उस से कैसे छुटकारा पाया था, वह सब बात समय समय पर मुझे सुनायीं, वे बातें जितनी चित्तरंजक है, उतनी ही कौतूहलोद्दीपक हैं।

सहसा एक दिन मिःगिवूसन् निरुद्देश हुए, वह कहां गये सो विचार कर स्थिर नहीं कर सका; पेरु से साईबेरिया तक पृथ्वी का कोई स्थान उनका अपरिचित वा, अगम्य नहीं था, वे किस उद्देश्य से कहां गये हैं, यह कैसे जानूं ? किन्तु ख्याल हुआ कि वह कहीं रुपया कमाने को गये हैं। उनका पेशा क्या है यह बात उनने कभी मुझ से नहीं कही थी। दो तीन महीने बाहर रह कर वह पांच सात हजार रुपया पैदा कर लण्डन लौट आते थे यह मैं जानता था। वह बहु— भाषी थे, यूरुप और एशिया की आठ दश भाषाओं में बखूबी बात चीत कर सकते थे; बन्दूक चलाने और घोडे की सवारी करने में वे निपुण थे, और तिलियार्ड आदि खेलों में भी उनके समान कोई नहींथा वे बहुतही सरल, परिश्रमी और व्यापार में कुशल थे, बातों में वे सबको मुग्ध कर लेते थे, एक साथ इतने गुण किसी में नहीं देखे।

इस तरह आकस्मिक अन्तर्ध्यान होनेके वर्ष दिन पीछे एकदिन मिः गिवसन् सहसा लण्डनमें आ पहुंचे, किन्तु दो तीन सप्ताह पीछे उन ने कहा कि किसी काम के कारण मुझे फिर बाहर जाना पडेगा। मैंने उनसे कहा " इतने दिन तुम कहां रहे, क्या करते रहे यह जानने की मुझे बड़ी इच्छा है। "

मिःगिवूसन् ने कहा, " यह बडी बिचित्र बात है, यह बतला कर मैं आपकी इच्छा पूर्ण नहीं कर सकूंगा। वह अपूर्व कहानी उपन्यास की तरह अद्भुत है। यदि तुम उसे पुस्तकाकार प्रकाश करने का भार ले सको तो तुमको लिख देने के लिये प्रस्तुत हूं। "

मैं उनके प्रस्ताव के सहमत हुआ, लण्डन से जाने के कई दिन पहले वह मेरे पास एक खाता रखगये, उस खाते को पढ़लेने पर मेरे विस्मय की सीमा न रही। उस खाते में उनने जो अदभुत वृतान्त लिखा था, वही यहां प्रकाशित किया है।

॥ ओ३म् ॥

॥ चोर सुलतान ॥

(मिं० गिबूसनकी आत्म कथा)

इंगलेण्ड की भूतपूर्व अधीश्वरी महारानी विक्टोरिया की "जुवली" की बात बहुत पुरानी नहीं है, सुतराम् उस समय की बात पाठकगण स्मरण रख सकते हैं। उस जुवली के उपलक्ष में यूरुप और एशिया के अनेक स्वाधीन नरपति निमन्त्रित हो इंगलेण्ड की जुवली देखने गये थे। एशियाके जो सब राजा उस उपलक्ष में इंगलेण्ड गये थे, उनमें "आवेरिया" राज्यके सुलतान भी थे। "आवेरिया" राज्य के सुलतान के साथ इस आत्म कहानी का घनिष्ट सम्बन्ध है, इस लिये उनकी बात इस जगह विशेष भाव से उल्लेख करता हूं।

आवेरिया के सुलतान अपने राज्य में यथेष्ट शक्तिसम्पन्न नरपति थे। उनका राज्य छोटा नहीं, और वह भी छोटे नहीं। उनका देह लम्बाई में छः फीट तीन इंच अर्थात् साधारण लोगों की, अपेक्षा उन का शरीर दीर्घ था। एशियादेश वासीयों के हिसाब में उनका वर्ण और था। शरीर के हिसाब से आंखे छोटी थीं, किन्तु नाक बड़ी थी। वे सहज में ही नाराज होजाते थे और जिसके ऊपर नाराज होते उस के जीवन की आशा नहीं रहती, उनके राज्य में आदमी को बातों ही बातों में प्राण दण्ड मिलजाता था और अपराधियों को अनेक प्रकार की यन्त्रणा दे जानली जाती थी।

किन्तु इंगलेण्ड में पहुँच कर वह ऐसे भले मानुष सजे कि सहज में ही उनकी उग्रता का परिचय नहीं मिलसकता था। विलायत

में उनका अनेक सम्भ्रान्त व्यक्तियों से परिचय होगया था, वे सब ही एक वाक्य से कहते थे कि, आवेरिया के सुलतान परम धार्मिक, राजनीतिज्ञ और दूरदर्शी नरपति हैं, उनको यह भी खवर मिली थी कि आवेरिया की प्रजा मण्डली परम सुख शान्ति से वास करती हैं, सुविस्तीर्ण राज्य में कुछ भी अभाव नहीं है। किन्तु जो सब हतभाग्य प्रजा उनके राज्य में रहकर तनक भी शान्तिभंग करती, उनकी नाक, कान और जीभ छेदकर किस तरह उनका कण्ठरोध किया जाताथा यह बात इंगलेण्ड के सम्भ्रान्त लोगों के कान तक नहीं पहुंची थी। सुतराम् इंगलेण्ड के सम्भ्रान्त लोग सुलतान का खूब आदर सत्कार करते थे।

सुलतान इंगलेण्ड अकेले नहीं गये; अपने प्रधान वजीर, कई मुन्सी, बहुसंख्यक आज्ञाकारी नौकर एवम् देह रक्षक साथ ले रवाने हुए। उनके आने की खवर सुन बहुत आदमी गाडियों में सवार हो दर्शन करने के लिये गये। उन दर्शकों में मैं भी एक था। तब मुझे स्वप्न में भी ख्याल नहीं हुआ कि भविष्य में एक दिन मुझे भी इनके फंदेमें फंसना पडेगा, यह एक दिन मुझे बहुत तंग करेंगे। यदि यह बात पहले से मालूम होती तो मैं उन्हें अच्छी तरह जान ने के लिये कोशिश करता एवम् सम्भवतः उसके लिये मौका भी पाता, क्यों कि वह इंगलेण्ड में बहुत दिन रहे थे।

सुलतान इंगलेण्ड पहुँचने पर बहुत सफर करनेके कारण थक जाने की वजह से उस दिन घर से बाहर नहीं निकले, किन्तु दूसरे दिन से ही वे बहुत समारोहके साथ शहरमें घूमने लगे। किसी दिन अंग्रेजी सेनाकी कवायद देखते, किसी दिन गार्डेन पार्टी में शामिल होते; एक दिन वकिंगहाम महल में राजकीय बलनाच भी देखने गये थे। सुलतान वीर पुरुष एवम् रणनिपुण योद्धा होने के कारण, कृत्रिम युद्ध देखकर जितने प्रसन्न हुए, उतने और किसी से नहीं हुए।

इंगलेण्ड का मन्त्रीसमाज भी कभी कभी सुलतान से मिलने जाया करता था; सुलतान आदर पूर्वक उनकी अभ्यर्थना कर यथेष्ठ शिष्टाचार सहित नाना प्रकार की बातें करते। किसी २ सम्बाद पत्रके प्रतिनिधि भी सुलतान से मिलने गये थे। उनने अपने अपने पत्र में प्रकट किया था कि, सलतान साक्षात सौजन्य की मूर्ति हैं।

एक दिन सन्ध्या के समय सुलतान एक म्यूजिक हाल में अपेरा देखने गये वहां इतने खुश हुए कि, उनने अपने वजीर को हुक्म दिया कि अपेरा के खेल करने वालों को सामान सहित खरीद कर हमारी राजधानी में भेज दो। किन्तु वजीर ने सविनय समझाया कि इस राज्य में आदमियोंके खरीद ने की रीति नहीं है; धातु शिला के समान मन माफिक आदमियों को खरीद कर दूसरे राज्य में भेजने का इस राज्य में नियम नहीं है। इस से सुलतान बड़े नाराज हुए और कहा "जिस राज्य में मेरा हुक्म नहीं माना जावेगा उस राज्य में मैं अधिक दिन नहीं रहसकता"।

कुछ ही दिनों में आवेरिया के सुलतान का नाम इंगलेण्ड की प्रजा के साधारण से साधारण मनुष्य तक उच्चारण करने लगे; घाट, बाट, पथ, थीयेटर, होटल, मूदीकी दूकान आदि पर सर्वसाधारण सुलतान का जिकर करने लगे। सम्वादपत्रों में भी सुलतानके विषय में लम्बे २ प्रबन्ध निकलने लगे।

सुलतान के लण्डन पहुंचनेके सप्ताह पीछे वामवबो की डिऊक महिषीने कितनेही लोगों को एक गार्डिनपार्टी में निमन्त्रण दिया, आवेरिया के सुलतान के प्रति सन्मान प्रदर्शन काही इस प्रीति सम्मिलन का उद्देश्य था। इस उपलक्षके समय डिऊकका महल उद्यान- भवन, और उद्यान अति सुन्दर रूपमें सजाये गयेथे और खूब रोशनी की गई थी। डिऊककी लडकी अलिभिया जितनी सुन्दर थी उतनी ही गुण-वतीथी। वह अतिही सुन्दर और मूल्यवान वस्त्र पहने हुए परीके समान सजी हुई नाच घर की शोभा बढ़ा रही थी। उस समय इंगलेण्ड मे सुर सुन्दरीयों के समान सुन्दरीयों का अभाव नहीं था; किन्तु सच्ची बात यह है कि लेडी अलिभिया के समान सुन्दरी मैं ने कभी नहीं देखी। इस परिवार की स्त्री सबही रूपवती थीं, किन्तु रूप गौरव में लेडी अलिभिया सब से बढ़कर थी। विधाता ने जितना रूप दिया था उसी ढंग का सुकोमल सुकुमार देह गठन किया था। सुलतान के प्रति सन्मान-प्रदर्शन के लिये उस सन्ध्या को जितने स्त्री पुरुष वहां थे वे सबही निर्निमेष-नेत्रों से उस अपरूप सुन्दरी के रूपकी शोभा देखने लगे; यहां तक कि, आवेरियाके सुलतान भी स्थान-काल को भूल कर लेडी अलिभिया की तरफ निगाह फाडकर देखने लगे। अन्त में

जब डिऊक-महिषी ने अपनी कन्या आलिभिया को सुलतान से परिचित कराया, तब सुलतान को ध्यान हुआ। सुलतान ने फरासी भाषा में डिऊक-महिषी से कहा, "मादाम आपका आतिथ्य ग्रहण कर मैं जितना तृप्त हुआ हूं, आपकी कन्या से परिचित होकर उससे भी अधिक तृप्त हुआहूं। आपने सर्वश्रेष्ठ रत्न को मुझे अन्त में दिखलाया।"

डिऊक-महिषीने कहा, "सुलतान साहबकी बात से मैं यथेष्ठ सन्मानित हुई; चालिये इस समय बाग में टहल आवें।"

सुलतान डिऊक-महिषी की बात पर राजी हुए, लेडी आलिभिया को साथ लेकर वे एक कुसुम-कुञ्ज की तरफ चलने लगे एवम् उस जगह विभिन्न संगमरमर पत्थर के बने हुए आसनों पर तीनों बैठ गये और बातें करने लगे। इतने में एक नौकर ने आ डिऊक-महिला से कहा, राज परिवार में से कोई आये हैं। यह खबर पाते ही डियूक-महिषी उनकी अभ्यर्थना के लिये उस जगह से चल दी।

सुलतान के साथ बातें करने के लिये लेडी आलिभिया उस जगह बैठी रह गयी। आलिभिया को अकेली बैठी देख कर सुलतान की बातें बहुत बढ गयी; क्रमशः अनेक बातों के पीछे सुलतान के आवेरिया राज्य के समान एशिया में दूसरा राज्य नहीं है, वह यहां चार पांच करोड प्रजा के हर्ता-कर्ता है, उसके मूंह के शब्द ही उस जगह का कानून है, उनकी राजधानी नन्दनकानन तुल्य है, उसके राज्य में जो मरु भूमि है, वह भी कितनी सुन्दर है और उसकी महिषी अर्थात् बेगम साहब के समान तो भाग्यवती स्त्री भू मण्डल में और दूसरी नहीं है, बेगम साहब के शरीर पर जो सब हीरा मणि-माणिक्य झलमलाते हैं उस में से एक एक उस की कीमत में एक एक बड़ा राज्य खरीद लिया जासकता है, यह बात कहने के समय सुलतान ने आलिभिया के चहरे की तरफ अस्थिर निगाह से देखा। फिर आलिभियाके रूपकी प्रशंसा शिरूकी कहा, "पृथ्वी पर उसने हजारों सुन्दरी देखी हैं, किन्तु ऐसा रूप जिन्दगी भर में कभी नहीं देखा, परमेश्वर की विशेष अनुग्रह बिना कोई ऐसे अलौकिक रूपकी अधिकारिणी नहीं होसकती।"

इसी तरह अनेक बातें होने लगी। सहसा एक विषयमें सुल-तान से आलिभिया का मत-भेद होगया। अलिभियाने यथेष्ट शिष्टाचार के साथ, किन्तु दृढभाव से सुलतान की बात का प्रतिवाद किया। सुलतान ने, अलिभिया की निर्भीकता और स्पष्ट वादिता देख विरक्त न हो, अत्यन्त आनन्द प्रकाश किया। किन्तु यह बात मैं बिना संकोच के कह सकता हूंकि, यदि सुलतान के महलमें रहने वाली कोई महिला यहांतक कि उनकी प्रियतम बेगम साहब भी इस तरह उन की बात का प्रतिवाद करती, तो उनके धड पर शिर का रहना कठिन हो जाता।

सुलतानने शिर नीचा कर अपने मनमें कहा, "जैसा अद्भुत देशहै वैसेही अद्भुत आदमी हैं। इस देश में एकभी आदमी हथियार लेकर शहर में नहीं घूमता, स्त्री भी घुघट नहीं मारतीं, फिर मेरे समान सुलतान के मुंह पर स्पष्ट भाषा में बात का प्रतिवाद करती हैं, किन्तु यह युवती आश्चर्य सुन्दरीहै, मैंने इसी लियेइसका अपराध क्षमा किया।'

ऐसे समय में डियूक-महिषी के साथ एक राजकुमार के आजाने के कारण सुलतान की जवान बन्द हुई।

गार्डेन पार्टी के आमोद प्रमोद समाप्त होने पर सुलतान वजीर को साथ ले वासे को रवाने हुए। गाडी में जाते जाते सुलतान ने लेडी अलिभिया की बात छेडी एवम् उसके रूपकी प्रशंसा कर कहा, "कृष्टानी इतनीसुन्दर होती हैं यह बिना देखे कोई विश्वास नहीं करेगा" वजीर उनके पास पुतली के समान बैठा हां में हां मिलाने लगा; और इस बिषय में वजीर का भी मत भेद नहीं था। घोडे गाड़ी के मृदुझोंकों से सुलतान को नींद आने लगी। दो तीन वार जमाही लेकर आखें बन्द करली; किन्तु उनके हृदय में अलिभिया का रूप बिजली की रोशनी के समान फैला हुआ था एवम् उस रोशनी से उनकी हृदय शान्त हो सो नहीं, अग्नि के समान उनके हृदय को जला रहा था। उनका हृदय जो तीक्षण कुसुम से बिद्धगया था, इसी से उनको बाहरी ज्ञान नहीं रहा एवम् उनके हृदय में जो पाप लालसा पैदा हुई उसने उन को कितने भीषण और दुःसाहस के काम में प्रवृत किया, वह बात याद करने से ही देह रोमाञ्चित होता है।

सुलतान ने अपने मन में ख्याल किया होगा, कि लेडी अलिभिया

मुझ से मिलकर अपने लिये कृतार्थ हुई होगी एवम् इस सन्मान की बात जिन्दगी भर वह अपने मनमें रखेगी; किन्तु प्रकृत पक्ष में सुलतान की यह धारणा नितान्त अमूलक है कारण, लेडी आलिभिया गृहस्थ वा साधारण धनाढच की लडकी नहीं है। जिस घर में उसका जन्म हुआ है उस परिरार के लोग यूरुप के मुकुटधारी राजगण के सहित बिना सकोच के बातें करते हैं। सतराम् सुलतान के समान एक पूरबी नरपतिसे मुलाकत होने पर आलिभियाने अपने लिये धन्य नहीं समझा। अलिभिया राज पुत्रको अपनी माता के साथ आते देख खड़ी हो गयी एवम् राजपुत्र के हाथ पर हाथ रख दूसरी तरफ चली गयी।

सुलतान ने बास पर आ रातको नींद में बडा अद्भुत स्वप्न देखा। सुलतान के मुल्लाजी उनके साथ इंगलेण्ड गये थे। सुलतान ने सुबह उठकर उनको बुलाया। मुल्लाजी यह सोचते हुए कि मेरे भाग्य में क्या है कांपते कांपते धरती को छूकर भगवान का नाम स्मरण करते करते सुलतान के सामने हाजिर हुए और पूछा, "जहांपना, दिन-दुनियां के मालिक, इस गुलाम के लिये क्या हुक्म है ?"

सुलतान ने कुछ सोच विचार कर कहा, "मुन्सीजी, मैं ने एक स्वप्न देखा है, तुम को उसकी व्याख्या करनी होगी। स्वप्न देखा था, मैं अपनी राजधानी से बहुत दूर पर एक मरुभूमि में आ पड़ा हूं, मेरा ऊंट चल नहीं सकता; संग में एक बूंद पानी नहीं है, एक टूक रोटी का भी नहीं है, भूख के मारे तडफडा रहा हूं, प्यास के मारे कंठ सूख गया है; किन्तु जितनी दूर निगाह जाती है उतनी दूर आश्रय दिखलायी नहीं पडता हैं; चारों तरफ बालू समुद्र के समान दिखलायी पडती है। चलते चलते मेरा ऊंट इतना थक गया कि अन्त को वह पैर फैला कर बालू के ऊपर गिर गया; प्रचण्ड धूप से मेरी आखों में आग जलने लगी; पसीनों में मेरा सब शरीर भीग गया तकलीफ के मारे में झट पटाने लगा। इस विषम संकट से मुक्ति पाने के लिये मैं कभी अल्ला, कभी परमेश्वर कह कह कर पुकारने लगा; कि, "हे अल्ला मेरी जान ले लो, अब तकलीफ नहीं सही जाती।" किन्तु अल्लाने मेरी बात न सुनी; मैं तो नहीं मरा किन्तु मेरा ऊंट उसी गरम बालू के ऊपर पडते ही मर गया। मैं उस मरे ऊंट की

पीठ पर से उतर भीषण मरुभूमि के ऊपर पैदल चलने लगा। क्रमशः सन्ध्या होगयी धीरे धीरे सफेद हीरा के टुकडे के समान सैकड़ों तारे उस मरुभूमि के ऊपर आकाश में शोभायमान होने लगे। रात में भी मैं चलता रहा, कितनी दूर चला कितनी देर चला सो याद नहीं। उसी अन्धकार रात में दिगन्त-विस्तृत भषिण मरुभूमि में सहसा एक उज्वल रोशनी दिखलायी पडी; वही रोशनी धीरे धीरे मेरे पास आने लगी, फिर उसी रोशनी में से एक सुन्दर युवती ने निकल मुझ से अपने पीछे आने को कहा। मैं चुप चाप उसके पीछे चलने लगा वह मुझे खजूर की कुंज में ले गयी। उस जगह एक शीतल स्वच्छ जल का झरना देखा, मैं ने उसी जलको पीया, मानो वह स्वर्ग में अमृत है वही सुमिष्ट शीतल जल पीने पर मेरी नींद टूटी। जब जगा तब देखा कि वह मुझे रास्ता दिखलाने वाली युवती अब नहीं है। अब-दुल्ला मुन्शी, तुम इस स्वप्न की व्याख्या करो, मैं इस का मतलब नहीं समझा।"

अबदुल्ला अपने सुलतान को खूब जानता था। वे अलिभिया के रूप पर मोहित हो गये हैं यह बात भी चतुर अबदुल्ला से छिपी नहीं थी। उसने हाथ जोड़ कर सुलतान से कहा, "जहांपनाह मेरी किताब में सब तरह के स्वप्नों की व्याख्या है, तब भी सब स्वप्नों की इतनी अधिक अलोचना नहीं है, सुलतान के आदेश पालन के लिये सब व्याख्या हमेशा देखनी पड़ती हैं। जहांपनाह स्वप्न में जो आपने मरुभूमि देखी है वह यही देश है। हम जिस देश के आदमी हैं, उस देश के सामने यह मरुभूमि नहीं है तो क्या है? इस मरुभूमि में सुलतान ने जो रोशनी देखी है, वह रोशनी किसकी है, सो बतला सकता हूं, यदि शाहनशाह मुल्क के मालिक इस गुलाम का कसूर माफ करें।"

सुलतान ने आग्रह पूर्वक कहा, "तुम निर्भय हो कहो।"

अबदुल्ला, "वह रोशनी स्त्री के रूप की है।"

सुलतान ने हंस शिर नीचा हलाकर कहा, "हां हां तुमने ठीक ठीक कहा, फिर क्या?"

अबदुल्ला ने कहा, "जहांपनाह उस युवती को इस देश में सब से अधिक रूपवान समझना, वही युवती आपको प्रेम के झरने पर ले जाकर सुशीतल प्रेम-जल पिलालायी अर्थात जहांपनाह को मन

प्राण समर्पण कर दिया; उसी की सहायता से आप सुख की खजूर कुंज में उपस्थित हुए जहांपनाह के स्वप्न की यही व्याख्या है।"

सुलतान अपने आनन्द को मन में और नहीं छिपासका, साहस से कहा, मुन्सीजी तुम्हारी व्याख्या बिलकुल सच्ची है, और बहुत ही अच्छी है। इस समय तुम से और क्या कहूं, खुदा की महरबानी से अगर यह स्वप्न किसी दिन सफल हुआ तो तुम को सोनेके महल में वास कराऊंगा। अब तुम जाओ।"

अबदुल्ला मुन्सी सुलतान को आशीर्वाद देता देता चला गया। सुलतानसे पुरस्कार पाने की आशा से उसका मन खूब प्रसन्न हुआ किन्तु उसकी यह प्रसन्नता अधिक समय तक स्थायी नहीं रही, उसे ख्याल हुआ कि यद्यपि मैं ने देव वाणी की व्याख्या कर सुलतान को सन्तुष्ट किया है, किन्तु देव वाणी का सफल होना बिलकुल असम्भव है। सुलतान दोनो हाथ ऊपर की तरफ उठा आकाश के चन्द्रमा को लेना चाहता है। देव वाणी सफल नहो ने से विपत्त आवेगी। सुलतानी क्रोध ही अनुग्रह के वदले में निग्रह की व्यवस्था कर सकता है। आवेरिया राज्य में इस के दृष्टान्त की कमी नहीं है। कुछ दिन पहले आवेरिया राज्य में टीडी आयी थी, असंख्य टीडी दल से कई घन्टे तक आकाश छिपा रहा, यह देख कर सुलतान विस्मित हुए और एक मुन्सी ने पुस्तक देख कर कहा, इस टीडी दल का फल अति बृष्टि है, एक सप्ताह के भीतर मूसलधार वर्षा होगी। किन्तु एक सप्ताह की बात तो दूर रही एक महीने में भी वृष्टि नहीं हुई। इस पर सुलतान ने क्रोध हो मुनसी के शिर छेद देने की आज्ञा दी थी इस बातको याद कर अबदुल्ला मनही मन दुखी होने लगा।

इस घटना के कई दिन पीछे बार्कलेस्कवेर की रात की मजलिस में सुलतान की लेडी अलिभियासे द्वितीय बार भेट हुई। सुलतान के हृदय में जो फैन उठ रहे थे, उनका विष सुलतान के शिरमें पहुंच गया। उनकी मानासिक शक्ति जाती रही, धैर्य्य का बन्धन शिथिल होगया, उनको ख्याल हुआ कि अलिभिया को हस्तगत बिना किये उनको सुखशान्ति और नहीं मिलेगी।

उस दिन रातको वासे में लौट आ जाने पर सुलतान ने वजीर को बुलाया एवं दरवाजा बन्द कर प्रायः एक घन्टे तक न मालूम

कथा परामर्श किया। परामर्श समाप्त होनेपर वजीर अपने कमरेमें लौट आया औरपलंग पर लेट लम्बी सांस भरकर कहा, "कितने आश्चर्य्य की बातहै कि सुलतान की इतनी बेगम होनेपर भी नयी बेगम बिना तृप्ति नहीं! उसकी इच्छा पूर्ण होना असम्भव है, मैं सोच विचार कर क्या करूंगा? अल्ला की जो मर्जी होगी वही होगा। हाथ उठा कर क्या वज्राघात को कोई रोकसकता है?

दूसरे दिन सुबह वजीर वाम्बरोके डिऊक से मिलनेको चले। डिऊक उस समय अपनी स्त्री से बातें कर रहे थे, उनके पास खबर पहुंची कि आवेरिया राज्य के वजीर आप से साक्षात् कर ने के लिये प्रार्थी हैं।

वजीर क्यों उनसे साक्षत् करने आया है सो डिऊक नहीं जान सके। आवेरिया के सुलतान से उनकी इतनी घनिष्ठता नहीं कि किसी कारण से उनका वजीर साक्षात् करने के लिये आवे, केवल एक दिन भद्रतावश अन्य सम्भ्रान्त राज पुरुषों की तरह सुलतान को भी निमन्त्रण किया था। यह घनिष्टता का परिचय नहीं है।

खैर जो हो, शिष्टाचार के वश डियूक ने वजीर से साक्षात् किया। वजीर ने पहले अपने आने का कारण बतला कर और और बातों में समय बिताने लगा, डिऊक बहुत ही कष्ट से धैर्य्य धारणकर उसकी बातें सुनने लगे। फिर बातों ही बातों में वजीर ने प्रकट किया कि, आवेरिया के अधीश्वर आपकी सुन्दरी कन्या का पाणि ग्रहण कर ने की इच्छा प्रकट करते हैं।

यह बात सुनते ही डिऊक की आखें और मूंह लाल होगया। वह कुछ देर चुप रहे, उनको कभी ऐसा ख्याल नहीं था कि सुलतान ने इस प्रकार के प्रस्ताव को प्रकट करने के लिये वजीर भेजा है। डिऊक को अत्यन्त क्रोध आने पर भी उनने वजीर को प्रकट न होने दिया, यथेष्ट शिष्टाचार प्रदर्शन पूर्वक उससे कहा, सुलतान के प्रस्ताव मत काम होना कठिन है, अतएव फिर कभी इसके लिये उन्हें अनुरोध न करना चाहिये।

वजीर यह बात सुन सुलतान के पास गया और डिऊक के कहे हुए शब्द कह सुनाये इंगलेण्ड का एक सामान्य जमींदार अपने

से बहुत बड़े सुलतान को अपनी लड़की के देने में अगौरव की बात मन में समझता है यह जान सुलतान को बड़ा क्रोध आया, उसका सब शरीर थर थर कांपने लगा, उसका मुंह और आंखें लाल होगईं। उस ने वजीर को अपने सामने से फौरन चले जाने को कहा। फिर उसने प्रतिज्ञा की, जैसे हो वैसे लेडी आलिभिया से विवाह करूंगा। यदि सहज में न होगा तो लेडी आलिभिया को हरण कर अपने देश में ले जाऊंगा ऐसा करने में उसका जीवन विपन्न हो, उसका राज्य रसातल को भी चला जावे; तौ भी उसे कुछ आपत्ति नहीं।

किन्तु इंगलेण्ड के बड़े घराने के अंग्रेजकी लडकी को चुराकर लेजाना इतने बड़े राज्य के सुलतान से नहीं होसका। उसने अपना मनोरथ सफल न हुआ समझ इंगलेण्ड त्याग किया। किन्तु संकल्प नहीं त्याग किया। इंगलेण्ड से सुलतान पारस गया और वहां कई दिन रहे फिर अपने देश को लौट गया उसने प्रतिज्ञा की कि अब फिर कभी यूरोप की तरफ नहीं जाऊँगा किन्तु किसी होश्यार आदमी के द्वारा उस कृष्टानी को चोरी करवाकर मगाऊंगा।

सुलतान के इंगलेण्ड से चले जाने पर डिऊक ने एक दिन अपनी स्त्री से कहा, " असभ्य सुलतान इस देश से चला गया बहुत ही अच्छा हुआ। जितने दिन वह यहां रहा उतने दिन मेरे बड़े ही उद्वेग और आशंका में कटे। वह गँवार और धनवान होने की वजह से न मालूम क्या क्या गोलमाल कर देता। "

डिऊक-महिषी ने कहा;– " जाने दो उस बात का ज़िकर भी मत करो, उस बात को सुन कर मेरा शिर घूमता है और चक्कर आते हैं। ऐसी बात सुनते ही छाती धड़कती है। "

इस तरह आवेरिया के सुलतान की इंगलेण्ड दर्शन से तृप्ति हुई, फिर आवेरिया राज्य में क्या हुआ एवम् मेरे समान अंग्रेज सुलतान के पंजे में पड़कर कितना दुखी हुआ, मेरी सहायत से उसने अपनी इच्छा पूर्ण करने की कितनी चेष्टा की थी एवम् उसका क्या फल हुआ, आप को अगले परिच्छेद पढ़ने से सब हाल मालूम होगा।

प्रथम परिच्छेद।

बिना बादलों के वज्राघात।

पृथ्वी पर इतने देश रहते मैं आवेरिया राज्य में क्यों गया था, उस बात से वर्तमान आख्यायिका से कोई सम्बन्ध नहीं है, सुतराम् उस बात की आलोचना करना अनावश्यक हैं। तो भी इतना कहदेना जरूरी है कि मैं उस जगह अपनी इच्छा से नहीं गया, मुझे कितने कारणों से लाचार होकर जाना पड़ा था।

युवाअवस्था के प्रारम्भ से ही मैं देश विदेश घूम रहा हूं। मैं बहुत पढ़ा लिखा नहीं हूं, किन्तु अनेक देश घूमने से मुझे बहुत ज्ञान हुआ है। विश्वविद्यालय में पढ़ने से भी इतना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। मैं विभिन्न देश के सम्भ्रान्त और सामान्य सब लोगों से मिला हूं; यहां तक कि मैं भारत की राजधानी कलकत्ते तक भी गया हूं. उस जगह का लाल बाजार, बहू बाजार, जान बाजार सब ही बाजार मेरे देखे हुए हैं, और भी आष्ट्रीया की राजधानी मेलवर्ण के लाट भवन में बैठ राज-प्रतिनिधि के साथ भोजन भी किया है। कोई यूरूपियन उस जगह कभी नहीं गया है, मैं उसी जगह बहुत दिन तक वास कर आया हूं। एक बार टष्किन के फरासी गवर्नर ने मुझे निमन्त्रित किया, किन्तु उस के आधीन कैदखाने में पहुंचने से मैं बड़ी मुश्किल से बचा, मेरी इस आख्यायिका का एक वर्ण भी झूठा नहीं है, झूंठी बात मैं प्रायःही नहीं बोलता। जब मैं म्यानीला में रहता था, उस समय एक बूढे म्यानीला वासीने उपदेश के बाहने से मुझ से कहा " झूठ बोलना बड़ी जरूरी बात है, किन्तु कभी उसको शिरू में काम न लाना, पहले सच्च बोलकर सबके विश्वासी बनो, फिर मौका देखकर झूठ चलाओ तब फिर तुम्हारी बात पर कोई अविश्वास न करेगा। " बूढ़े का वही उपदेश मैं ने मान रखा है।

आवेरिया की राजधानी में मैं अपने स्वाभाविक कपड़ों को पहने नहीं गया, मजबूरन मुझे वेश बदलना पड़ा था। मैं ने वहां के लोगों के से कपड़े पहने, उन कपड़ों से मुझे वहां कोई नहीं पहचान सका। एक दिन मैं उसी वेश में बाजार चला। जिस रास्ते से जा रहा था वह रास्ता तंग दुर्गन्ध मय और बहुत ही टेढ़ा तिरछा था। जाने

किस विशेष कारण से मैं ने इसी वेश में एक महीना बिताया; इसी से जी ऊब उठा। और एक सप्ताह इसी तरह बिता मैं अपना काम कर चुकने पर जी चाहे जहां जा सकूंगा। सच मुच इस वेश से मेरा जी घबड़ा गया था।

किन्तु उस मुसलमान राज्य में मुझे वेश बदले बिना कोई उपाय नहीं था, यदि किसी तरह प्रकट होजाता कि मैं मुसलमान नहीं बना बटी वेष में अंग्रेज हूं तो एक मिनट भी मेरी जिन्दगी नहीं रहती; मैं ने जैसे दुःसाहस के काम का भार लिया था, तिस में पद पद पर विपद की सम्भावना थी। और भी एक विपत की बात यह थी कि यदि कुछ घटना घटती तो बृटिस कौन्सल की सहायता का भी उपाय नहीं था; आफत की अवस्था में ब्रिटिश कौन्सल की शरण जाने से छुटकारे की बात दूर रही विपत्त और बढजाना सम्भव था। विशेषतः मैं उस जगह जिसकी दलाली करता था, उनसे मेरी यह बात ठहर गयी थी कि, यदि मैं किसी कारण से शत्रु के हाथ में पड़जाऊं, तौ मैं उनसे किसी प्रकार की सहायता न मागूंगा एवम् उनका नाम भी प्रकाश नहीं करूंगा। खैर जो हो, इतने दिन से काम निर्विघ्नता पूर्वक चल रहा है, एक सप्ताह और व्यतीत होने से यहां काम पूरा होजावेगा, मैं भी देश की तरफ जा सकूंगा।

खैर, जो मैं कह रहा था सो ही हुआ एकदिन मुझको एक कार्यवश उस राज्यकी राजधानी में अधिक घूमने की आवश्यकता हुई और मैं उसी मुसलमानी वेश में बाहर बाजार में निकला—उस क बाजारों की शोभा का वर्णन करना मेरी शक्ति से बाहर है जिधर देखा उधर बडे२दीर्घ शरीर वाले मुसलमान निज धर्म में लवलीन मतवाले सिंह के सामन टहलरहे हैं एवम् कोई यहूदी वा साधारण मनुष्य उनके सामने आजाता है तो उसे धक्का देकर दूर करते हैं कहीं भिखारी भिख मांग रहे है। यदि मैं चित्रकार होता तौ पूर्वी राजधानी के इस दृश्य की वैचित्रता का चित्र उत्तम रीति से खींचता। यह सब विचित्रता देखते देखते मैं एक परिचित मनुष्य के मकान की तरफ चला। उस जगह मेरा जरूरी काम था; काम इतना जरूरी था कि उसके सफल होने पर ही मैं इस देश से जा सकता था।

मैं जिस तरफ जा रहा था उस तरफ स्पेन देशके वासी रहते थे एवम् मैं जिस मनुष्य के पास जा रहा था वह भी एक स्पेनीय बड़ा

सौदागर था। कोई मेरा पीछा तो नहीं कर रहा है इस के ऊपर लक्ष्य कर मैं बड़ी सावधानी से चला जा रहा था। मैं बहुत दूर चल कर सौदागर साहब के मकान के दरवाजे पर पहुंचा, दरवाजे के पहरे वाले ने मुझ से पूछा, "आपको इस जगह क्या दर कार है!"

मैं ने कहा, "तुम्हारे मालिक से मिलने आया हूं, एक बहुत ही जरूरी काम है।"

फौरन ही सौदागर साहब से मुलाकात हुई; कितनी ही देर तक मेरी उनसे सलाह होती रही। जब मैं ने उनसे विदाली तब समय प्रायः बारह बजे का था, सूर्य्य उस समय प्रायः माथे के ऊपर थे, धूप इतनी तेज थी कि मुझे चलने में बडा कष्ट होने लगा। मैं जिस रास्ते से आया था उस से न जाकर दूसरे रास्ते से लौटने लगा। शायद कोई गोयन्दा मेरे पीछे न लगा हो इस लिये बार बार फिरकर देखने लगा। कुष्टाण्टिनोपिल के समान इस जगह भी गोयन्दाओं का बडा उतपात है, उन लोगों की तेज निगाह से निकलजाना बड़ा कठिनकामहै। इसजगहके सुलतान जिस तरह के निर्दय हैं, सूबेदार साहब उनकी अपेक्षा अधिक हृदय हीन हैं। यदि कोई मनुष्य किसी कारण से एक बार उनके हाथ में आजावे फिर रक्षा नहीं होसकती। यदि कोई गोयन्दा मेरा पीछा कर रहा हो, इसी डर से मैंने अपना रास्ता छोड पास की एक मसजिद में प्रवेश किया एवम् दरवाजे पर जूते खोल मसजिद के भीतर वाले उपासकों के बीच में जा बैठा; मुसलमान उस समय घोंटूओं को नवाये हुए अल्ला हो अकबर कहरहे थे, मैं भी उसी तरह बैठकर उपासना करने लगा किन्तु मेरी निगाह रास्ते के तरफ थी कोई मेरी तलाश में मसजिद में आता है वा नहीं, इसी लिये देखने लगा। किन्तु मेरे मसजिद में जाने के उपरान्त किसी को भी मसजिद में आते नहीं देखा, तो भी मेरे मनका सन्देह दूर नहीं हुआ, मेरे मन में ऐसा ख्याल होने लगा कि शीघ्रही किसी भयानक विपत्त में पडूंगा। मेरे मन में ऐसी आशंका क्यों उदय हुई सो नहीं समझ सका, किन्तु बहुत दिन से देखता आया हूं कि जब मेरे मन में ऐसा सन्देह हुआ है तब ही मैं भयानक विपत्त में पडा हूं, एक दो बार तो प्राण जाने की नौबत आचुकी है। जो हो, दुश्चिन्ता में और समय न गँवा मैं मसजिद के बाहर हुआ। मसजिद के पास एक काना फकीर भीख मांग रहा था उस ने मेरे पास आ अल्ला का

नाम ले कुछ भीख चाही। मैं ने फौरन उसे एक रुपया भीख में दे पास की एक छोटी गली में प्रवेश किया, इस में होकर जाने से कुछ ही दूर पर मेरा वासा था। कुछ दूर बढ़कर मैं ने पीछे फिर देखा, काना फकीर दूर पर खड़ा मेरी तरफ देख रहा है। मेरी दुश्चिन्ता और भी बढ़ गयी, किन्तु दौड़कर चलने से उसका सन्देह और भी बढ़ेगा, इसी अशंका में मैं जिस तरह से चला आरहाथा उसी तरह चलने लगा। चलते चलते मोड पर घूम कर मैं ने एक और भी छोटी गली में प्रवेश किया एवम् एक भीत के पीछे छिप गया। पैर की आहट से मालूम हुआ कि काना फकीर कुछ आगे बढ़कर चुप चाप खड़ा है, मेरे अकस्मात् निगाह से गायब होजाने के कारण अनुमान होता है कि कर्त्तव्य विमूढ होगया है। जो हो, मुझे न देख पाने के कारण न मालूम वह कहां चला गया।

काने फकीर के चले जाने के उपरान्त मैं ने छिपे स्थान से निकल फिर अपने वासे की राहली, एवम् कुछ हीदेरबाद वासे पर पहुंच गया। तब मेरे मन में नाना प्रकार की चिन्ता होने लगी, मेरे पीछे गोयन्दा लगे हैं इस में तनक भी सन्देह न रहा मेरे प्रति विधि लक्ष्य करने के लिये किसने गोयन्दा लगाये है? मैं इस जगह आया हूं यह खवर क्या सूबेदार साहब को मालूम होगयी है? यह खवर किसने उनको दी, इसका परिणाम क्या होगा! एक बार ख्याल हुआ कि मेरा सन्देह झूठा है, काने फकीर को उसकी आशा से अधिक भीख दी है, सुतराम् वह फिर मुझसे भीख पाने की गरज से मेरा वास स्थान देखने को आता था, किन्तु मेरा यह अनुमान कई कारणों से ठीक नहीं बैठा। मैंने जब उसकी तरफ फिर कर देखा था, तब वह मट्टी के ऊपर झुक कर ऐसा देख रहा था मानो उसका कुछ गिर गया है उसे तलाश कर रहा है। मेरा अनुमान हुआ कि वह काना फकीर काना भी नहीं, फकीर भी नहीं, यह वेश बदले हुए गोयन्दा है। आशंका और उद्वेग के कारण उस दिन मैं वासे से फिर बाहर नहीं हुआ। सन्ध्या के समय मकान वाले के बच्चों से बातें करने लगा एवम् रात को भोजन कर छत के ऊपर अपने बिस्तर ले जा सो रहा; नाना चिन्ताओं में मेरा हृदय उथल पुथल कर ने लगा।

क्रमशःरात गहरी होने लगी; उस रात की शोभा और क्या वर्णन करूं? यूरूप के उत्तरांश के लोक ऐसी मनोहर रात्रिकी कल्पना

भी नहीं कर सकते। नगर के प्रत्येक घर में रोशनी खूब होरही है, ऊपर अनन्त आकाश में नक्षत्र हजारों उज्वल हीरेके टुकडे के समान शोभा दे रहे हैं। उस रात में बादलों को छूते हुई मीनारों के अग्रभाग अरब के उपन्यासों में कहे हुए दानवों के से मालूम पड़ते हैं। मैं मन ही मन अपने बचे हुए जीवन के विषय में चिन्ता करने लगा, मन हुआ कि मैं समुद्रकी गहरी लहरों में डूब रहा हूं, किनारा किधर है? किस दिन किनारे पर लगूंगा, वा डूब कर ही मर जाऊंगा? मेरा जीवन साधारण लोगों के समान नहीं है, इस तरह विपत्त में फँसा हुआ जीवन साधारण लोगों का देखने में नहीं आता। इस जीवन में भ्रम बहुत हुआ है, मैं साधु पुरुष नहीं हूं एवम् कहने में शरम नहीं हैं, बहुत बुरे काम किये हैं। सुख की खोज में संसार मरुभूमि में आकुलभाव से घूम रहा हूं, किन्तु कहां सुख और कहां शान्ति है? फिर बच्चपन की याद आगयी, बच्चपन में ही मेरे मा-बाप की मृत्यु हुई थी, मेरे बहिन भाई कोई नहीं है, संसार में अपनी कहने मात्र को एक मौसी है, वह चिर-कुमारी है, जीवन में एक वार उस से भेट हुई है, किन्तु उसी एक वार की भेट से मुझे उस के ऊपर भक्ति-श्रद्धा होगयी थी। उस के पास कुछ धन सम्पत्ति भी थी, किसी किसी ने उसे मुझको दत्तक पुत्रकी तरह लेनेकोकहा था, किन्तु उसने इसकहन की तरफ ध्यान नहीं दिया, किस कारण से वह इस बातपर राजी नहीं हुई सो कह नहीं सकता।

उमर कुछ अधिक होने पर मैंने जहाज की नौकरी ले समुद्र यात्रा की, जहाज की नौकरी कितनी कष्टदायक है रोज बरोज धूप वर्षा सहकर अक्लान्तभाव से कितना परिश्रम करना पडता है; विना भोगे हुए यह सब जाना नहीं जाता, जीवन में पहले मुझे यही कष्ट अत्यन्त बुरा मालूम पडा था। मैं समुद्र में यात्रा करता करता अफ्रीका के केपटाउन में पहुचा एवम् उस जगह एक गोलन्दाज की एक युवती लडकी से मेरा प्रेम होगया किन्तु उस ने मेरे प्रेम की कदर न कर एक थोड़ी उमर के पादरी से विवाह कर लिया। इस दुर्घटना से मन में ऐसा ख्याल हुआ था कि मेरा हृदय विदीर्ण होजावेगा, किन्तु निराश प्रेम से नव-युवक का हृदय विदीर्ण होकर भी थोडे ही दिनों में प्रेमकी व्याधि आरोग्य होजाती है; मेरा भी सो ही हुआ। दो वर्ष पीछे न्यू अर्लियान्स नगर में एक बड़े घरकी युवती लडकी से मेरा

प्रेम होगया। किन्तु उस युवती का बाप मेरे साथ विवाह करने को राजी नहीं था, युवती का भाई मेरे छुरी मारने आया। तब और कोई उपाय न रहने के कारण मैं ने उसे अपने साथ किसी दूसरे देश में भगचलने को सलाह दी, उस ने मेरे प्रेम की कदर न कर और मुझे चाल बतला एक बाजे वाले के साथ भाग कर कुल त्याग किया।

यह सब बात सोच रहा था ऐसे समय में एक पडौसी के घर में सितार बजने लगा, मैं आंख बन्द कर एक ध्यान से सितार सुनने लगा। मेरे मन में ख्याल हुआ, कि कुछ दिन पहले इटली के नन्दन कानन तुल्य भिनिस नगर के खाल में घूमते घूमते एक दिन ऐसा ही सितार सुना था, और देखा था कि एक युवती नाव में बैठी सितार बजाती हुई खाल पार हो रही है, चांदनी रात्रि में मैं उस युवती को अच्छी तरह देखसका, देखकर अनुमान हुआ कि वह सुन्दरी मानो पृथ्वी पर की नहीं है एवम् कोई स्वर्ग वासिनी अप्सरा मानवी मूर्ती धारण कर हाथ में सितार ले नाव में आ विराजी है। उज्वल और सुन्दर फूलों की गन्धयुक्त रात में बीणा बजाती पृथ्वी के जीवों को मोहित करती हुई अपने रास्ते जा रही है। युवती की उमर २१। २२ वर्ष से अधिक नहीं है। उसकी वह अनिन्द्य-सुन्दर मूर्ती बहुत समय तक मेरे हृदय में विराजी रही यहां तक कि इतने दिन पीछे उसे देखूं तो फौरन पहचानलूं। उसी एक दफे के सिवाय फिर कभी उसे नहीं देखा उस युवती का परिचय लेने के लिये मैंनेबहुत प्रयत्न किया, किन्तु मेरा प्रयत्न विफल हुआ, मैं उसका नाम तक न जान सका एवम् दूसरी वार देख भी न सका। क्रमशः अनेक कामोंमें लग जाने के कारण उस काध्यान तक न रहा। संसार-समुद्र की प्रलय तरंगों में पड़ कर जिसे अपने जीवन की रक्षा करना पड़ती है वह प्रेम की बात कब तक याद रख सकता है।

धीरे धीरे रात बढती गयी, किन्तु नींद नहीं आयी; बहुत देर तक आकाश की तरफ देखतारहा नदिनआनेसे फिरमैं उठ बैठामेरे मन में रात को घूमने की इच्छा बडी प्रवल हुई, ग्रीष्म प्रधान किसी बड़े देशकी राजधानी में रातको घूमना बड़ा ही अच्छा है। नगर की गली बडी छोटीऔर तंग हैं, सडक के ऊपर भी ग्यास लेम्पों में रोशनी नहीं है एवम नाना जातीय स्त्री पुरुषों के मुंह पर अपूर्व्व रहस्य दरस रहा है, मन में ऐसा मालूम होता हैं कि मानो प्रत्येक घर में खूब आनन्द मन रहा है। यद्यपि इस राज्य की राजधानी में मेरे समान विदशी

आदमी को घूमना अच्छा नहीं है तो भी मैं अपने मनकी इच्छा को रोक नहीं सका। विपत्त की आशंका के कारण मैं वेश बदल कर बाहर हुआ।

घर से बाहर निकलने पर मैं सडक पर न जा यहूदीयों की बस्ती में गया। उस समय अधिक रात होनेके कारण रास्ते में बहुत आदमी नहीं थे। घूमते घूमते मैं नगरकी हद्द तक पहुंच गया तो फिर मुझे लौटना पड़ा। उस समय ११ बजे थे, अधिकांश नगर वासी भोजन कर निद्रा देवी की कोमल गोद में पड़े थे, राजपथ सुन सान था, उस पत्थर के बने बाजार में मेरे जूते से शब्द होने लगा; उस शब्द से मेरे मन में हुआ कि कोई सन्देह ले मेरा पीछानकरे; इस लिये मैं जिस रास्ते से गया था उसे छोड़ दूसरे रास्ते अपने घर की तरफ रवाने हुआ। कुछ दूर आने पर मेरी इच्छा तमाखु पीने की हुई, मेरी जेब में पाईप और तमाखू थी उसे निकाल दो एक दफे पीया, ऐसे समय में मेरे बांयें तरफ की गली में खट खट शब्द हुआ, मानों कोई लकड़ी को खट खटाता आ रहा है। मैं फौरन समझगया यह उसी काने फकीर की लकड़ी की आवाज है, वह इस समय भी मेरी खोज में लगा हुआ है? मुझे डर मालूम होने लगा।

मैं उस फकीर की निगाह बचाने के लिये पहले की तरह एक अंधेरी गली में छिप गया। उस गली में से रोशनी दार बाजार की तरफ देखने लगा, काना फकीर लकड़ी खट खट करता हुआ आगे बढ़ने लगा, किन्तु इस बार वह अकेला नहीं था, उसकेसाथ और भी दो आदमी थे, यह दोनों आदमी सडक के किनारे मकानों की छाया में धीरे धीरे आरहे थे इस लिये इनके मुँह दिखलायी नहीं पड़े।

मैं जिस गली के भीतर छिपा हुआ था, उस से कुछ ही दूर पर काने के एक आदिमी ने आकर पूछा, "किधर है वे तेरा वह आदमी। कुत्ता क्या बाहर ही बाहर भागजावेगा?"

इस का उत्तर काने फकीर ने धीमी आवाज में क्या कहा सो मैं नहीं सुन पाया, किन्तु अब मुझे घबराहट पैदा हुई, और समझ गया कि यह लोग मुझे ही तलाश कर रहे हैं। इस समय किस तरह इनकी निगाह से बचकर भागूं, यही सोचने लगा। समझ में आया कि इस देश में रहना मेरे लिये अब एक दिन भी ठीक नहीं है;

अतएव फौरन वासे पर आ अपनी चीज वस्तु इकट्ठी कर जितनी जल्दी हो यहां से निकल चलूं यही निश्चय किया। मैं जिस दुःसाहस से एक काम में लगा हुआ इस जगह रह रहा था, इतने दिन पीछे राज पुरुषों ने उसका पता लगा पाया है, यह अच्छी तरह जान गया न मालूम कैसे गुप्त बात प्रकट होगयी अब यहां से भाग चले बिना प्राण रक्षा नहीं है। और कुछ दिन रहसकता तो काम पूरा कर देश को लौट जाता, किन्तु सो नहीं हुआ, नाव किनारे पहुंच कर डूबी समझिये।

यह सब चिन्ता करते करते मेरा मन अत्यन्त व्याकुल होगया, किन्तु सुलतान वा उसके सूबेदार के पंजे में पड़ निष्ठुर रीति से प्राण देने की अपेक्षा मेरा प्रयत्न व्यर्थ जाना सौ गुना अच्छा है। सुलतान की क्रोधाग्नि में पड़ने पर किस तरह की कठोर पीडा सहनी पड़ती है, वह मुझे मालूम थी। कुछ दिन पहले एक आदमी मेरी अपेक्षा बहुत थोड़े अपराध के कारण सुलतान की आज्ञानुसार बुरी तरह तरह मारा गया। तब मैं इसी देश में था, उसकी दुर्दशा यादकर में कांपने लगा, मेरे भी आधे देह को मट्टी में गाढ़कर आधे शरीर पर कुत्ते छुडवा दिये जावेंगे कि नहीं यह कौन बतला सकता है? इङ्गलेण्ड के सबही लोगों को विश्वास है कि एशिया में आवेरिया एक सभ्य देश है, इस राज्य का सुलतान एक बड़ा ही दयावान पुरुष है। किन्तु जो सब बिदेशी आदमी दुर्भाग्य के कारण इस राज्य में आये हैं वेही जानते हैं कि यह खबर कहां तक सच्च है। इस राज्य में जित ने जेलखाने हैं, उनही जेलखानों में नित्य नित्य जो निदारुण अत्या चार होते हैं, बाहर के कितने लोग यह जानते हैं ? किन्तु यदि वे सब लोमहर्षण कहानी ज्यों की त्यों लोगों को मालूल पड़े तब उन सब के हृदय कांप उठेंगे। मैं पहले ही कह चुका हूं यदि राज द्वार में मैं पकड़ लिया गया, तो बृटिस कौन्सल से प्रार्थना कर लाभ उठाना तो दूर रहा उस से विपरीत फल पैदा होगा, बृटिस कौन्सल मेरे अपराध के महत्व को समझ मेरी रक्षा करने में अग्रसर नहीं होवेंगे।

मैं उसी अन्धकार पूर्ण गली के भीतर एक दीवाल की आड में खड़ा खड़ा यह सब बात सोचता रहा। बहुत देर तक गोयन्दा मुझे तलाश करते रहने पर न पाकर उस जगह से चले गये। फिर मैंने

सड़क पाकर दूसरी गली में प्रवेश किया, और दौड़कर अपने वासे पर जा पहुंचा। जिस से फिर गोयन्दाओं के हाथमें नपड़ूं और वे फिर मुझे न तलाश कर सकें इस लिये सावधान होकर चलने लगा। सौभाग्यवश मेरी खोज करने वालोंको मैंने फिरनहीं देखा, वासेमें दाखिल होने के उपरान्त दरवाजे की आड में खड़ा हुआ बहुत देर तक रास्ते की तरफ देखता रहा, किन्तु किसी को भी नहीं देखा। सीढ़ियों के किवाडों को कई बार थप थपाने पर मकान वाले ने आंखे मीड़ते मीडते आ किवाड खोल दिये एवम् इतनी रात गये बाहर जाने की कैफीयत पूछी। मैंने उसे समझा दिया कि रात में घूमने गयाथा। फिर अपने सोने के कमरे में जा उस जगह रुपये पैसे और कपडे आदि जो थे वह सब बांध लिये, गुप्त चिट्ठी पत्री सब आगे में जलादी हमलोगों की बातें बहुत कुछ आदमीके द्वाराही होती थीं, चिट्ठी पत्री पकडजाने की सम्भावना अत्यन्त प्रबल समझ बहुत ही जरूरी जगह के सिवाय हम चिट्ठी नहीं भेजते थे। उसी दोपहर को मकान वाले का भाडा चुकता कर चुका था, सुतराम् उस से बिना कहे, और जूते से आहट होगी इस ख्याल से जूता जोडा हाथ में ले बिना आहट किये उस मकान से बाहर हुआ।

सड़क पर पहुंच विचारने लगा इस समय किधर जाऊं! सूबेदार मुझे पकड़ने के लिये बहुत तंग हुआ है, इस में तनकभी सन्देह नहीं, सुतराम् मैं नगर की ड्योढ़ी होकर नगर त्याग करूं, तो दरवाजे पर का सन्त्री निश्चय ही मुझे गिरफतार करेगा, किन्तु ऊंची ऊंची दिवालों से घिरे हुए नगर से बाहर निकलने का और कोई उपाय नहीं देखा। बहुत सोचने पर स्थिर किया, कि आज रात को ड्योढ़ी होकर बाहर नहीं जाऊंगा। सबेरे जब दरवाजे का सन्त्री अपने काम में लगेगा, तब उसकी आखों में धूल दे भाग जाऊंगा। मैं इतने दिनतक इस नगर में रहा, तथापि मेरे वास स्थानका पता लगाकर मुझे गिरफ्तार क्यों नहीं कर सके? सम्भवतः उन्हें मेरे वास स्थानका पता नहीं लगा। जो हो, मैं अन्धकार पूर्ण अति संकीर्ण गली के भीतर बहुत सावधानी से चलने लगा। चन्द्रदेव तब मध्य आकाश से सुन्दर रोशनी देरहे थे, सब नगर में सन्नाटा छाया हुआथा मानो कोई जगही नहीं रहा है, किन्तु दूर दूर पर दो एक कुत्ते भोंक रहे थे।

तब भी सुबह होने में देरथी, सब रात घूमते घूमते व्यर्थ थक जाने की वजह से कहीं विश्राम करने को एक गली के भीतर जा एक गृहस्थीके मकान पर बैठ गया, बिचार हुआ कि इसी जगह बैठकर बाकी की रात काटूंगा।

बहुत दूर चलने के कारण मैं बहुत थकगया था, उस जगह बैठे बैठे ठंडी हवा के झोंकों में मुझे कब नींद आगयी सो मालूम नहीं दरवाजे के साहरे मैं सोगया। आंखें खुलने पर देखा, सूर्य उदय हो गया है, सड़क पर आदमी चलरहे हैं।

इस तरह नींद आने से मुझे अपने ऊपर बड़ा क्रोध आया; किन्तु तब क्रोध करने से फल क्या था! मैं उठकर फौरन चल दिया। अनुमान हुआ कि यदि एक घण्टे में ड्योढ़ी से बाहर न हुआ तो मैं निश्चय ही पकड़ा जाऊंगा; एक बार पकड़जाने पर मुझे कैसा दंड मिलेगा, केवल सोचने से ही हृदय कांपता है।

बहुत दिनके अनुभव से मैंने यह जान लिया था कि, सुनसान रास्ते जितनी जल्दी मेरे ऊपर गोयन्दाओं की निगाह पड़ेगी उतनी जल्दी भीड़ में नहीं पड़सकती, इस समय मैं बाजार में होकर जाऊं तो सहज मेंही मैं गोयन्दाओं की निगाह बचाकर निकल सकूंगा, सुतराम् मैं सूनीगली को छोड़ बाजार की तरफ चला। बाजार के एक तरफ बड़ी ड्योढ़ी थी, बड़े दरवाजे से असंख्य लोग आते जाते थे। पैरों में बहुत दूर चलने की सामर्थ्य न देख मैं बाजार के उस हिस्से में गया जहां घोड़े बिकते थे, विचार हुआ कि समुद्र किनारे तक पहुंचने के लिये एक घोड़ा खरीद लूंगा। दशवीस घोड़े देखने पर एक घोड़ा पसन्द आया, कुछ अधिक दाम देकर मैं ने उसे ले लिया। जितने दाम दिये थे वैसा घोड़ा नहीं था, तो भी उसे ही अपना रास्ते का साथी बनाया। दो एक घण्टे और ठहरने से इस घोड़े से अच्छा घोड़ा और थोड़े दाम में मिलसकता था किन्तु उस समय एक मिनिट मेरे लिये एक घण्टे के समान थी, मैं और ठहर नहीं सका। रास्ते में भूखा न मरना पड़े इस लिये कुछ खाने का सामान भी खरीद लिया और घोड़े पर सवार हो ड्योढी की तरफ रवाने हुआ। उस समय मेरे मन में जैसा डर मालूम हुआ था वह लिखने में नहीं आसकता, मानो मेरा हृदय उस समय हाथ हाथ

भर ऊंचा उछलता था। डयोढ़ी के पास पहुंचकर देखा कि हाथ में बन्दूक लिये पहरे वाला घूमरहा है। डयोढ़ी पर पहुंच कर मुझे रुकना पड़ा। डयोढ़ी के बाहर एक कोला बेचने वाला कितने ही गधों पर कोला लादे खड़ा है। जब तक गधे भीतर न आ गये तब तक मैं धड़कते हुए दिल से एक तरफ खड़ा रहा, सौभाग्य वशात् मेरा घोड़ा इतना सुन्दर नहीं था जो उस की तरफ कोई निगाह उठाकर देखे सुतराम् किसी ने मेरी तरफ निगाह उठाकर नहीं देखा। रास्ता साफ देखकर मैं फौरन डयोढ़ीके बाहर हुआ।

डयोढ़ी पार हो चुकने पर मैंने अपने को बचा समझा और प्रतिज्ञाकी कि इस नरकमें मैं कभी नहीं आऊंगा, मेरे जीवन की तो आशा नहीं रही थी, किन्तु पिछले जन्म के पुण्य से इस यात्रा में जीवन की रक्षा हुई।

राजधानी से समुद्र के किनारे का बन्दर प्रायः पिच्चासी मील था। यह रास्ता बडा ही खराब था, प्रायःसबही रास्ता रेतीला और ऊजड था, कहीं भी कोई गांव वा वस्ती नहीं थी। दोपहर की धूप में उस रास्ते को तय करना कितना कठिन है यह शीतप्रधान देश के लोग कैसे भी नहीं जान सकेंगे। मैं ने प्राणों के भय से एक दिन में ही इस रास्ते को तय करना बिचार लिया, सब दिन चल कर रातको बीस पच्चीस कोसकी दूरी पर किसी चट्टी में विश्रामकर बाकी का रास्ता रात में ही तय करूंगा। मन में ऐसा ठान लेने पर भी मुझे सन्देह था कि मेरा घोड़ा इस तरह चल सकेगा कि नहीं। मैं घोडा को खूब तेज चलाने लगा अनुमान होता है कि मैंने इतना तेज घोड़ा इससे पहले कभी नहीं चलाया था, सुतराम् थोडे समय में ही उसके सब शरीर में पसीना आगये, मुंह में फैन उठने लगे, सुतराम् मैं इच्छानुसार तेज नहीं चलासका। कई घण्टे चलने पर मैं भी दोपहर की धूप से व्याकुल हो गया; सूर्यकी तेज किरणों से रास्तेकी बालूकी चमक मेरी आखोंमें लगने लगी तथापि मैं प्राण के डर से चलने लगा। सुलतानके कैदखानेमें पडकर निदारुण पीड़ा सहते हुए प्राण त्यागने की अपेक्षा यह रास्ते का कष्ट बहुत ही अच्छा था सुतराम मैंने कष्ट को कष्ट नहीं समझा दोपहर को एक जगह प-

हुंच कर देखा, रास्ते में एक जगह खजूर की कुञ्ज है मैंने घोड़े पर से उतर कर खजूर की छाया में दो घण्टे विश्राम किया, फिर मैं चलने लगा। थोड़ाही और चल चुकने पर मैं विपत्त से बचजाऊंगा मुझे ऐसा ख्याल हुआ, किन्तु सन्ध्या पहले कोई अड्डा मिलेगा सो आशानहीं थी।

जो हो, घोड़ा को यथा साध्य चलाते चलाते कुछ रात वीते पर एक चट्टी में पहुंचा, वहां मुझे सन्तोष हुआ क्योंकि राजधानी से बहुत दूर पर इस निर्जन चट्टी में रातको अपने पकडजाने का सन्देह नहीं था। कुछ विश्राम करलेने पर समुद्र किनारे किसी बन्दर पर पहुंच जाने से फिर कौन मुझे पकड सकता है जीवन में इसतरह की विपत यह पहली ही नहीं है, किन्तु मैंने अपनी बुद्धि के बलसे उन सब विपत्तों से पीछा छुडाया है, ख्याल हुआ कि इसबार भी विपत्त से वचगया।

इस चट्टी में एक घर भाडे पर ले सोने के लिये अपना कम्बल बिछाया, घोडा को एक पेड से बांधदिया, चट्टीका एक नौकर कुछ इनाम के लोभ से घोड़े की सेवा करने लगा, उस के लिये दाना खरीदकर मैंने भोजन का जुगाड़ लगाया। मेरे पास कुछ खाने का सामान था; किन्तु उसे नहीं खाया, क्योंकि चट्टी वालेने मेरे लिये रोटी बनादी थी, उसे खा ईश्वर नाम जपता हुआ मैं अपने कम्बल पर लेट रहा, कुछही देर बाद गहरी नींद आगई। मेरी इच्छा थी कि कुछ विश्राम कर रातमें ही इस चट्टी से चलदूंगा, किन्तु ईश्वरकी मर्जी इस तरह मैं अपनी इच्छा पूर्ण नहीं कर सका।

बहुत लोगों के मुंहसे सुनाजाता है, कि गहरी नींदमें स्वप्न दिखलायी नहीं देता, उस दिन रास्ते की थकान से मुझे गहरी नींद आयी थी, किन्तु उस में भी स्वप्न दिखलायी पड़ा; वह स्वप्न इस तरह था, मैं आवेरिया राज्य की राजधानी में फिरगया और वहां जा राजके कैदखाने में कैद हुआ, सूबेदार की आज्ञासे मेरे ऊपर खूब अत्याचार होता है। इस राज्य में वर्त्तमान सूबेदार अत्यन्त निर्दयी है। इसने कैदियों को कष्ट देनेके लिये अनेक प्रकार की तरकीवें निकाली हैं।

मुझे मालूम पडने लगा कि मेरे दोनों हाथ पीठकी तरफ च-

मडे से जकड कर बांध दिये हैं मेरे सामने अधसिकी रोटी के कई टूक पटक दिये हैं, मैं कुत्ते की तरह झुककर उन्हें खानेको राजी नहीं हूं, इस अपराध के कारण गरम लोहे से बार बार मेरे शिरमें मारते हैं, फिर मेरी जीभ में छेदकर रस्सी द्वारा शिर से बांधदी है। और मेरे साथी कई कैदीयों में से किसी के हाथ किसी का पांव काट डाले हैं और किसी की आंख किसी की नाक किसी का कान काटते हैं इन सबका अपराध यह है कि इन्होंने कैद खाने के सुपरिनटेण्डेण्ट की आज्ञा पालन नहीं की। मेरी यह सब बातें आपको असम्भव माळूम पडती होंगी। किन्तु आवेरिया राज्य के सम्बन्ध में कुछ माळूम हो तो आप मेरी एकभी बात को असम्भव नहीं समझेंगे। स्वप्न के अन्त में देखा कि, यमदूत के समान एक हवसी पहलवान मेरे गलेमें लोहे की संकल बांध मारने के लिये मुझे मशान को खींचें लिये जाता है।

मैं चिल्लाकर जाग पडा। देखा, कि सुबह की धूप से चट्टी का आंगन भरगया है, दोनों हाथों से आखों को मलकर ताज्जुब से चारों तरफ देखने लगा। देखा कि छः सात आदमी हाथ में हथियार लिये मुझे घेरे हुए खडे हैं। वे इस जगह कब आये सो मुझे माळूम नहीं, तबभी यह निश्चय है कि मेरे वहां से भाग आने का समाचार पा वे मुझे गिरफ्तारकर लेजाने आये हैं।

मैं डरसे उठ खडा हुआ ? एक सिपाही से कांपते कांपते पूछा कि "तुम इस जगह क्या चाहते हो ?"

उस सिपाही ने कडी आवाज में कहा, "अरे काफिर अबेकुत्ते तेरी बडी हिम्मत है, तू राजपहरे वालों की आखों में धूल देकर इतनी दूर भाग आया है, किन्तु अब तेरी खैर नहीं है, हम तुझे गिरफ्तार करने आये हैं; तुझे राजधानी लेजाकर तेरा आधा देह धरती में गढ़वाकर और आधे देह का मांस कुत्तों से नुचवाया जावेगा कृश्चन कुत्ते ! हमारे साथ चल।"

उससिपाही की बात सुनकर समझा कि मेरी सब आशा अब जाती रही मेरे पैरों के नीचे की धरती घूमने लगी। आंखोंके सामने अन्धकार छागया मुझे चारों तरफ अँधेरा ही अँधेरा दिखलायी देने लगा, किन्तु उस समय भगने का कोई उपाय नहीं था, सुतराम् मुझे अपने को उनके हाथ सौंपना पडा।

दूसरा परिच्छेद

कैदखाने में।

शत्रु के सिपाहीयों से घिरा हुआ मैं राजधानी की तरफ लौटा। रास्ते में सिपाहीयां ने मेरे प्रति कुछ विशेष तंगी नहीं की; इस से मालूम हुआ कि मुझे बिना तंग किये सभ्यतापूर्वक पकडलाने का शत्रुकी तरफ से हुक्म है। यदि ऐसा हुक्म नहोता तो रास्ते में सिपाही लोग मुझे खुब तंग करते इस में कुछ सन्देह नहीं। जो हो मैंने इस कृपाके लिये उन्हें बहुत धन्यवाद दिया।

रास्ते में चलते चलते मैंने सिपाहियों से पूछा "मैं इस चट्टी में आया हूं यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

सिपाहीयों के सरदार ने कहा कि हम दूरसे तुम्हारा पीछा कर रहे थे. राजधानी में तुम क्याकर रहे थे वह सब सरकार से छिपा नहीं हैं, तुम्हारे ऊपर गोयन्दाओं की खुब निगाह थी। हम चाहते तो रास्ते मेंही तुम्हें पकड लेते, किन्तु तुम बहुत थक गये थे, खासकर हमे मालूम था कि रातको तुम उस चट्टी में विश्राम करोगे, इसी लिये तुम्हारे आराम में हमने खलल नहीं डाला, स्थिर किया था कि विश्राम करलेनेके उपरान्त तुम्हें गिरफ्तार करेंगे, भूखे कुत्ते को खालेने पर मारना धार्म्मिकों का काम है।

मैं सिपाहीयों के साथ चुपचाप चलने लगा। सुबहकी धूप मेरे हृदय का अन्धेरा दूर नहीं करसकी, सुबह की ठंडी ठंडी हवा मेरे शरीर की जलन को दूर नहीं करसकी, मैं हताशहो घोडे पर सवार उनके साथ चलने लगा। सुलतान के जेलखाने के दुःखयाद आने से मेरा हृदय व्याकुल हो गया, उस दुखदाई जेलखाने से मैं कब बाहर हो कब अपनी जन्म भूमिके दर्शन करूंगा, इसकी रत्तीभर भी उम्मेद नहीं हैं, अपने स्वप्नकी बात यादकर कांपनेलगा। कौन कहसकता है कि वह स्वप्न में देखाहुआ दंड सत्य नहीं होगा! किन्तु अब आक्षेप करना व्यर्थ है, नसीब में जो बदाहै उसे दूर करना मनुष्यकी ताकत से बाहर है। भाग्य लक्ष्मी मेरे प्रतिकूल है आक्षेप करने से क्या फल होगा? अपनी इच्छा से

था परवश मैंने जो दुःसाहस का काम किया है उसका फल भोगना ही पड़ेगा; ऐसी आशा करनाही व्यर्थ है कि जो आगसे खेलेगा उस के शरीर में आग न लगे। इस तरह मनको समझाकर कुछ शान्त किया, कोई घबराहटका चिन्ह नहीं दिखलाया।

मेरे घोड़े के अगाड़ी एक सिपाही पीछे एक सिपाही दोनों बगल में दो सिपाही इस तरह घोड़े पर सवार हुए चलने लगे। मैं उस समय भी मुसलमानी भेष में था, सुतराम् मैं विदेशी विधर्म्मी एक अंग्रेज हूं यह कोई नहीं जानसक्ता था। मैं पहले ही कह चुका हूं कि मरा घोड़ा बढ़िया नहीं है उसकी मन्दी चाल है, किन्तु सिपाहीलोग अच्छे घोड़ों पर सवार होकर आये थे, इस लिये मैं उनके साथ समान बेग से नहीं चलसका; मेरी इस बिना इच्छा की त्रुटी के लिये सिपाही बार२ धमकाकर भय दिखलाने लगे, दो एक बार मेरे घोडको भी दंडे से मारा, सौभाग्यवश वे दंडे मेरी पीठमें नहीं लगे। मैंन किसी किसी पुस्तक में पढ़ा है कि, पृथ्वी पर ऐसे बहुत आदमी हैं जो मरने से नहीं डरते, किन्तु यह बात कहां तक सच है कह नहीं सक्ता, रात दिन सैकडों तकलीफ़ देकर तिल२ कर प्राण निकलेंगे, तथापि मृत्यु का कराल बदन देख करन डरे, इतना साहस जिसमें हो उसमें सही। किन्तु मुझमें वह साहस नहीं था; सुतराम् मनमें विचार लिया कि सुलतान के जेल में पहुंचकर फिर एक बार भागने की कोशिश करूंगा। चाहे वह कोशिश व्यर्थ क्यों न जावे, किन्तु बिना प्रयत्न किये परवश पशुकी तरह क्यों मरूं? मैं बडाही कमबख्त हूं, इतनी विपत्ति पर भी मुक्ति चाहता हूं, भाग्य में जो बदा है वह होगा सुलतान की लाख फौज भी बांधकर न रख सकेगी।

पिछले दिन जिस खजूरकी कुंज के नीचे मैंने विश्राम किया था। सिपाहियों से घिरे हुए फिर उसी कुंज के नीचे विश्राम किया। गतकल मेरे मनमें कितनी आशा, कितना आनन्दउसके छब्बीसघण्टे पीछे आज ठीक उसी समय मेरा हृदय निरानन्दमय, जीवन आशाहीन इस दोपहर की तेज़ धूपसे बलती हुई रेत के समान मेरा हृदय है। इतने थोडे समय में मनुष्य के हृदय में परिवर्तन होता है, प्रत्येक क्षण में क्या होगा, कौन कह सक्ताहै? किन्तु तौभी मैं भविष्यत के लिये आकाश में महल तयार करूंगा। इसी तरह क्रमशः सत्य झूठ भ्रम और त्रुटी आदि नाना अंक और गर्भांक के भीतर हो मनुष्य का

जीवनरूपी नाटक अन्तिम यवनिका की तरफ बढताहै; कभी प्रसन्नता का दृश्य और कभी दुःखभर दृश्य मालूम पडताहै ; मेरे जीवन नाटक की अब यह शेष अवस्था है, केवल परदा गिरना बाकी है।

कुछ समय विश्राम करलेनेके उपरान्त फिर हम चलने लगे; रात होनेपर नगर में पहुंचे दीपकों कीरोशनीसे प्रसन्नहो मानों राजधानी हँस रही है; सब दिनकेपरिश्रम के उपरान्त नगरवासी निश्चिन्त चित्त से आमोद प्रमोद कर रहेथे,उनके आमोद प्रमोद को देखकर मुझे ईर्षा हुई। थके हुए शरीर और असन्तुष्ट वा क्रुद्ध हुए मनसे मैं सिपाहियों के साथ चलने लगा स्पानियार्डगणको सहायता कर मैंने जो गुरुतर अपराध कियाथा, अंग्रेज कौन्सल वा सुलतान कोई भी उसे क्षमा न करेंगे यह मैं जानता था; जिस खेलको खेलने के लिये बैठाथा, उसमें सब हारचुका, केवल दंड मिलना बाकी है।

राजधानी में चलते चलते एक आदि परिचित मनुष्य को देखा किन्तु मेरे समान अपराधी से बातें कर अपराधी का साथी बनना उन्हें नहीं था;इस लिये मुझे पहचान लेनेपर भी उनने नहीं पहचाना। उनके डरपोकपने पर मुझे हँसी आई, किन्तु उनके व्यवहारकी निन्दा नहीं करसका, उस समय मेरा मित्र होना स्वीकार करे ऐसा उस राज्य में एकभी आदमी नहीं था क्योंकि ऐसा करने से उन लोगोंकी भी जान आफत में पडती; विशेषतः पूर्वी–महादेश में राजद्रोही सहित सहानभूति रखना महापाप गिना जाता है।

हम धीरे धीरे बाजार तय करने लगे, क्रमशः अंग्रेज कौन्सल का मकान भी पीछे छूटगया, फिर गली छोड कर दूसरी तरफ सिपाही मुझे ले चले। मुझे ख्याल था कि मैं जाते ही जेल में बन्द कर दिया जाऊंगा, किन्तु जेल में बन्द करने के बदले वह मुझे सूबेदार के मकान की तरफ ले गये। यह मकान बहुत ज्यादा जमीन पर बना था, चौक में एक तरफ एक सीखचों का बाड दार घर है यही हाजत घर है!

सूबेदार के मकान के सामने पहुँचतेही सिपाहीयों ने मुझे घोडे से उतरने को कहा, अबे कृष्टानी कुत्ते, इस तरफ आ, यदि सूबदार साहब तुझे जीता हुआ गिरफ्तार करने का हुक्म न देते तो तुझे इस तलवार से मार तेरे मांसको चील कुत्ते आदिको खाने देते, किन्तु तू जो थोडी तकलीफ पा कर मरे, अनुमान होता है, कि ईश्वर

की ऐसी इच्छा नहीं है, तेरे नसीब में बहुत दुख बदा है, तो भी मैं सौगन्ध पूर्वक कहता हूं कि तेरी जिन्दगी पूरी होने आयी है।"

मैंने संक्षेप में कहा, "यदि नरक में जाऊंगा तो उस जगह तुम से भेट होगी, मैं दो दिन पहले पहुँचूंगा और तुम दो दिन पीछे, इस से विशेष कुछ बनता बिगड़ता नहीं है। अब कहां जाना होगा आप चलिये।"

जमादार मुझे लेकर सूबेदार साहब के एक बडे कमरे में चला। उस कमरे में एक स्थूल देह लम्बे आदमी को देखा। इस आदमी को मैं जानता था, आवेरिया राज्य में इसे कौन नहीं जानता है? यही आदमी सूबेदार साहब का प्रधान मोहर्रर है दूसरों का अनिष्ट कारी, हिंसप्रकृति, इतना निर्दय आवेरिया राज्य में दूसरा कोई और है या नहीं इस में सन्देह है। सब इस से जितनी घृणा करते थे उतने डरते थे, केवल सूबेदार साहब इसे सर्व गुण सम्पन्न, अति विचक्षण और बुद्धिमान समझते थे।

ऐसे आदमी से दया की आशा रखना पागलपन है, उस के चेहरे पर उग्रता और पशुत्व दिखलायी पडता था, जिन सब कामों से संकोच मालूम होता था उन सब कामों को इस के द्वारा सूबेदार साहब पूरे कराते थे। इसी कारण वह अपने लिये आनन्द में मग्न कर अस्वाभाविक रूप में फूल गया था।

मुझे देख कर मोहर्रिर साहब अपने आसन पर सम्हलकर बैठ गये, फिर उनने अपनी दोनों चंचल आखों को फाडकर कडी निगाह से मुझे पैर से शिर तक देखा एवम् कई मिनिट चुप रह कर बडी तेज आवाज में मुझ से कहा, "अबे गधेके बच्चे तू बडी बहादुरी कर भागा था, किन्तु भगकर यम के हाथ से नहीं बचसकता, फिर हमारे हाथ में आ पहुंचा है, इस बार तेरी रक्षा नहीं।"

मैंने कहा, "खां साहब आप से जो दया की आशा करे, मैं उसे बेवकूफ समझता हूं, ईश्वर ने मुझे इतना मूर्ख नहीं बनाया है, आपकी मर्जी होजो करें डर दिखलाने की आवश्यकता नहीं है।"

खांसाहब ने चिल्लाकर कहा, "अच्छा, तुझे इतना घमण्ड कि हमारे सामने ऐसे कह सकता है, तेरी जीभ के टुकडे टुकडे कर कुत्तों को खवायी जावेगी। जमादार इस समय इसे गारद में ले जाओ।"

खांसाहब की आज्ञा पाते ही, दो सिपाहीयों ने दोनों तरफ से आकर मेरे दोनों हाथ पकड लिये, फिर सूबेदार के चौक वाली हाजत की तरफ मुझे ले चले, किन्तु हमे हाजत के दरवाजे के पास पहुंच ने से पहले ही खांसाहब ने सिपाहीयों से पुकार कर कहा, " इस जगह की हाजत पर उतने कडे पहरे वालों का बन्दोवस्त नहीं है; यह काफिर बडा शैतान है, रातमें किसी सुयोग से भाग सकता है, इस जगह न रख कर इसे " कसबे की हाजत में ले जाओ।"

खांसाहब की आज्ञानुसार सूबेदार साहब के घर से बाहर निकल हम कसवे को तरफ चले. कह नहीं सकता क्यों कर मेरा हृदय कांपने लगा।

" कसवा " स्थान कैसा था, इसका विस्तृत परिचय दिये विना पाठक गण अच्छी तरह समझ न सकेंगे। आवेरिया राजधानी में यह कसवा अर्थात् सुलतान का जेलखाना नरक तुल्य है, नरक से वढकर भयानक कहने में कुछ बुराई नहीं है। यह जेल खाना लम्बा चौडा है लम्बाई में अनुमान होता है पचास हाथ, उसकी भीत पत्थर की बनी हुई हैं, भीतर भयानक अन्धकार है उस में एक ही दरवाजा है उसके किवाड बडे मोटे काठ के बने हुए हैं, इस ख्याल से कि कोई दरवाजा न तोड डाले इस लिये किवाडों के ऊपर बडे बडे छत्री वाले मेक चढ़े हुए है, तेज धार के औजार से भी उस दरवाजे को तोडना अस्वम्भव मालूम पडता है, इस जेलघर में एक भी पिंजर नहीं है, कहीं२ भीतों में वहुत ऊंचे पर छोटे२ रोशनदान हैं, उन में भी मोटे लोहे के सींखचे गढे हुए हैं। इन रोशनदानों में से हवा वा धूप कुछ भी नहीं आती मालूम होती है, इस लिये वह जेलघर इतना दुर्गन्ध मय है कि उसमें पैर रखतेही उलटी (कै) आती। मैं रात के समय इस जेल में गया इस लिये पहले कुछ नहीं देख सका, इस जेल घर में दूर२ पर लालटैन जलती रहीं हैं, किन्तु उनको रोशनी के लिये जलायागयाहै वा सिगरेट जलाने के लिये सो अनुमान नहीं करसका। कुछ समय के उपरान्त उस धूंएदार रोशनी में वहां के कैदियों को देखा। देखा कि जेल में यहूदी और अरबी अधिक बन्दी हैं; किसी२ बन्दी के हाथ और गले संकल से बंधे हैं ? किसी २ के पैरों में लोहे की बेडी हैं; किसी किसी कैदी को लोहे की संकल का बोझ न वरदास्त करने परभी हालत सबके ही समान है।

ऐसे भयानक स्थान में मेरे कैदखाने के जीवनकी पहिली रात कटी। किसतरह काटी यह फिर बतलाऊंगा?



तीसरा परिच्छेद।

मुझे जेलखाने में बन्दकर सिपाहियोंके चले जानेपर मैंने समय किसतरह काटा इसका कुछ वर्णन करना यहां अप्रासङ्गिक नहोगा। इस भीषण कारागार में प्रवेश करने पर अति दुःख में भी मुझे हंसी आंई, क्योंकर हँसी आई सो समझा नहीं सकता; मनुष्यकी बुद्धि नष्ट होजाती है,उस समय उसेसुख दुख एक समान होते हैं,तब वह बिना कारण हंसता है और रोता है; अनुमान होता है उस समय मेरी भी यही अवस्था होगई थी; इसी लिये जेलखानेमें प्रवेश करतेही हो हो कर हंसपड़ा, किन्तु शीघ्रही मेरे मनका भाव बदल गया, मैं अत्यन्त विषन्नभाव से एक अंधेरे कोने में चुप चाप खड़ा होगया। सब रात मुझे नींद नहीं आई; कभी उठकर और कभी बैठकर बड़े कष्ट से सब रात पूरी की। जेलके पहरेवाले की बातों से मालूम हुआ कि वह यह जानता है कि मैं बनावटी भेष में एक कृष्टान हूं, इसी लिये वह बात२ में मुझे गाली देने लगा;अन्तमें एक कैदी पहरेवाले की बातों से तंग आकर पागलकी तरह मेरे ऊपर टूटपड़ा एवम् मेरे मुंहपर घूसा मारा। मैं क्रोध रोक नहीं सका, धड़ामसे उसे धरतीपर पटक उसकी पीठ में जोर से घूसा मारने लगा; घूंसों की मार से दुखी हो वह कैदी सांड़ की तरह डकराने लगा, गोलमाल सुनकर पहरेवाले चारों तरफ से आगये, किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि पहरेवाले ने विवाद का कारण सुन मेरेही पक्षका समर्थन किया एवम् फौरनही उस आदमी को सांकल से जकडकर बांध दिया; कैदी क्रोध में चिल्लाकर कहने लगा, सुविधापाते ही वह मेरा खून करेगा।

धीरे२ सुबह हुआ, प्रभातके सूर्यकी रोशनी जेलखाने में आने लगी, उसी रोशनी से मैं जेलघरकी अवस्था स्वष्टरूप से देख सका; जिन्दगीभर में ऐसी गन्दी जगह कभी नहीं गया। सात बजे पीछे कैदियों के कुटुम्बी मिलने को आने लगे कितनेही कुछ२ खाने पीनेकी चीज लाये। सब रात मुझे कुछ खाने को नहीं मिलाथा; भूख के कारण मैं बहत व्याकुल हो रहा था, सौभाग्य वश मेरे पास कुछ रुपये

थे, एक पहरेवाले को किंचित् रिशवत दे मैंने कुछ खाने की सामि-ग्री खरीदली।

भोजन कर चुकने पर एक सैनिक पुरुष ने आ मुझसे अपने साथ चलने को कहा, उसकी आज्ञा पालन न करने का उपाय नहीं था, मैंने उससे पूछा "मुझे तुम कहां ले जावोगे ?" सैनिक ने कहा, "जिस जगह तुम्हें ले जाऊं उस जगह चलो, अधिक बोलने से तुम्हारे हक्क में अच्छा नहीं होगा।"

सुतराम् मैं चुपहोगया, चुपचाप उसके पीछे चलनेलगा चलते चलते सोचने लगा कि भागने का कोई उपाय है वा नहीं, किन्तु ऐसा कोई उपाय नहीं सूझ पड़ा; इस समय भगने से पकड़ा जाऊंगा इसमें कुछ सन्देह नहीं, खैर जो हो; हम एक छोटी डयोढ़ी को पार कर एक नारंगी के बाग में चलने लगे, किन्तु इस बाग में से भगने पर भी वचना बड़ा मुश्किल है। सुतराम् मैंने भगने की आशा छोडदी, एवम् घूमते२ सूबेदार साहबके मकान पर पहुंचे। इन सूबेदार साहब से मेरा पहला परिचय था, यहां तक कि एक बार दोनों ने एक साथ बैठकर काफी पी थी, एक समय सूबेदार साहब मुझे मित्र समझते थे. उन्हीं दिनों में मैंने उनका चरित्र जानलिया था; कितनेही बार उनने मेरे द्वारा रिशवत के रुपये लिये थे; किन्तु इस समय वह बात इनकोयाद है, ऐसा तो माळूम नहीं होता, विशेषतः रिशवत लेने वाला जिसके द्वारा रिशवत लेता है, समय पड़ने पर उसी का सर्बनाश करे विना नहीं रहता।

सूबेदार साहब जिस कमरे में बैठकर दरबार करते, मैं उस कमरे में पहुंचा; देखा कि सूबेदार साहब का आसन खाली है। सूबेदार के दर्शन की आशा से प्रायः आधे घंटे तक उस कमरे में खड़ा रहा, किन्तु सूबेदार साहब के दर्शन नहीं हुए; माळूम होता है कि वे उस समय अन्दर महल में विश्राम कर रहे थे। उनकी क्या आज्ञाहोगी यह जानने के लिये मैं बड़ी उत्कण्ठा से समय बिताने लगा। मैं जानताथा कि उनकी आज्ञा मेरे अनुकूल नहीं होगी, तथापि उनके श्रीमुख की वाणी सुनकर मैं निश्चिन्त होऊंगा;फांसी हो चाहै शूली हो, अन्तिम आज्ञा सुनने से निश्चिन्त हो सकूंगा।

क्रमशः डेढ़ घण्टा बीतगया, तब सूबेदार साहब उस कमरे में आये, उनके मुँह की तरफ देखने से ही माळूम होगया, कि उनसे



रत्तीभर दयाकी आशा नहीं है; एकतो उनका मिजाज़ बड़ा रूखा है, तिसपर वे मेरे भागजाने की बात सुनकर हाथ में तलवार लेकरखड़े होगये थे। सुलतान के अति उच्चपद के कर्म्मचारी होनेसे ही उनकी बुद्धि उनके देहके ही समान स्थूल थी, अपने विचार से वह कोई काम नहीं कर पाते, मुसाहिब ही उनके कान थे; उनकी दोनों आखें बहुत छोटी थीं; उन छोटी२आखों को मिटमिटा कर मेरी तरफ जब देखने लगे, तब मेरे मनमें ख्याल हुआ कि मैं एक बनेले सूहर के हाथ पड़ा हूं।

कहना व्यर्थ है पहले मैं कुछ नहीं बोला, तब मेरे मनमें और कुछ वहम नहीं था, नसीब में जो बदा है उसके लिये मैं तयार खड़ा था। उस शत्रुपुरी में मेरे पक्षका समर्थन करे ऐसा एकभी आदमी नहीं था; स्थिर किया कि, मरने से पहले मौत के डरसे मरेके समान नहीं होऊंगा, असंकोच से सुबेदार की सब बातोंका जवाब दूंगा।

सूबेदार साहबने मुझसे पूछा " तुमको क्या कहनाहै "

मैंने कहा, " खुदावन्द औरक्या कहुंगा ? मुझे क्यों इस तरह गिरफ्तार कर व्यर्थ हैरान किया है, सो मैं नहीं समझ सका; यदि मुझे व्रिटिस कौन्सल के पास दरख्वास्त भेजने का हुक्म मिले "

मेरी बात पूरी होनेके पहले ही सूबेदार हो२ कर हंस पड़े,किन्तु उनकी बारह आना हंसी घनी मूछों में ही रहगई; हंसकर उनने कहा, " तुम क्या नहीं जानते, जिस अपराध के तुम आसामीहो, वह बहुत बड़ाहै, कौन्सल साहब तुम्हारा कुछ उपकार नहींकर सकेंगे।"

सूबेदार साहब अब तक अपने देशकी भाषा में बातें कह रहे थे, इतनी देरबाद वे सहसा फरासी भाषा में बोलने लगे। मुझे अनुमान हुआ, कि भीतर कुछ रहस्यहै,किन्तु वह रहस्य क्या है ?

दोनों छोटी आंखों को कुछ मीचकर उनने कहा, " गतवर्ष तुमने हमारे राज्य में विरोध-फैलाने के लिये दस हजार राईफल यूरूपसे मंगवाई थीं, यह बात क्या सच है ? झूठ मत बोलना, यदि बोलोगे तो मेरे हुक्म से अभी तुम्हारी जबान के दो टुकड़े कर दिये जावेंगे।,,

मैंने कहा, " आप जिन बातों के जानने के लिये व्यस्त हैं, वे आप नहीं जान सकेंगे; जानकी डरसे मैं झूठ नहीं बोलूंगा; सचही मैंने इस देश में राईफल मंगवाये थे, किन्तु विद्रोहप्रचार मेरा उद्देश्य नहीं था।,,

सूबेदार ने तेज हो कहा," किन्तु धर्म्म-प्रचार के लिये कोई किसी देशमें राईफल नहीं मंगवाले; विद्रोहप्रचार तुम्हारा उद्देश्य नहीं था तो क्यों तुमने यह दुःसाहस का काम किया था ? "

मैंने कहा, " व्यवसाय के लिये किया था, उनसे मुझे दसहजार का फायदा हुआ था। "

सबेदारने कहा, " वह बात मुझ से छिपी नहीं है, केवल व्यवसायकी ही उद्देश्य होता तो एक प्रकार के लाभ का व्यवसाय होते हुए बन्दूक क्यों मंगवाते ! मैं जानता हूं पैरिस में तुमने सब बन्दूकें खरीदींथीं एवम् डियूमार कम्पनी से इस जगह जहाजमें भिजवाई थीं, तुमने किसी स्पेनदेशीय सौदागर को बेची थीं, उस सौदागर का नाम भी मुझसे छिपा नहीं है, किन्तु अभी उस के नाम प्रकट करने की जरूरत नहीं है "

क्यों जरूरत नहीं है, यह मैं समझ गया, सूबेदार साहब उस सौदागर से बहुत रुपया रिशवत में ले चुके हैं, यह बात मुझ से छिपी नहीं थी एवम् मैं यह जानता हूं सो भी सूबेदार साहब जानतेथे।

सूबेदार साहब बहुत देर तक चुप रहे, फिर मैंने बोलना शुरू किया; उनसे पूछा, " मेरे लिये किस दंडकी व्यवस्था हुई है "

सूबेदार साहब ने कहा, " तुम्हारी तदवीर के ऊपर ही निर्भर है " तिस पीछे धीरे से पूछा, " तुम्हारे विरुद्ध जो अभियोग उपस्थित है उसकी तदवीर के लिये कितना रुपया देसकते हो ? "

कई दिन पहले उस स्पेनदेशी सौदागर से मैंने डेढ़ हजार रुपया पायाथा वहरुपया मेरे पासही थे किन्तु वह सब रुपया रिशवतमें देना कई कारणों से उचित नहीं समझा, सुतराम् मैंने सूबेदार से कहा, " मैं आपको पांचसौ रुपये देसकता हूं, उन्हें ही लेकर यदि आप अनुग्रह पूर्वक मुझे—"

मेरी बात पूरी होने से पहले ही सूबेदार साहब ने क्रोधमें गर्ज कर कहा, " ओरे कुत्ते, ओरे बांदीके लड़के तू क्या हमारा अपमान करना चाहता, मेरे हुक्म से इसी समय तेरा शिर उड़ा दिया जावगा "

सूबेदार ने जो डर दिखलाया, वह उसे काम में ला सकते हैं, यह मुझे मालूम था, सुतराम् मेरे मनमें अत्यन्त डर पैदा हुआ, मैंने उनकी बात का क्या जवाब दिया सो याद नहीं; तो भी यदि रिशवत

देकर जान बचना, सम्पूर्ण विपत्ति से छुटकारा पाना सम्भव होता, तो मैं अपना यथा सर्वस्व उनको दे सकता, किन्तु वह सम्भावना नहीं थी, मेरा विश्वास यह था कि वह रुपया भी लेता है और प्राण भी नहीं बचावेगा। यूरुपीयनों के प्रति उसे जातक्रोध था; उसे विश्वास था, यूरुपीयन ही पृथ्वी पर सब जगह अनर्थ पैदा करते फिरते हैं, उनको ही मार डालना धर्म है। इस प्रकार के लोगों से दया की आशा रखना व्यर्थ है।

बहुत देर चुप रहकर सूबेदार ने फिर पूछा, "तुमने जो इस देश में राई फल मंगवायीं थी वे अब कहां है? यदि बचना चाहते हो तो सच बोलो, झूठ बोलने से ही मरोगे।"

मैंने जिसका काम हाथ में लिया था, उस से इस प्रतिज्ञा में बँधचुका था, कि यदि कभी विपत्तमें पड़ूं यदि प्राणजानेकी सम्भावना भी हो तो भी उसका नाम प्रकट नहीं करूंगा, केवल भद्रता के वश यह प्रतिज्ञा नहीं थी, इस प्रतिज्ञा के लिये खूब रुपया भी पा चुका था; विशेषतः इस प्रतिज्ञा को भंग करने से व्यवसाय नष्ट होता है एक बार नाम प्रकट करदेने से भविष्यत में इस तरह के व्यापार में प्रवृत होने का उपाय नहीं रहता। कारण सब के ही अविश्वासभाजन होना होगा। दूसरी तरफ झूठ बोलने से भी छुटकारा नहीं है, इस हालत में क्या करना चाहिये, यह स्थिर न कर सका। मैं जानता नहीं, अथवा उत्तर देनेको राजी नहीं, यह बात कहना न कहना एकसा है, इतने दिन जिसके रुपये से पेट भराहै, जान के डर से किस तरह उसे विपत्ति में पटकूं? अथच जान का मोह भी तोड़ना सहज नहीं है, सुतराम् मैं चुप चाप खड़ा रहा, सूबेदार की बात का कुछ उत्तर नहीं दिया।

मुझे निरुत्तर देख सूबेदार के चहरे पर क्रोध उभड़ आया, उसकी आखों में चिन गारियां निकलने लगी, क्रोध से वह होट चबाने लगे, मनही मन मैं मरने की घड़ी गिनने लगा।

सूबेदार साहब ने अपने स्थूल जांघ पर जोर से हाथ मार क्रोध में कहा,।

"शीघ्र मेरी बात का उत्तर दो, राईफल कहां हैं, अभी बतलाओ, नहीं तो तुम्हारी रक्षा नहीं है।"

मैंने हताश हो कहा, "सूबेदार साहब, यदि महरबानी कर मुझे कुछ समय दें—"

सूबेदार साहब ने मुझे अपनी बात पूरी करने का अवसर न दे अधीर भाव से कहा, " अरे बदमाश ! तो क्या छलकर मुझे भुलाना चाहता है ? क्यों समय चाहता है ? मेरे प्रश्न के उत्तर देने में समय की कोई आवश्यकता दिखलायी नहीं पड़ती है। मैं सब ही खबर रखता हूं, किस रातको पिसतोलों से लादे हुए जहाज ने लंगर डाला था, किस के साथ तेरा षडयन्त्र चल रहा था, किस कौशल से वे सब बन्दूकें इस शहर में लायी गयीं थीं, यह सब मुझ से छिपा नहीं है; दूसरे षडयन्त्र कारियों का विचार पीछे होगा; सब से पहले मैं तेरे अपराध का विचार करूंगा। अभी बतलाओ वे सब बन्दूकें कहां हैं ? न बतलाओगे तो तुम्हारे शरीर के मांस के टुकड़े टुकडे कर कुत्तों को खिलवाऊंगा। तू ऐसा ख्याल मत कर कि, और २ बातों में मुझे भुलारखे, मैं ऐसा निर्बोध नहीं हूं, मैं अपने प्रश्न का ठीक उत्तर चाहता हूं उत्तर न देने से तेरी मृत्यु निश्चय है। "

मेरे मनमें बिचार हुआ कि मैं तो गया ही हूं, किन्तु मरने से पहले एक बार शेष चेष्टा कर देखूं। मेरे हाथ पैर संकल से बंधे हुए नहीं हैं, शेर की तरह एक छलांग मार सूबेदार साहब को पटक उनकी खबर घूंसों से लूं। किन्तु बहुत सोचने पर यह विचार त्याग दिया। ख्याल किया कि सूबेदार का शरीर छूते ही यह यम मूर्ती पहरे वाले निसन्देह मेरी जान ले लेंगे। होसकता है कि अब भी मैं बचजाऊं। किन्तु इस प्रकार का दुःसाहसका काम करने से यह आशा नहीं रहेगी। सुतराम् मैं ने ऐसा दुःसाहस का काम नहीं किया, काठकी, पुतली के समान निश्चलभाव से खड़ा रहा।

मुझे निरुत्तर देख सूबेदार साहब ने गर्जकर कहा, " अरे काफर, अरे कुत्ते ! मेरी बात का जवाब दे। "

मैंने कांपते हुए कहा, " सूबेदार साहब आपके प्रश्न का उत्तर देने की मुझ में शक्ति नहीं है। जब सब ही बातें आप को मालूम हैं तब फिर वे सब बातें मुझ से पूछ ने की क्या ज़रूरत है ! "

सूबेदार साहब को सब बातें मालूम हो गयी हैं. इस बिषय में मुझे भी सन्देह नहीं था। मेरे जवाब पर उनकी क्रोधानल दुगनी भड़क उठी, उनने हुंकार देकर कहा, " बिसमिल्ला ! इस समय तू मेरी बात का जवाब न देगा तो मेरी आज्ञा से अभी सिपाही लोग तेरी जीभ बाहर निकाल लेवेंगे। "

मैंने क्रुद्ध हो कहा, "तब वही कीजियेगा, आपकी बात का जवाब नहीं दूंगा।"

सूबेदार ने कहा, "तबतो तुम्हारी मृत्यु निश्चयहै; कल सुबह तुम्हारी गर्दन काटली जावेगी, फिर तुम्हारे देहको ऊंटकी पीठ पर रख राजधानी के सब बाजारों में दिखलाते हुए घुमाई जावेगी, नगाड़े की आवाज से घोषणा की जावेगी कि राजद्रोही को यह दंड है; यह दंड देखकर विद्रोही अगाड़ीके लिये सावधान होवेंगे, सुलतान के विरुद्ध वे फिर षड्यन्त्र न करेंगे।"

सूबेदार साहब उठकर उस कमरे से चले गये; एक नया सैनिक मुझे वहां से लेकर चला। मैंने उस से पूछा, "अब मुझे कहां जाना होगा?"

सैनिक ने कहा, "तुमको काजी के पास ले जाऊंगा, मुझे ऐसा हुक्म मिला है।"



चौथा परिच्छेद।

सुलतान नहीं यम?

सिपाहियों से घिरा हुआ मैं काजीसाहब के दरबार में पहुंचा। काजी का आकार-प्रकार सूबेदार साहब से बिलकुल भिन्न है; गोरा रंग, पतला देह; उनकी उमर अनुमान प्रायः साठ बर्ष की है, लम्बी और सफेद डाढ़ी नाभि तक है; आंखें दोनों बहुतही उज्वलहैं; और उन की निगाह समान है; वे बुद्धिमान और सच बोलने वाले हैं; उन की सूरत शकल देख और दो एक बातें सुन वे नितान्त कठिन हृदय नहीं मालूम हुए। किन्तु सूबेदार खुद जिस के प्रति नाराज हैं, वह काजी साहब से उपकार की क्या आशा करे?

काजीसाहब ने मुझे देखकर कहा, "देखनेमें बुद्धिमान मालूम पड़ते हो। तुमको ऐसी बुरी सलाह किसने दी? इस अरब राज्य में आ स्वयम् सुलतान केविरुद्ध षड़यन्त्र करतेहो, स्पेनिश सौदागर को हज़ारों बन्दूकें बेचते हो, यह बड़े अन्याय कीबातहै, तुम्हारे विरुद्ध जो गुरुतर अभियोग लगाहै, उसके लिये प्राण दंडही एक मात्र दंड है, किन्तु मैं तुम्हारे अपराध का विचार न करूंगा। सुलतान साहब के निकट तुम को भेज दूंगा।"

काजी साहब की बात का मर्म समझ में नहीं आया; अरब राज्य में सुलतान खुद किसी अपराध का विचार नहीं करते, अति गुरुतर अपराध का विचार सूबेदार साहब करते हैं और वे न करें तो काजी साहब अपराध का विचार कर अपराधी के प्रति दंड की व्यवस्था करते हैं। सुलतान की बिना आज्ञा काजी साहब मुझे उसके पास भेजते हैं, यह सम्भव नहीं है; किन्तु मेरे समान तुच्छ आदमी को किस कारण से सुलतान के सामने भेजते हैं? खैर चाहे जिस कारण से क्यों न हो, सुलतान के पास पहुंचने से मेरी रक्षा नहीं है; मेरा अपराध साबित न होने परभी मुझे अतिभीषण दंड मिलेगा। मेरे मन में अत्यन्त चिन्ता होने लगी।

कुछ देर चुप रह मैंने काजी साहब से पूछा, "आप मेरे अपराध का विचार न कर सुलतान साहब के पास क्यों भेजते हैं।"

काजी साहब ने डाढ़ी हलाकर कहा, "तुम्हारी बड़ी हिम्मत देखता हूं, तुम मुझसे कैफियत चाहते हो, सुलतान के पास तुमको क्यों भेजता हूं, यह तुम उनके पास पहुंचतेही जान जावोगे। तुम्हारे भाग्य से सूबेदार साहब ने तुम्हारे अपराध के विचारका भार नहीं लिया। यदि वे तुम्हारे अपराध का विचार करते, तो पहले तुम्हार सब शरीर में हथियार द्वारा घाव कराते और उन घावों में नमक और लाल मिरच लगवाते, फिर तुम्हारे दो छेद कर कांटे द्वारा तुम्हारी दोनों आंखें निकाली जातीं, ध्यान रहने से फिर तुम्हारे दोनों कानों में सीसा गलवाकर ढलवाते; उनने यह कुछ भी नहीं किया।"

अरब राज्य की बिधि अनुसार दंड की यह सब बातें सुन मेरा हृदय कांप उठा, मुझे ख्याल हुआ कि जब यह सुलतान के पास भेज रहेहैं तब भीतर रहस्य ज़रूर है।

काजी साहब मुझे सिपाहियों के हाथ सौंप चले गये, सिपाही क्रोधभरी आंखों से बार२ मेरी तरफ घुरीने लगे; ऐसा मालूम पड़ता था मानों वे मेरी हत्या न करवाने के कारण अत्यन्त दुखी हुए थे। अचल मूर्ती के समान बहुत समय तक एक जगह खड़े रहने से मेरे दोनों पैर सन्न होगये। सुतराम् मैं एक दो कदम हट कर खड़ा होगया; मुझे हटकर खड़ा होतेहुए देखकर एक सिपाहीने अपनी बन्दूक का कुंदा मेरी पीठ में बड़े जोर से मारा मैंने उसे सहन तो करलि,

था, किन्तु अरबी भाषा में उस सिपाही से कहा, " एक दिन मैं इस का एवज दूंगा, तुमको ऐसा ठीक करूंगा कि तुम सदा याद करोगे । "

सिपाही ने मेरी बात पर हँसकर कहा, " तुम्हारी ज़िन्दगी खतम होने को आचुकी है, किन्तु तुम बड़े अहंकारीहो जो तुम्हें अभी विश्वास नहीं हुआ । जिस से तुम हमारे ऊपर आक्रमण न कर सको, फौरन ही उसका उपाय करते हैं । "

सिपाहीयों के सरदार के इशारे से एक सिपाही कोठरी में से एक लोहे की सांकल ले, आया एवम् उस संकल से मेरे दोनों हाथ जकड़ कर बांध संकल के दोनों सिरे इस तरह कड़कर मेरे गले में बांध दिये जिस से मैं हाथ हिलातक न सकू ।

कुछ देर बाद काजी साहब फिर उसी कमरे में आये, मुझे सांकर से बंधा देख वह कुछ बिस्मित हुए एवम् सिपाहीयों के सरदार से इस ढंग के व्यवहार का कारण पूछा ।

सदार ने सविनय कहा, " काजी साहब, यह आसामी बड़ा बदमाश है, हमारे हाथों से निकल भागने की कोशिश करता था इस लिये हमने इसे बांध दिया है । "

काजी साहब ने इस बात पर अपनी राय कुछ प्रकट नहीं की और मुझ से अपने साथ आने को कहा । पहरेदारों से घिरा हुआ मैं चलने लगा ।

अनेक रास्तों में घूमता; अनेक सुरङ्ग, दालान तय करता हुआ मैं सुलतान के महल की तरफ रवाने हुआ रास्ते में सुलतान के दफ्तर के अनेक उच्च कर्मचारीयों से साक्षात् हुआ, उन सब से ही मेरा पहिले का परिचय था । यहां तक कि अनेक मुझे अपना मित्र समझते थे, किन्तु दुःख के समय कोई किसी की तरफ फिर कर देखता भी नहीं ।

मेरे अच्छे समय के मित्रों ने मुझे पहचान कर भी नहीं पहचाना, मुँह फेर कर अपने अपने रास्ते जाने लगे । मैंने मनहीं मन में हँसकर कहा, " इन लोगों का प्रेम, मुल्ला जैसे मुरगी को प्यार करता है, वैसा है । "

सुलतान के महल में पहुंच कर मैं बडे लम्बे बारामदे में खड़ा हुआ; सुलतान के महल के पहरे वाले ने हमें आगे बढ़ने से रोका

एक दरवाजे के किवाड़ खोल भीतर गया एवम् पांच मिनट पीछे लौट आकर उस काजी साहब के कान में कुछ कहा। काजी साहब ने फौरन मेरी सांकल खोलने को सिपाहीयों को हुक्म दिया। उनकी आज्ञानुसार फौरन मेरे हाथ गर्दन खोल दिये गये। तब काजी साहब पहरेवालोंसे उसी जगह ठहरने को कह मुझे साथ ले ऊपर कहे हुए कमरे में गये, उस कमरे में से एक और छोटे कमरे में हम पहुंचे; कमरा छोटा होने पर भी खूब सजा हुआ था, कमरे में पैरिसदेशके बहुत बढ़िया और कीमती गलीचे बिछे हुए थे; उसकी प्रत्येक भींत पर नाना प्रकार के अस्त्र लटक रहे थे। कमरे में एक तरफ मणि और मुक्ता जड़े हुए और बहु चित्रित एक सोने की कुर्सी पर अरब के महा-प्रताप शाली सुलतान बैठे हुए हैं। मैंने इस से पहले उनको कितनी ही बार देखा है, सुतराम् देखते ही पहचान गया एवम् बादशाही प्रथा से ज़मीन की तरफ खूब झुककर उनको सलाम किया।

सुलतान उमर में अधिक होने पर भी, जवान ही मालूम पड़ते हैं, यह बात उनके दुश्मन भी स्वीकार करते हैं, उनके देह में असाधारण शक्ति है, शरीर इतना कडा है मानो उनका शरीर पत्थर कूट कूट कर बनाया गया है। बहुत बडे मुसलमान के घर में उनका जन्म हुआहै, वे परम्परासे सुलतानहीहैं उनको देखनेसे ही मालूमहोताहै कि वे एक असाधारण पुरुषहैं। वे तेजस्वी, बलवान निष्टुर, शिकारप्रिय और अत्यन्तचतुरहैं, अरब राज्यकी कलह प्रिय,कठोर प्रजाको शासनाधीन रखनेकेलिये, वे सब दोष और गुण होने ज़रूरी है, उनके कठोरशासन से विद्रोही प्रजा कभी माथा ऊंचा नहीं कर सकती। राज्य में अशान्ति भी नहीं फैलासकती। आवश्यकता पडने पर वे स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध सबकी बिना संकोच के हत्याकर कर डालतेहैं, मुझ से उनका परिचय नहीं था। अस्त्र धारण करना सीखने के दिन से इस प्रौढ़-वयस तक वे कितने ही युद्धों में शामिल रहे थे, सुतराम् समर विद्या का उनको खूब ज्ञान था; सेना पति के सब कामों में वे सुदक्ष थे; वजीर से लेकर अरब देश के एक छोटे से प्रजा तक जितना उनका डर मानती थी, उतनी ही घृणा करती थी। मैं सलाम कर कुछ दूर हट कर खड़ा हुआ उनके चेहरे की तरफ देखने लगा। उनने एक बार मुझे पैर से शिर तक ऐसी रीति से देखा मानो वह मेरे हृदय का भाव जानने की चेष्टा करते हैं, फिर उनने दाड़ी पर हाथ फेरते

हुए मेरे साथी से पूछा, " काजी साहब, इस मनुष्य के विरुद्ध क्या अभियोग है ? " इस ढंग से बात कही थी मानों वे मेरे सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानते हैं, एवम् मैं एक तुच्छ कीट पतंग की अपेक्षा कुछ भी श्रेष्ठ जीव नहीं हूं।

काजी साहब ने फिर झुककर सलाम किया, और आदर पूर्वक कहा, " जहांपनाह ! मैं जिस कृष्टान कुत्ते की बात शाहनशाह के दरबार में अर्ज कर चुका हूं, यह वही आदमी है, पैरिस से बन्दूक खरीद कर इस हतभागे ने हमारे देश में भेजीथीं एवम् एक स्पेनदेशीय सौदागर को बेच दीं थीं; हमारे देश परवत पर रहने वाले विद्रोहियों के लिये ही यह बन्दूक मंगवाईहैं; सुतराम् मैं इस को भी विद्रोहियों में गिन सकता हूं। हमारे देश में रहकर जो हमारे विरुद्ध विद्रोह प्रचार करे, उसे कठोर दंड मिलना चाहिये। यह काफर भयानक धूर्त है, इस ने सरकारी गोयन्दाओं की आंखों में धूल दे भागकर देश आने की कोशिश की थी, भगने से पहले ही पकड़कर यहांलाया गया है; हुजूर मालिकहैं, इस को कठिन दंड मिलने से ही अगाड़ी के लिये राजद्रोही सावधान होजावेंगे। "

सुलतान काजी साहब की तरफ लाल आंखें निकाल क्रोध से गर्ज करकहने लगे, " चुप रहो, अहमक, उल्लू, गधेका बच्चा, स्त्रियों के समान बकना किसने कहा ? मैं क्या तेरा उपदेश चाहताहूं ? "

काजी साहब फिर झुककर दोनों हाथों से बारम्बार सलाम करने लगे, डरसे उनका मुँह सूख गया; उनका भाव देखकर इस भयानक विपत्ति में भी मुझे हँसी आई। काजी साहब उस समय भाग जाने से बच सकतेथे, किन्तु वह सिंह के घर में पहुंच चुके हैं; सुलतान की आज्ञा बिन वे जा नहीं सक्ते; सुतराम् वे हतबुद्धि के समान खड़े रहे।

सुलतानने काजीसाहबकी तरफ और न देख, वज्र-गम्भीर-स्वर से मुझे सम्बोधनकर कहा, " अरे काफिर तेरे विरुद्ध मैं यह क्या सुनता हूं ? यदि यह सब बातें सच्ची हों, तो तेरे प्रति ऐसे कठोर दंड की व्यवस्था करूंगा कि, कभी किसी कृष्टान ने ऐसा दंड नहीं भोगा होगा। किसने तुझे इस कामपर रक्खाहै, बन्दूकें किसको दीहैं? "

सूबेदार साहब ने भी मुझ से ठीक यही प्रश्न किया था; जिस कारण से मैंने उनको उत्तर नहीं दियाथा, ठीक उसी कारण से सुल-

तान को भी उत्तर नहीं देसकता । किन्तु ख्याल हुआ कि सुलतान छोड़ देने वाला आदमी नहीं है; उत्तर न मिलने से वे निश्चय प्राण दंड की व्यवस्था करेंगे; क्या कहूं क्या करूं, कुछ भी स्थिर नहीं कर सका, मेरे सब शरीरमें पसीने आगये; मैं चुपचाप खड़ा रहा ।

सुलतान ने फिर तेज होकर कहा, अरे बदबख्त तू क्या बहरा होगयाहै ? बेअदब ! सुलतान की बात का उत्तर देना क्या तू जरूरी नहीं समझता ? "

मैंने कहा, " जहांपनाह, मैं इस प्रश्न का उत्तरदे नहीं सकता । मैं समझता हूं कि मेरे किसी शत्रुने सुलतान से मेरे विरुद्ध झूठी बात कहदी है, मालूम होता है कि मेरा सर्वनाश करना ही उसका उद्देश्य है । किन्तु इस अरब राज्य में सुविचार है, मेरा विश्वास है, कि मैं बिना विचार के मारा नहीं जाऊंगा । जहांपनाह का सत्यानुराग और अक्षपातिता की बात पृथ्वी के चारों खंड के लोग जानते हैं । "

एक तो झूठे भेष में था दूसरे झूठी बात कही, किन्तु काम निकालनेके लिये ऐसे असभ्य देश में इस तरह की झूठी खुशामद करना जरूरी है । मैं जानता था कि, सुलतान के सामने मेरे विरुद्ध अभियोग कोई साबित नहीं कर सकेगा; जिन स्पेनिय सौदागरको बन्दूकें बेचीं थीं वह सुलतान के सामने मेरे विरुद्ध गवांही कदापि न देगा एवम् सूबेदार साहब जिस से खूब रिशवत ले चुके हैं, उस से वे सौदागर के अपराध की बात सुलतान के सामने कह कर आगेके लिये अपने रिशवत-पानेका रास्ता बन्द न करेंगे, यह भी सम्भव नहीं है; यह सबसोचकर ही मैंने सुलतान के सामने दोष अस्वीकार किया ।

सुलतान मेरी बात सुन बहुत देर तक चुप रहे एवम् धीरे२ अपनी डाढ़ी में अंगुली चलाने लगे । उनने कड़ी निगाह से मुझे शिर से पैर तक देख कर कहा, " तुम क्या कहना चाहते हो, मेरे राज्य में बन्दूक मँगवाई नहीं ? यदि तुम बचना चाहते हो, हाथ पैरों के नीचे दबाकर मरना न चाहते हो, तो अभी कहताहूं, सब बातें मुझ से साफ२ कहो । "

सुलतान ने यह बात कही तो सही, किन्तु उसके सामने सच बात कहने में मेरी गर्दन पर शिर नहीं रहता, इसमें मुझे तनक भी सन्देह नहीं था; सुतराम् मैं कुछ भी नहीं बोला, चुप खड़ा रहा ।

सुलतानने कहा, "बांदकि मेरी बातका जबाब दे ?"

मैंने धीरे से कहा, "मुझे जो कहना था कहचुका और कुछ कहना नहीं है।"

मेरी बात सुन सुलतान ने काजी को अपने पास बुला धीरेसे उस से कुछ कहा। सुलतानकी बात सुनकर काजी उसी समय उस कमरे से बाहर चले गये। प्रायःदश मिनट तक मैं सुलतान के सामने अकेला खड़ा रहा, किन्तु उस समय सुलतान ने एक भी बात मुझ से नहीं पूछी। फिर मेरे पीछे का दरवाजा खुला मालूम पड़ा कि कोई उस में गया, पीछे फिर कर देखना वे अदबी में दाखिल था इस लिये मैं ने फिर कर नहीं देखा; किन्तु मैं समझ गया कि कोई किसी को खींचकर ला रहाहै। दो एक मिनिट पीछे मैंने जो देखातो उस से मेरे विस्मय और भय की सीमा न रही। देखा कि एक मनुष्य को सांकल से हाथ पैर बांध हुए दो सिपाही खींचे लिये आते हैं। वह आदमी और कोई नहीं था, मैं ने जिस स्पेनीथ सौदागर को बन्दूकें बेची थी यह वही है। सौदागर की हालत देख कर मुझे अपने दुर्भाग्य की बात याद आयी, सहानुभूति से मेरा हृदय पूर्ण हुआ। मैंने देखा उस की अवस्था अति शोचनीय है, डर से वह थर थर कांप रहा है। उस का चेहरा पीला पड़ गया है, सख्त मार से उसका शरीर कहीं कहीं से फूल गया है

सुलतान का इशारा पाते ही सिपाहीयों ने सौदागर की जंजीर खोल दी, तब सुलतान ने सौदागर से खड़े होने को कहा। डर के मारे सौदागर को ज्ञान नहीं रहा, वह सुलतान को यथा रीति सलाम भी न कर सका, उसे कांपते कांपते गिरता हुआ देख दो सिपाहीयों ने साध लिया। प्राण भय मुझे नहीं था ऐसा नहीं, किन्तु मुझे ख्याल था कि मौतके डर से ऐसी का पुरुषता दिखलाना व्यर्थ है। सुलतान ने घृणित और तेज स्वर से सौदागरको सम्बोधन कर कहा, "अरे गधे इसवक्त तू क्यों कांपता है? इससे पीछे कांपनेके लिये यथेष्ट समय मिलेगा, इस समय मैं जो पूछूं उसका ठीक ठीक उत्तर दे, कोई बात छिपावेगा तो मेरे सिपाही तलवार से तेरे शरीर के टुकड़े टुकड़े कर डालेंगे।" — तिस पीछे सुलतान ने मेरी तरफ उंगली कर सौदागर से कहा, "इस मनुष्य को पहचानता है?"

सौदागर अभीतक मुझे देख नहीं सका, सुलतान के कहते ही मेरी तरफ देख डर से वह और भी कांपने लगा, सिपाही लोग उसे

न पकड़ रखते तो मालूम होता कि वह मूर्छित हो वहीं गिर पड़ता। सौदागर ने एक बार मेरी तरफ देख शिर नीचा कर लिया, और कुछ नहीं बोला।

सुलतान ने फिर चिल्ला कर पूछा, "मेरी बात का जल्दी जवाब दे, इस कुत्ते के बच्चे को जानता है?"

सौदागर ने एक बार कातर दृष्टि से सुलतान की तरफ देखा, उसके होट कांपने लगे, किन्तु कुछ बोल नहीं सका।

सुलतानने फिर पूछा, "हरामजादे जल्दी जवाब दे।"

किन्तु जवाब नहीं मिला।

सुलतान ने एक सिपाही को हुक्म दिया, "इसे लाठी से मारो।"

सिपाही ने सौदागरकी पीठपर जोरसे लाठी मारी, उस लाठी के लगते ही सौदागर ज़मीन पर गिरगया, सुलतान ने सिपाही को उसे घसीटकर उठाने को हुक्म दिया। यह दशा देखकर मुझे ख्याल हुआ कि, सौदागर निश्चयही अब कोई बात छिपाकर नहीं रखेगा। प्राणरक्षा के लिये वह मेरे विरुद्ध ज़रूर गवाही देगा।

फिर वही हुआ, सुलतान के तीसरी वार पूछने पर सौदागर ने कहा, "हां जहांपनाह मैं इसे पहचानता हूं।"

सुलतान ने पूछा, "इस अभागे ने पैरिस से बन्दूक मँगवा कर तुमको वेचीं थी, तुमने उनको कितनी ही विद्रोही प्रजाको अधिक दामों में बेच रातों रात में धनवान होने की चेष्टाकी थी; विद्रोहीयों की सहायता करते थे, क्यों यह बात सच है कि नहीं?"

बोड़ासायके सामने खरगोश की जो अवस्थाहोती है; सुलतानके सामने वही अवस्था सौदागर की हुई। सौदागर कितनी ही देरतक विह्वलभाव से सुलतान के सामने देखता रहा। उसको बे जवाब देख सुलतान ने फिर पूछा, "मेरी बातका शीघ्र उत्तर दो"

सौदागर ने कहा, "खुदावन्द, मैं ने किसी विद्रोही को बन्दूक नहीं वेचीं; विद्रोहीयों से मेरी सहानुभूतिभी नहीं है।"

सुलतान ने पूछा, "तुमने छिपाकर बन्दूक वेची हैं यह बात अस्वीकार नहीं कर सकते। खैर यह बात पीछे देखी जावेगी; अब यह बतलाओ कि इस काफिर से तुम्हारा क्या सम्वन्ध है, सच बोलना, कुछ छिपाकर मतरखना, यदि झूठ बोलोगे. यदि कोई बात

छिपाकर रखोगे, तो इसी समय तुम्हारे प्राण ले लिये जावेंगे।"

अब समझा कि इस वार मेरा छुटकारा नहीं है, ऐसा कापुरुष क्या मेरे अपराधको छिपाकर मरना पसन्द करेगा? प्राण रक्षाके लिये यह अभी सब बातें प्रकट करदेगा। मेरी छाती धड़कने लगी सौदागर के मुँहसे क्या बात बाहर होंगी यह सुनने के लिये ध्यान पूर्वक प्रतीक्षा करने लगा। सौदागर साहब चुप चाप खडे रहे, सुलतान को एकभी बातका जवाब नहीं दिया। ख्याल हुआ कि परमेश्वर ने मेरे ऊपर कृपाकी है।

सुलतान ने सौदागर को चुप देख चिल्लाकर सिपाही से कहा बेअदब काफिर ने मेरी बातका जवाब न देना स्थिर किया है, इसे बाहर लेजाओ जब तक यह कोई बात न बतलाना चाहे तब तक इसकी एक एक अंगुली काट काट कर फेंको; तिस परभी यदि यह निरुत्तर रहे; तो इस के दोनों हाथ काट कर हमारे सदर ड्योढी पर लटकादो लोग देखेंगे कि सुलतान के प्रति जो हाथ उठाता है उसकी ऐसी दुर्दशा होती है।"

दो सिपाहीयों ने सौदागर को पकड खींचना शिरू किया, सौदागर सहन न कर सका, मुंह उठा सुलतान को सम्बोधन कर कहा, "जहांपनाह मेरा कसूरमाफ कीजिये, मुझे जानसे न मारीये, मैं जो जो जानता हूं, शपथ पूर्वक कहता हूं कि वह साफ साफ बतला दूंगा, कोई बात छिपाकर नहीं रखुंगा।"

सुलतान ने धीरता पूर्वक कहा, "बहुत अच्छा, सिपाही इसे छोड दो।"

सौदागर ने मेरी तरफ अंगुली दिखलाकर कहा, इस अंग्रेज भले मानस ने मुझे बन्दूक बेची हैं; इस देश में बन्दूक बेच कर जो बहुत लाभ होसकता है, यह मैं पहले नहीं जानता था, इस ने ही मेरे कान में पहले मन्त्र दिया था, किस जगह किस रीति से वेची जावेंगी, यह सबभी इसने ही बतला दिया था।"

सुलतान ने सिपाहीयों से कहा, "पहरे वाले तुम इस काफर को जेलखाने में ले जाओ, मुझे जो सब बातें पूछनी हैं, वे सब पीछे पूछूंगा।"

सुलतान की आज्ञानुसार वे पहरे वाले सौदागर को ले उस कमरे से चले गये।

सौदागर जब निगाह के सामने से चला गया तब सुलतान मेरी तरफ देख हँसे। सिंह के मुँह की हंसी कभी देखी नहीं थी, यदि देखी होतीतो इस के साथ तुलना कर सकता। उस हंसी में कितनी क्रूरता, कितनी निष्ठुरता, कितनी पैशाचिकता और कितनी आत्मग्लानिता मिली हुई थी, यह सहज में ही समझ में आगया । मेरे एक दम रोमाञ्च होगये, उसकी यह हँसी बिजली का रूप धारण कर फौरन ही मेरे शिर पर गिरेगी, यह जानने में मुझे देर नहीं लगी ।

क्षण मात्र में वह हंसी होटों में छिप गयी, सुलतान ने मेरी तरफ देख कहा, " तुम क्या कहना चाहते हो, इस सौदागर ने जान जाने के डर से मुझ से झूठी बात कही है ? उसने कहा है कि तुमने उसे राईफल बेचे हैं, उसने यह भी कहा है कि तुमने ही उसे विद्रोहीयों को राईफल बेचने की सलाह दी है । तुमही सोचो उसने झूठी बात नहीं कही, तुमने ही जान जाने के डरसे सच्ची बात छिपालीहै। सूलीदेना ही तुम्हारे अपराध का उपयुक्त दंड है, तुम्हारे प्रति इस दंड का विधान करने में मुझे कुछ भी संकोच नहीं है, हो सकता है कि मैं अगाडी इसी दंड की आज्ञादूं किन्तु फौरन तुम्हें सूली देनेसे कुछ लाभ नहीं दिखलायी पडता है;इसी लिये तुम्हारे लिये सूली का हुक्म नहीं दिया।

सुलतान का धरतीपर पैर फटकारतेही रणवेश सुसज्जित अस्त्रधारी बारह सैनिक पुरुष कतार बांधे हुए उस कमरे में दाखिल हुए। सुलतान ने अपने आसन से खड़े हो अँगुली का इशारा किया, इशारा पाते ही सैनिक मुझेउस कमरे में से बाहर लेगये एवम् वे मुझे सुलतानकेमहलों के एक गारदमें ले पहुंचे । मुझे गारदमें रख लोहे का दरवाजा बन्द कर अपने स्थान को गये।

गारद में पहुंचते ही मैं ने देखा उस जगह दो आदमी और कैद हैं। इन दो आदमियों में एक यहूदी है, उसके दोनों कानोंमें छेद किये हुए हैं एवम् नाक में छेद कर उस में एक लोहेकी संकल डाल हाथों से बांध रखी है। सुना कि उसका अपराध यह है कि, इस यहूदी ने एक आदमी की कई हजार रुपये की ज़मानतली थी, किन्तु यह यहूदी वह रुपया अब नहीं देता । जितने दिन यह वह रुपया न दे सकेगा, उतने दिन इसी तरह जेल में सडना पडेगा; अर्थात् छुटने की सम्भावना नहीं है । यहूदी के उस निन्दित जीवन की मूर्ती मैं कभी नहीं भलूंगा ।

मैं ने डर से निगाह हटाकर दूसरे कैदी की तरफकी, वह जातिका ग्रीक है। सुना कि यह दो वर्ष से इसी हाजत में बन्द है, किन्तु इसका अपराध क्या है, अभी तक माळूम नहीं हुआ, बहुत दिन से हाजत में बन्द रहने के कारण उसका माथा खराब होगया है, इस समय वह पूरा पागल है, पागल ग्रीक ऐसा समझता है कि मैं कप्तान होकर जहाज चला रहा हूं; जहाज चलाते समय कप्तान मल्लाहों को जो सब बातें बतलाता है, वेही सब बातें पागल ग्रीक कहता है। मेरे मन में ख्याल हुआ कि नाक कान छिदवाने की अपेक्षा इस तरह पागल होकर जीवन व्यतीत करना बहुत अच्छा है।

प्रायः एक घंटे पीछे एक चटाई मेरे सामने लायी गयी, साथ ही हुक्म मिला कि इस चटाईपर सो विश्राम करना होगा। चारों तरफ निगाह फेंक कर देखा, कान कटे यहूदी वा पागल ग्रीक को चटाई नहीं दी गयी है, मेरे प्रति इतना अनुग्रह दिखलाने का कारण क्या है; समझ न सकने के कारण ताज्जुब हुआ, किन्तु मैंने उसे बड़ी कीमत की शैया के समान ग्रहण किया। उस घर की मेज पर इतना कूड़ा करकट पडा था जिस से उस पर लेटने या बैठने को जी नहीं चाहता था, किन्तु दिन रात उस मकान में घूमा नहीं जा सकता था, और न एक जगह बैठाही रहना सम्भव था।

इस समय दोपहर ढल चुका है। सबेरे से अभीतक एक वार भी नहीं बैठा। चटाई के ऊपर बैठकर दोनों पैर सीधे किये, कितनी चिन्ता मनमें पैदा होने लगीं, उनकी गिनती नहीं है। सौदागर की बात ही सब से पहले मनमें आयी। उस के ऊपर मुझे ज़रा भी क्रोध नहीं हुआ तब भी उसके व्यवहार से मेरे मन में बडी घृणा हुई थी; किन्तु पृथ्वी के सब ही लोग क्या अपने प्राण देकर दूसरे के प्राण बचावेंगे, यह कौन आशा कर सकता है? जो लोग शिरके ऊपर तल-वार देखकर हँसते हँसते कहसकते हैं, शिर दिया किन्तु गुप्त बात प्रकट नहीं करेंगे, वेही यह कर सकते हैं, सौदागर यह नहीं कर सकता।

सब दिन बडे दुखी मन से कटा, मैं उस चटाई के ऊपर चितहो लेटा हुआ अपने भाग्य की बातें सोचने लगा; ऐसा झकमार ने का काम क्यों किया था, उसे याद कर चित्त बहुत दूखने लगा।

सन्ध्या से कुछ पहले एक बवर्ची मुझे कुछ खाने को देगया। मरने का जितना डरता था, उतनी भूख थी; मैंने उत्सुकभाव से मेरे लिये लाये हुए प्याले की तरफ देखा; देखा कि उसमें गले हुए खजूर पड़े हैं; ख्याल होता है कि अत्यन्त भूखा कुत्ता भी उन्हें नहीं खाना चाहेगा, मैंने उसे नहीं छूआ, भूखकी तकलीफ सहने लगा। पृथ्वी के बहुत देशों में घूमा हूं; बहुतही नीचे दर्जे के खल्लासी जो आहार पाते हैं मैंने उसे भी खाया है; भारतकी राजधानी कलकत्ते के लाल बाजार में जो सब नाविक-भवन हैं, उनमें से एक में भी मैंने भोजन किया है, किन्तु इस तरह का भद्दा भोजन कभी नहीं देखा। नित्यही यदि ऐसा भोजन आवेगा तो भूख के कारणही प्राण जावेंगे।

रात तो जैसे तैसे निकाली, सुबह फिर भोजन आया; सौभाग्य के कारण इस समय कुछ भात मिला, कांटा, चम्मच कहां मिलेगा इस ख्याल से बंगालियों के समान उस भातको खा कुछ भूख को दमन कर सका।

मैंने मनमें ख्याल किया था कि, उसी दिन सुलतान के यहां से मेरे लिये तलबी मिलेगी; किन्तु कोई खबर नहीं मिली; सुतराम् अपने उन दोनों साथी कैदियों के साथ दिन काटने लगा। कानकटा हुआ बेहूदी बहुत बातें नहीं करता था, हमेशा बैठा बैठा छुटकारे के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता रहता था; पागल ग्रीक हमेशाही जहाज चलाता है, कभी कभी बदमाश मल्लाहों के; मारने के लिये घूंसा उठाता था। सन्ध्या को फिर वही गले हुए खजूर आये। इस बार भूख की तेजी के कारण वे खाये। मैंने एक बार बाहर जाने के लिये अपने पास के पहेरवाले से प्रार्थनाकी, किन्तु वह बेहरा है, उसने मेरे मुंहपर थूककर घृणा से कहा, काफिर जिस से तकलीफ पाकर मरे वही तेरी देखने की इच्छा है। मेरे मन में ऐसा आया कि एक छलांग मार इसको भींतपर धक्का देकर माथा फोड़दूं; किन्तु क्रोध को रोका। यदि मैं अपनी इस इच्छा के मुताबिक काम करता, तो मेरे लिये क्या होता सो अनुमान नहीं करसक्ता। किन्तु इतना निश्चय है कि उस दिन मेरा शिर धड़से अलग कर दियाजाता।



पाचवां परिच्छेद।

अद्भुत प्रस्ताव

पूर्व परिच्छेद वर्णित घटना के तीन दिन पीछे तक सुलतान अथवा सूबेदार किसी की कोई खबर नहीं मिली। कभी कभी मुझे ख्याल होता था कि मेरे समान तुच्छ कैदी को वे लोग याद भूल गये हैं। इस कैदकी कोठरी से अब बाहर होने की आशा नहीं है। किन्तु चौथे दिन जेलखाने का दरवाजा सहसा खुला एवम् काराध्यक्ष और वह सिपाही जिसने कई दिन पहले मेरा अपमान किया था, वे दोनों मुझे सांकल से बांध फौजदार के पास ले चले।

यह फौजदार एक मौलवी हैं, सुतराम् मुसलमान के सिवाय और दूसरी जाति से यह घृणा करते हैं; बहुत दिनोंतक इनने मुझे अपना मित्र माना था; किन्तु आज मैं भाग्य के दोष से आसामी हूं; इस अवस्था में उन से शिष्टाचार पाने की आशा नहीं करसकता। खैर जो हो; पूर्व परिचय स्मरणकर अथवा मनकी चपलताके कारण न मालूम किस वजह से उन ने मेरे कैद में रहने के सम्बन्ध में दो एक बातें पूछीं; कैदखाने में मैं कष्ट पा रहा हूं यह सुनकर वह क्रुद्ध हो बोले; कैदखाने में तुम कष्ट पा रहे हो? सूबेदार साहब ने तुम्हारे लिये पलंग और पंखे की व्यवस्था नहीं की, तुम्हारे खाने का बनानेके लिये अच्छा बवर्ची उस जगह नहीं भेजा यह बड़े अन्याय की बात है।"

मैंने कुढ़कर कहा; "मैं इस समय विपत्त में हूं, इस हालत में आप सरीखे ज्ञानी आफीसरको इस तरह ताने मारने शोभा नहीं देते। यदि मैं प्रकृत ही अपराधी हूं तो आप मेरे लिये उपयुक्त दंड की व्यवस्था कीजिये। यह तकलीफ अब और सहन नहीं होती।"

फौजदार ने कहा, "तकलीफ क्या है? तुमसुलतानकी अतिथि शाला में बड़े आनन्दसे हो; खाने पीने के लिये कुछभी चिन्ता नहीं है, ठीक समयपर सब चीजें पाते हो, ऐसे सुख से जितने दिन काट सकते हो काटो। मैंने सुना है, कि सुलतान साहब तुमसे बड़े असन्तुष्ट हुए हैं, इसी लिये उन के दरबार में तुम्हें हाज़िर कर ने की आज्ञा नहीं हुई।"

यह बात सुन मैंने अपने मन में कहा; "सुलतान के सामने जाना कोई सुखकी बात नहीं है; मुझ से असन्तुष्टहो वे मुझे फिर

अपने सामने न बुलावें तो कुछ दुख की बात नहीं है। किसी तरह कैदखाने से छुटकारा पाने में ही आनन्द है । प्रकट में फौजदार से कहा, "सुलतान साहब मेरे प्रति असन्तुष्ट हुए हैं यह सुनकर बडा दुःखी हुआ, इच्छानुसार उनको सन्तुष्ट करूं, इतनी हिम्मत मुझ में नहीं, उनके समान धर्म्मात्मा प्रजारंजक नरपति का असंतुष्ट होना बड़े ही दुखकी बात है। दयावान उनके समान पृथ्वी पर नहीं है।"

मैंने यह बात ताने के तौर पर कही थी वा नहीं, यह ठीक ठीक न समझ फौजदार ने एक दफे मेरी तरफ टेढ़ी निगाह से देखा, किन्तु उसके सम्बन्ध में कुछ अपना मत प्रकट नहीं किया, कुछ देर चुप रह कहा, "तुम ने जो सब राईफल गुप्तभाव से इस देश में मंगवायी थीं, वे सब मेरे हाथ लग गयी हैं।"

यह बात सुन मैंने पैनी निगाह से फौजदार के चेहरे को देखा, और फिर पूछा, "स्पेनीय सौदागर फर्नाण्डेज अब कहां है?"

फौजदार ने कहा, "वह भी तुम्हारे समान बहुत सुख से कैदखाने में रहते हैं, सुलतान साहब की कृपा से अब भी उसकी गरदन साबित है। किन्तु और कितने दिन वह जीता रहेगा, यह बतलाना कठिन है।"

इस बार मैंने अपने भोजन के विषय में कहा; कैदखाने में मैं भोजन के बिना कष्ट पाता हूं. आप अनुग्रह कर काराध्यक्ष को भोजन की सुव्यवस्था कर देनेको कह दें मैं बडा अहसान मन्द होऊंगा; मुझे जो खाने को दिया जाता है, उसे खाकर जीवन धारण करना कठिन है।"

मेरी बात सुन फौजदार ने एक दम क्रोध से कहा, "अरे हरामजादे मैं क्या तेरा बवर्ची हूं, जो तेरे आहार का बन्दोवस्त करूंगा? तुझे जो बिना खाये नहीं रहकर कुछ खाने को मिलजाता है; इस के लिये तू अपने भाग्य को धन्यबाद दे।"

फौजदार की आज्ञानुसार मुझे फिर जेलखाने में जाना पड़ा, फिर तीन दिन वहीं रहा; इन दिनों में उन दोनों कैदियों और पहरे वाले के सिवाय और किसी का मुँह नहीं देखा, बहुत दिन से पेट भर न खाने और एक घर में बन्द बिना कुछ काम किये रहनेसे मैं अत्यन्त अवसन्न होगया। इस तरह कुछ दिन और यहां रहना पडता तो मैं भी उस ग्रीक कैदी की तरह पागल होजाता। इतने में एक दिन सुनने

मैं आया कि, सुलतान राजधानी में नहीं हैं, जिस दिन मुझ से मिले थे उसी दिन वे समुद्र किनारे बन्दर पर गये हैं, कब लौटेंगे यह कोई नहीं जानता। आश्चर्य की बात यह है कि फौजदार ने यह बात मुझ से छिपा कर कही थी कि, सुलतान मुझ से असन्तुष्ट है इसी लिये मुझे नहीं देखता। यह बात सुनकर मुझे कुछ भी दुःख नहीं हुआ।

उसी दिन दोपहर को एक सिपाही ने दरवाजे के पास आ मुझ से कहा कि तुम्हें सुलतान के पास जाना होगा, कैदखाने में रहते रहते में इतना दुखी होगया था कि, यह जानते हुए कि सुलतान के साम ने जाने में बहुत दुख मिलेगा, तौ भी तुरन्त वहां जाने के लिये तयार होगया। और सिपाही के साथ जेल खाने के मकान से बाहर आया, देखा कि उस जगह सूबेदार मेरे लिये प्रतीक्षा कर रहे हैं, उनने मुझे साथ ले सुलतान के दरबार की राह ली।

पहले जिस कमरे में सुलतान के दर्शन हुए थे, अबकी बार उस में नहीं हुए, दूसरे कमरे में वे पलंग पर बैठे थे उनके सामने एक सोनेकी रकावी में कुछ फल और मिठाई थी, उसमें से कुछ उठा कर वह कभी कभी में मुँह में डालते थे। मुझे अपने सामने पहुंचा देख उनने सूबेदार साहब को कमरे से बाहर जानेके लिये इशारा किया। वजीर साहब एक कागज लिये उनके पास खडे थे, इशारा पाते ही वे भी उस कमरे के बाहर चले गये। मेरे और सुलतान के सिवाय उस कमरे में और कोई नहीं रहा, मौका ऐसा था कि मैं सुल तान को जान से मार भगने की चेष्टा कर सकता था, किन्तु वह चेष्टा वृथा होती, सुलतान के देह रक्षक इस कमरे के पास ही किसी गुप्त स्थान में छिप रहे थे, मेरे एक डग आगे बढते ही वे सुलतान का इशारा पा फौरन मुझे मार डालते।

किन्तु एक बात समझ में नहीं आयी कि सुलतान ऐसी क्या गुप्त बात कहेंगे कि, वजीर और सूबेदारके समान ऊंचे पद वाले कर्मचारीयों को हटा दिया? वह जो कुछ कहेंगे वह निसन्देह गुप्त बात है। मेरे नसीव में जो खराब से खराब होना था सो होचुका इस से बडी बिपति की शंका नहीं थी, सुतराम् ख्याल हुआ कि शायद सुलतान अगाडी के लिये जो व्यवस्था करें वह मेरे लिये हितकर हो। ऐसा समझ मैं पहले की अपेक्षा और भी सम्हल कर सुलतान के सामने खडा होगया।

प्रायः दो मिनट पीछे सुलतान ने मुझ से कहा, " काफर, मेरी कृपा से आज तक तुम्हारा शिर धड से अलग नहीं किया गया है; आज तुमको इस जगह इस लिये बुलाया है कि तुम मरना चाहते हो या छुटकारा ? "

सुलतान की यह बात सुनकर मेरी हिम्मत और भी बँधगयी। कई दिन से मुझे मौतका डर दिखलाया जाता था, आज सहसा इस तरह चाल बदलने का क्या कारण है ? कारण जो कुछ हो, मैंने सुलतान से कहा " जहांपनाह, बचने की आशा रहते हुए कौन मरना चाहता है ? इस पृथ्वी पर दीन-दरिद्र अन्धा, भिखारी, यहां तक कि दुःसह रोग की तकलीफ से दुखी पुराना रोगी भी मरना नहीं चाहता, प्राण की माया छोडना कठिन है। मैं आप से प्राण की भिक्षा मांगता हूं; मेरी उमर थोडी है, संसार की सुख-वासना अभी तक पूरी नहीं हुई; मैं बचना चाहता हूं। "

उस दिन शुक्रवार था, मुझे बुलाने से कुछ ही पहले सुलतान मसजिद में नमाज पढने गये थे इस लिये अनुमान होता है कि फिरभी उनके दिल में धर्म का पलीता जल रहा था, इसी से मेरी बात सुन उनने कहा, " तुम काफिर हो, इस लिये ऐसी बात कहते हो; प्रकृत धार्मिक व्यक्ति क्या कभी मरने से डरता है ? जो धार्म्मिक है उसे मरने में ही लाभ है, कारण, तब वह इस शोक दुखकी पृथ्वी को छोड़कर स्वर्ग को जाता है, पर तुम्हारे समान काफिर की बात निरालीहै। जो हो; तुमको अपने साथ धर्म्मचर्चा करने के लिये नहीं बुलाया है और न तुम इस चर्चा के योग्य ही हो। अब मैं जो कुछ कहूं उसे ध्यान पूर्वक सुनो एवम् जो पूछूं उसका ठीक ठीक उत्तर दो। हमारे देश की भाषा में तुम बातें खूब कर सकते हो सही किन्तु तुम वेश बदले हुए प्रदेशी हो यह अस्वीकार नहीं कर सकते ? "

मैंने कहा, " जहांपनाह आपका अनुमान ठीक है। "

सुलतान ने कहा, " तुम इंगलेण्ड के आदमी हो प्रायःछ महीने हुए मैं वहां सैर करने गया था। "

मैंने कहा, " हां, मैं इंगलेण्ड का आदमी हूं; यह बात अस्वीकार नहीं करूंगा। "

सुलतान आज इस तरह मुलायमतौर पर बातें क्यों पूछ रहा है; यह निश्चय नहीं कर सका; उसका मतलब क्या है, जानने के लिये मेरा मन बहुत ही व्याकुल हुआ।

सुलतान ने कहा. तुम्हारा देश बड़े मजेकी जगह है, अद्भुत राज्यहै, किन्तु तुम्हारे देश में एक भी धार्मिक मनुष्य नहीं है, उस जगह के सबही काफिर हैं, यही बड़े दुखकी बात है। खैर जो हो, यदि तुम यहां से छूट जावो तो तुम अपने देश जावोगे ?"

मैंने सहर्ष कहा, "हां, निश्चय ही; जन्म भूमि के समान स्थान पृथ्वी में और नहीं है।"

सुलतान ने कहा, "तुम इस समय हमारे बन्दी हो, अति गुरुतर अपराध के आसामी हो, तुम जानते हो, मैं इच्छा करूं तो अभी तुमको हाथी के पैर से कुचलवाकर मरवाडाल सकता हूं, मेरा इशारा पाते ही इसी समय मेरा कोई नौकर तुमको जान से मार डाल सकता है ?"

मैंने कहा, "खुदावन्द, यह बात मैं अच्छी तरह जानताहूं।"

सुलतान कुछ देर तक चुप रह, फिर उनने उत्साह पूर्वक मुझ से पूछा, "उपयुक्त मूल्य दे कर तुम अपना जीवन और स्वाधीनता खरीद करोगे ?"

मैंने कहा, "खुदावन्द, मैं गरीब आदमीहूं अपनी स्वाधीनता खरीद करने के लायक मेरे पास रुपया नहीं है, और बिना रुपये के मैं स्वाधीनता खरीद नहीं सकता।"

सुलतान ने दांत पीसकर कहा; "अबे अहमक ! तुझ से क्या मैं रुपया चाहता हूं ? मेरे भंडार में क्या रुपयों का टोटा है ? मैं तेरा हाल जानता हूं, सुना है तू प्रपञ्ची पुरुष नहीं है, यह कुछ कम तारीफ की बात नहीं है।"

मैंने कहा, "सुलतान की इस बात से मैं कृतार्थ हुआ, जहांपनाह क्या हुक्म है; जानने की इच्छा करता हूं।"

सुलतान ने पहले से और भी नरम हो कहा; "तुम बडे सच्चे आदमी हो इस का मुझे प्रमाण मिलचुका है; राइफल बेचने के व्यापार में तुमने बहुत तकलीफ पाने पर भी अपने साथियों के नाम नहीं बतलाये, अत्याचार के डर से तुमने अपने मित्र के प्रति बिश्वासघातकता नहीं की, यह जानने के लिये मैं ने तुमको कैद कर अनेक प्रकार की यन्त्रणा दी है।"

सुलतान की यह बात सुनकर मैं विस्मयसे उसके चेहरे की तरफ देखने लगा, उसके राज्य में मैंने छिपे छिपे बन्दूक बेचनेके लिये

जो जो काम किये हैं, उस के लिये क्या सुलतान सचही मेरे ऊपर नाराज नहीं हुए ? यदि ऐसा है तो इस तमाशे का क्या कारण ? मैं कुछ भी नहीं समझ सका।

सुलतान ने कहा, " तुम छिपकर मेरे राज्य से भागे थे; तुम्हारे यहां से भागजाने में इस राज्य की भलाई के सिवाय कुछ भी बुराई नहीं थी, तौ भी तुम को किस लिये पकड कर लाया गयाहै, बतला सकते हो क्या ? "

मैंने कहा, " मुझे फांसी दे दूसरे अपराधियों को डर दिखलाने के लिये मुझे गिरफ्तारकर लाया गया है। "

सुलतान ने हँसकर शिर हिलाया, फिर कहा; " निबोध लोगों के मन में ऐसा ही ख्याल होता होगा; किन्तु मेरे मनका भाव दूसरी तरह का है, वह और कोई समझ भी नहीं सकता। मैं सुलतान हूँ, कौन किस तरह का आदमी है, यह खुद परीक्षा कर फिर उसके हाथ में उपयुक्त काम का भार देता हूं; मैं तुम्हें जिस काम का भार दूंगा, तुम उस के योग्य हो. यदि तुम्हारी योग्यता का प्रमाण नहीं पाता. तो इतने दिन से तुम्हारा कटा हुआ शिर नगर की ढचौडी पर लटका हुआ लोग देखते। अब कहो कि तुम छूटना चाहते हो या मरना चाहते हो ? "

मैंने, सुलतान का अभिप्राय न समझ एवम् हटात् किसी प्रतिज्ञा में बँधना उचित न जान, कहा; " खुदाबन्द के लिये क्या काम कर में छूटने का अधिकारी होऊंगा यह जान ने की इच्छा करता हूं। "

सुलतानने कई मिनटतक मेरी बात का जवाब नहीं दिया, और उसी कमरे में इधर उधर घूमने लगे, फिर हटात् मेरे सामने आ खड़े हो धीरे से कहा; " अभी तुम से सब खुलकर कहने का समय नहीं आया है, तब भी इतना कह रखता हूं; तुम्हारे इंगलेण्ड देश में एक आदमी है; उसे जैसे हो वैसे मेरी राजधानी में लाना पडेगा; वह आदमी मेरा मित्र है वा शत्रु है यह बात अभी तुमको नहीं बतलाऊंगा। यदि मैं स्वयम् यह काम करसकता तो तुम्हारी सहायता नहीं चाहता, किन्तु भगवान जानते हैं, कि वह काम मेरे द्वारा नहीं हो सकता; कितने ही कारणों से उस गुरुतर काम का भार मैं अपने किसी कर्मचारी को भी नहीं सौंपसका। वह काम सहज है ऐसा मन

में ख्याल मत करना, क्यों कि जिस आदमी को यहां लाना पड़ेगा वह साधारण मनुष्य नहीं है, यदि तुम इस काम में वहां पकड़े जावो तो तुम्हें वहां कठिन दंड मिलेगा। यदि तुम इस डर से मेरी आज्ञा पालन करने से इन्कार करोगे तो तुम्हारा शिर धड से अलग कर दिया जावेगा। मेरी जो बात है, वही काम है, अनुमान होता है कि तुम जान गये होगे।"

मैं जानगया, कि सुलतान की इस बात में बिन्दुमात्र भी छल नहीं मैंने कहा, "सुलतान क्या यह कहना चाहते हैं, कि मैं इंगलेण्ड में जाकर उस जगह के किसी विख्यात मनुष्य को छल, बलकौशल से इस जगह लेकर आऊं, इस लिये जो कुछ प्रपञ्चनाकी आवश्यकता पडेगी, उस में संकोच करने से काम नहीं चलेगा।"

सुलतान ने हंसकर कहा, "बुद्धिमान फिरंगी तुमने यथार्थ अनुमान किया है, यदि तुम बचना चाहो, यदि स्वदेश का दर्शन करने की तुम्हारी फिर इच्छा है, यदि तुम्हें अपने जीवन से बिन्दुमात्र भी ममता है, तो तुम मेरे प्रस्ताव को स्वीकार करो, मेरे इस प्रस्ताव को बिना स्वीकार किये तुम्हारे प्राण बचने का और कोई उपाय नहीं है। तुम अब विचार कर देखो, मैं फिर तुम्हें सब बात सुनाऊंगा।"

सुलतान के धरती पर पैरखट खटा तेही एक सिपाही सलाम करता हुआ सुलतानके सामने आ पहुंचा एवम् इशारापाते ही मुझे कैदखाने की तरफ ले चला।

कैदखाने में पहुंच कर मैं अपनी अवस्था पर चिन्ता करने लगा, अरब राज्य में घातक के हाथ से मरने की मेरी इच्छा बिलकुल नहीं थी, यह बात कहना व्यर्थ है, किन्तु विश्वास घातकता पूर्वक दूसरे को इस भीषण प्रकृति नरराक्षस के हाथ में सोंप मैं जो अपनी जान बचाऊं; यह भी मेरी इच्छा नहीं थी; विशेषतः सुलतान मुझे जिस काम का भार देना चाहते हैं; उस काम का होना भी असम्भव था। क्यों कि इंगलेण्ड से किसी बडे घराने के आदमी को बल पूर्वक या कौशल से अरब राज्य में लाना सहज का काम नहीं। मेरा उद्देश्य प्रकट होने पर मैं अंग्रेज समाज में मुंह तक नहीं दिखला सकता, उस की अपेक्षा मरनाही अच्छा है। न, मैं यह कर नहीं सकता, मैंने जीवन में बहुत बुरे काम किये है, वे सब बातें याद आने से मेरा मन बहुत ही बिगडा। इस के ऊपर पापका बोझाबढानेकी और इच्छा नहीं

थी। दूसरे का सर्वनाशकर अपनी रक्षा करना नीचका काम है, मैं इतना नीच नहीं हूं। मनही मन मैंने ठान लिया कि अबकी बार सुलतान से भेट होने पर साफ साफ कहदूंगा कि यह काम मेरे द्वारा नहीं होगा।

छटवां परिच्छेद।

जीवन का मूल्य।

रात पूरी होगयी, किन्तु मेरी चिन्ता पूरी नहीं हुई, सब रात मैं मैं एक दफे भी आखें बन्द नहीं कर सका। सबेरे की सूर्य किरणोंकी रोशनी में मेरी निगाह अपने साथी यहूदी और ग्रीक कैदियों के मुँह पर पडी, एक तो उन्माद और दूसरा विकृत—बदन था। उनकी दुर्दशा देख मेरा संकल्प शिथिल हुआ, मैंने बिचार किया यदि सुलतान के प्रस्ताव को स्वीकार न करूं तो इस कारागारमें ऐसी कठिन यन्त्रणा से मेरे प्राण निकलेंगे। निर्दय सुलतान की आज्ञानुसार पहले मेरी नांक छेदी जावेगी फिर मैं इस पागल कैदी की तरह उन्मत्तता प्राप्तकर बडे कष्ट से इसलोक से विदा होऊंगा। इस नयी उमर में इतनी आशा भरोसा रहते हुए ऐसी सुन्दर पृथ्वी से कौन बिदा होना चाहता है? सो मैं भी नहीं चाहता; जीते रहनेकी बडी इच्छा थी, यही सोचकर निश्चय किया कि सुलतान की इच्छानुसार ही काम करूंगा। आप मुझे कापुरुष समझ घृणा करेंगे, किन्तु मैं जिस अवस्थामें पडा हूँ, यदि आपभी उसी अवस्था में पड़ते, तो आपके मनका भाव ठीक इसी तरह का होता, इस कठोर अग्नि परीक्षा में उत्तीर्ण होना साधारण मनुष्य की शक्ति के बाहर है।

मेरे लिये सामान्य भोजन आया इच्छा न रहने पर भी मैं ने कुछ खाया, ख्याल हुआ कि सुलतानके पास से शीघ्रही कोई आदमी आवेगा, कुछ देर बाद सुना कि सुलतान जंगलमें आखेट खेलने गये हैं; दोपहर से पहले उनके लौट कर आनेकी सम्भावना नहीं है।

दिन के दो बजे के समय सुलतान के पास मुझे ले जानेके लिये आदमी आया। सिपाहीयों से घिरा हुआ में सुलतान के सामने उपस्थित हुआ। देखा, कि अभी उनने आखेटकी पोशाक नहीं उतारी है; उसी पोशाक में वे कमरे में टहल रहे है। उस कमरे में एक तरफ एक उमराह को खड़ा देखा, उस आदमी का मुँह सूखकर अमचूर के

समान होगया था; उसका मुँह देखने से मालूम पड़ा था; कि सुलतान उस के ऊपर नाराज हुए हैं। मेरे उस जगह पहुंचते ही सुलतान ने उस आदमी को वहां से चले जाने के लिये कहा उमराह पीछे हट सलाम करता हुआ बाहर चला गया। शेर के पिंजरे से निकल कर बिल्ली का बच्चा जैसे सुखी होता है अनुमान होता है, वैसे ही उमराह इतनी देर बाद सुखी हुआ।

सुलतान ने बहुत देर तक मेरे तरफ निगाह नहीं की, यहां तक कि, मैं उस कमरे में आगया हूं यह भी उन्हें मालूम हुआ कि नहींइस में भी सन्देह है। ऐसी अवस्था में उन से कुछ पूछना और शेर के पिंजरे में घुसकर उसका पंजा पकड़ कर खींचने में एक सी आफत है। जो हो; बहुत देर बाद सुलतान ने अपने तख्त पर बैठकर एक ग्लास शरबत पीया, उनके तख्त के पास एक जलचौकी के ऊपर सुशीतल सरबत उनके लिये रखा था।

शरबत पी ठंडे हो सुलतान ने मुझ से कहा, " कल तुम से जो मैंने कहा था, उस के सम्बन्ध में क्या निश्चय किया? मेरा प्रस्ताव तुम्हें स्वीकार है कि नहीं सो कहो।"

मैं क्या उत्तर दूं; कुछ देरतकतो यह विचार किया; ख्याल हुआ कि मैं जो कुछ कहूंगा वह सुलतान को अच्छा नहीं मालूम होगा; तो भी हिम्मत बांध कहा, " जहांपनाह इस बड़े राज्यमें सबही जानते हैं कि; सुलतान साहब को सच्ची बात सुनना बड़ा पसन्द है।"

सुलतान ने तेज निगाह से मेरी तरफ देख कहा, " हां, यह बात ठीक है; किन्तु उसका इस बात से क्या सम्बन्ध है,?"

मैंने कहा, " विशेष सम्बन्ध कुछ नहीं है, तो भी मैं अपने मन की बात निर्भय पूर्वक कह सकता हूं कि नहीं; इसी लिये कल मैं ने आप से अरज की थी, कि सुलतान मुझे सादा आदमी ख्याल करें।"

सुलतान ने शिर हिलाकर मेरी बात मञ्जूर की।

मैंने कहा, " जहांपनाह जब आप मुझे सादा आदमी ख्याल करते हैं, तब मैं सादा आदमी के समान बात कहूं तो कुछ अपराध तो नहीं होगा?"

सुलतान ने कहा, " तुम्हें क्या कहना है, जल्दी कहो।"

मैंने कहा, " सुलतान साहब की बात सुनकर मैं यही समझा हूं कि मुझे अपने देश जाना पड़ेगा एवम् उस जगहसे एक बड़े घराने

के आदमी को छल, बल से यहां ला सकूं तो मैं बच सकताहूं, किसी सादा आदमी से यह काम होना कहां तक सम्भव है यह क्या जहांपनाह ने विचार किया है ? ”

सुलतान ने क्रोधित हो कहा“मैं तुम्हें जीवन दान दूंगा, उसके एवज में तुम मेरे लिये कुछ नहीं करोगे, यह आशा तुम किस तरह करते हो ? ”

मैंने कहा; “ प्राणकी अपेक्षा मान बड़ा है यह आप जानते ही हैं। भला आदमी प्राण के भय से मान नष्ट करने को कभी राजी नहीं होगा। ”

सुलतान ने कहा; “ अबे कुत्ते मेरे सामने तैंने ऐसी बात कहने की हिम्मत की ? ”

मैंने कहा; सुलतान के अभय दिये बिना मैं कभी ऐसी बात नहीं कह सकता, यदि मैं इस काम का भार ग्रहण करूं तो मुझे सब से पहले यह जानना जरूरी है, कि, जिस आदमीको मैं इस जगह लाऊंगा, उसकी कुछ क्षति होगी कि नहीं ! ”

सुलतान ने कहा, “ देखो; मैं इस राज्य का सुलतान हूं; मुझे झूठी बात कहने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुमसे सच कहता हूं, उसकी क्षति होने की कोई आशंका नहीं है। मैं मोहम्मद की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, मैं अपने स्वर्गमय पिताके नाम की सौगन्ध खाकर कहताहूं; मैं उसकी कुछ भी क्षति नहीं करूंगा। ”

सुलतान की बात सुन और उसका भाव देख साफ साफ समझमें आगया कि, उसकी बात पर निश्चय विश्वास करना चाहिये। तब मैं ने कहा, “ किस आदमी को लाना पडेगा, यह जानने की इच्छाहै। ”

सुलतान ने कहा, “ उसका नाम तुम अवश्य जान सकोगे, किन्तु उस से पहले मैं जानना चाहता हूं कि, तुम यह काम करोगे कि नहीं ? ”

मैंने कहा, “ आप के लिये यह काम बिना किये मेरे छूटने की आशा नहीं है, इसलिये मुझे सब बातें मालूम करना जरूरीहै। इच्छा से हो चाहे बिना इच्छा के हो, मुझे वह करना ही पडेगा। ”

सुलतान ने कहा, “ तुम सौगन्ध खाकर कहो, कि तुम विश्वास घातकता नहीं करोगे, किस ने तुम को इस काम का भार देकर भेजा है, यह भी किसी के सामने प्रकट नहीं करोगे। ”

मैंने कहा; " हाँ, मैं सौगन्ध खाकर कहता हूं कि मैं आप के प्रति विश्वास घातकता नहीं करूंगा; और किसी के सामने यह बात प्रकट भी नहीं करूंगा। "

सुलतान ने कहा, " तुम ईश्वर की सौगन्ध खाओ ? "

मैंने कहा, " हां मैं परमेश्वर की सौगन्ध खाकर यह बात कहता हूं। "

सुलतान उठकर दरवाजे के पास पहुंचे, किवाड खोल कर देखा कि दूसरे कमरे में कोई आदमी है कि नहीं, बाहर एक सिपाही पहरे वाला खडा था, सुलतान ने उस से पुकार कर कहा; " मेरी बिना आज्ञा के कोई भीतर आवेगा तो उसे उसी समय मार डालूंगा।" फिर सुलतान किवाड बन्द कर अपनी जगह बैठ गये; सुलतान की इस सावधानता से मेरे विस्मय की सीमा न रही। मेरी छाती मानो बांसो ऊंची उछलने लगी।

सुलतान ने मुझ से पूछा, " तुम कौन कौन बात जानना चाहते हो ? "

मैंने कहा, " जिस आदमी को यहां लाना पडेगा उसका नाम जानना चाहता हूं। "

सुलतान ने हंस कर कहा, " वह पुरुष नहीं है, वह स्त्री है, अद्भुत सुन्दरी है। "

सुलतान की बात सुनते ही मानों मेरे शिर पर वज्राघात हुआ भय और विस्मय से मैं दो हाथ हटकर खड़ा होगया। हा परमेश्वर ! कैसा दुष्कर्म्म करने के लिये मैं इस पिशाचके निकट प्रतिज्ञा में बंधा हूं ? सुलतान मेरा यह विव्रत-भाव देख, खूब हँसा।

मैंने बडे दुख के साथ पूछा, " उस सुन्दरी का नाम क्याहै। "

सुलतान ने कहा; " वह युवती डिऊक आफ बाम्बरो की लडकी लेडी आलिभिया बेल हामटन है। "

यह नाम सुन मैं एक दम चौंक पडा डिऊक आफ वाम्बरोकी लडकी को अरब राज्य में लाना सहज नहीं है। इस काम का मुझे स्वप्नमें भी ख्याल नहीं था, इंगलेण्ड के एक बहुत बडे घरकी लडकी को चुराकर यहां लाना पडेगा; इंगलेण्ड की सर्व श्रेष्ठ सुन्दरी को शेर के मुँह में पटकूंगा, यह क्या विश्वास के लायक बात है। जो आदमी मेरे निकट ऐसा प्रस्ताव उपस्थित करने का साहस करे, वह

क्षमा करने लायक नहीं; यदि मेरे दोनों हाथ सकल से न बंधे होते, तो मैं इसी समय सुलतान को गला घोट कर मार डालता ।

मैंने हताश हो कहा, " सुलतान; यह काम मेरे द्वारा नहीं हो सकता; मेरे पक्ष में यह बिलकुल असम्भव है, लेडी अलिभिया को मैं बहुत दिन से जानता हूं । "

सुलतान ने कहा, " अब मना करने से फल क्या ? तुमने ईश्वर की सौगन्ध खा इस काम का भार लिया है, अब तुम्हें इसे अस्वीकार करने का अधिकार नहीं है । "

मैंने क्रोध हो कहा, " मुझे अस्वीकार करने का अधिकार नहीं है पर मुझे मरने का अधिकार है, आप मुझे शूली दिलवाइये, तलवार से मेरे शरीर के टुकडे टुकडे कर डाइये, आपकी जैसी इच्छा हो वैसे मेरे प्राण लीजिये, मैं यह काम नहीं करूंगा । "

सुलतान ने धीरता पूर्वक कहा; " प्रतिज्ञाकर जो पूरी नहीं करता; प्रतिज्ञा भंग करने में जो संकोच नहीं करता, वह कुत्ते से भी अधिक अधम है । "

मैंने कहा; " छल; बल से उस बडे घरकी लडकी को चुरा कर यहां न लासकने के कारण यदि मैं कुत्ते से भी अधम बनूं मैं तो भी मुझे स्वीकार है; किन्तु वह काम मुझ से नहीं होगा । आप मुझे चाहे हाथीके पैर के नीचे कुचलवाकर मरवाडालें; और जैसी आपकी इच्छा वैसे मेरी जान लें, इस में भी मुझे कुछ दुख नहीं हैं; किन्तु वह काम मुझे करने को न कहें । "

सुलतान ने कहा, " यह काम तुम्हें करनाही पड़ेगा । तुम इतने क्यों डरते हो ? मैं तो तुम से सौगन्ध पूर्वक कहता हूं कि मैं उसकी कुछ भी क्षति नहीं करूंगा । क्षति करना दूर रहा, मैं उसकी इज्जत बढाऊंगा, उसे बडे सुख से रखूंगा, वह मेरी प्रधान बेगम होगी ।

मैं ने कहा, " आपके तो बेगमों का अभाव नहीं हैं, तब फिर क्यों ऐसी इच्छा करते हैं ? "

सुलतान ने कहा, " मैं सुलतान हूं, मेरी जो इच्छा होती है, वही करता हूं । मेरी जो इस समय प्रधान बेगम है उसे वजीर को बकशीस दूंगा । उसे पाकर वजीर बडा सुखी होगा । और यदि तुम यह काम कर सकोगे तो तुम्हारे सुख की भी सीमा नहीं रहेगी, तुम को अनगिनती अशरफी दूंगा । स्वदेश से तुम जब मेरे राज्य में लौट

कर आओगे तब तुम्हारा इतना सन्मान होगा कि, अरबराज्य में आज तक और किसी का नहीं हुआ।"

मैंने केवल शिर हिला दिया. लेडी अलिभिया सुलतान की बेगम बनेगी, इसकी अपेक्षा असम्भव और क्या बात हो सकती है? मैं उस अतुल ऐश्वर्य शालिनी, बडे घरकी कन्या को चुराकर लाऊं, यह बात किस तरह सम्भव हो सकती है?

सुलतान ने मेरा मतलब समझ कहा, "तुम कृष्टान हो; कृष्टान की प्रतिज्ञा की कीमत, आज समझ में आयी। अच्छा, तुम यदि इस काम को नहीं करोगे तो मैं दूसरे की सहायता से अपनी मनोवांछा पूर्ण करूंगा, मेरी आशा कभीभी, अपूर्ण नहीं होने की किन्तु तुम निश्चय जानकर रखना कि, तुम्हें जैसी तकलीफ देकर मरवाऊंगा, मेरे राज्य में वैसी तकलीफसे आज तक कभी कोई नहीं मारा गया।"

मैं गहरी चिन्ता में पडगया, ख्याल हुआ मैंइस कामको करने के लिये राजी न होऊंगा तो सुलतान खूब धन खर्च कर, अपने उद्देश्य सिद्धि करनेकी चेष्टा करेगा, तबभी उद्देश्य सिद्धि होगा वा नहीं यह अनुमान करना कठिन है। किन्तु मैं इस काम को करने के लिये राजी न होऊंगा तो असाध्य यन्त्रणा देकरमारा जाऊंगा,सुलतान की इस उक्ति में बिन्दु मात्र झूठ नहीं। दूसरी तरफ, यदि मैं इस काम का भार लूं, तो भविष्यत में किसी न किसी उपाय से लेडी अलिभिया की रक्षा कर सकूंगा। यह सब सोच विचार कर मैंने डरी हुई आवाज में कहा, "मैं का पुरूष हूं, मैं नराधम हूं; आप का प्रस्ताव मुझे स्विकार है।"

सुलतान ने खुश हो कहा, "इस बार तुमने बुद्धिमान के समान बात कही है, मेरा काम कर पूरा कर देनेसे तुम्हारा उपकार के सिवाय अपकार नहीं होगा, मैं जो तुम्हें इस काम का भार देता हूं, इस लिये तुम्हें घमण्ड करना जरूरी है क्यों कि, तुम्हारा पूरा विश्वास किये बिना, ऐसा, कठिन काम तुमको नहीं सौंपता। कल सुबह तुम यहां से यात्रा करोगे, तुमको यथेष्ट रुपया दिया जावेगा तुम लण्डन पहुंच कर मेरे किसी नौकर से और भी रुपया पा सकोगे। तुम दरिद्र हो, थोडे ही दिन में तुम अतुल ऐश्वर्य के अधिकारी होगे। मैं स्वीकार करता हूं कि जिस काम का तुम्हें भार दिया है वह बहुत कठिन काम है, किन्तु पृथ्वी पर सहज में और बिना परिश्रम किये कौन धनवान हुआ है?"

मैंने पूछा, " लेडी, अलिभिया को किस उपाय से यहां लाना होगा ?"

सुलतान ने कहा, किस उपाय से उसे यहां लाना होगा सो तुमही जानो, तुम्हारी स्वाधीनता के बदले में मैं उसे चाहता हूं जिस तरह हो, उसे यहां लेकर आओ, इस लिये दश बीस लाख रुपये खरच पड़ें तो भी मुझे परवाह नहीं।"

मैंने कहा, " मैं भरशक कोशिश करूंगा, तबभी सदां कोशिश का अच्छा फल हो, यह नहीं है।"

सुलतान ने कहा, " यह बात मैं सुनना नहीं चाहता, काम पूरा किये बिना तुम्हारा छुटकारा नहीं है, तुम यह ख्याल मत करना कि किसी तरकीब से इंगलेंड भाग जाने से छुटकारा पाऊंगा। यदि तुम मेरे साथ विश्वासघातकता करोगे तो मेरे आदमी तुम्हारे देश में जा तुम्हें मार डालेंगे; तुम्हारी चाल देखने के लिये मेरे दो आदमी तुम्हारे देश में छाया के समान प्रत्येक क्षण तुम्हारा पीछा करेंगे।"

समझा, सुलतान के समान अतुल ऐश्वर्य्य के अधिपति को ऐसा करना कुछ भी कठिन नहीं है, किन्तु इस विषय में इस से तर्क वितर्क करने में कुछ लाभ नहीं, सुतराम् मैं चुप रहा। सुलतान के जमीन पर पैर खटखटाते ही एक सिपाही कमरे में दाखिल हुआ एवम् सुलतान की आज्ञा से हथकड़ी बेडी खोलदीं। तब सुलतान ने कहा, " मेरे इस सिपाही के साथ अब तुम जाओ, तुमको अब और जेल में जाना नहीं पडेगा, तुम्हारे रहने के लिये सुप्रबन्ध किया गया है, आज उसी जगह रहो, कल सुबह स्वदेश को रवाने होना सिपाही के साथ मैं निर्दिष्ट स्थान पर गया।

सातवां परिच्छेद।

॥ मेरी स्वदेश यात्रा ॥

मेरे लिये जो वासा निर्दिष्ट हुआ था, वह बहुत बडा तो नहीं था किन्तु देशी प्रथासे खूब सजा हुआ था; मकान के कमरे अच्छे बने थे, दरवाजे खिड़की भी बडी थीं। जेलखाने में बहुत दिन रहने से मैं अवसन्न होगया था, कारागार की यन्त्रणा से मुक्ति पा रोशनी और स्वच्छ हवा से मानो नया जीवन पाया। कारगार में मैं एक दिन भी न्हाया नहीं था, मैंने अपना बनावटी वेश त्याग कर शीतल जल से स्नान किया। मेरा शरीर एक दम हलका होगया।

मैंने सोने के कमरे में प्रवेश कर देखा, कि उस कमरे के एक कोने में मेरी सब चीजें पैक की हुई रखी हैं, पैक खोल कर देखा, मेरी एक चीज भी जप्त नहीं हुई है, मेरी गठरी में कुछ तमाकू और तमाकू पीने का पाईप था, तमाकू पीने वाले को तमाकू न मिलने से कितना कष्ट होता है यह पीने वालों के सिवाय दूसरे नहीं जान सकते। कई दिन से तमाकू न मिलने के कारण मेरा पेट फूल गया था; मैं कुछ समय तक तमाकू पीता रहा, एक दफे तमाकू पीने के बाद दूसरी दफे के लिये तमाकू भर रहा था, ऐसे समय में एक पहरे वाले ने आ कहा, "सूबेदार साहब आप से मिलने के लिये दरवाजे पर खड़े हैं।"

पहरे वाले की बात सुन मैं कुछ विस्मित हुआ। अनुमान होता है कि सूबेदार को मेरे भाग्य के परिवर्तन का कुछ समाचार मिला है; और वह जान गये हैं कि, मैं सुलतान की कृपा का अधिकारी हुआ हूं; इसी लिये वह मेरी इतनी इज्जत करता है। मुझ से मिलने के लिये वह दरवाजे पर खड़ा है। कैदी की हालत में उसने मेरे साथ कैसा व्यवहार किया था, वह इतने थोड़े दिन में मैं कैसे भूल जाऊंगा, तब भी मैं ने पहरे वाले से कह दिया कि, "सूबेदार को लिवालाओ?"

सूबेदार ने मेरे सामने आते ही कहा, "सलामालेकुम्।"

मैंने मुसलमानी रीति के अनुसार जवाब दिया, "माले-कुम् सलाम।"

मैंने सूबेदार से बैठने को कहा वह मेरे सामने चौकी पर बैठ गये। बहुत देर तक वह चुप रहे, सुतराम् मैं ने ही पहले उस से आने का कारण पूछा।

सूबेदार ने कहा, "भाई कुछ विशेष कारण से आपसे मिलने आया हूं। अनुमान होता है आप इस समय आराम कर रहे थे मैं ने जो तकलीफ दी उसके लिये माफ कीजियेगा। राजसरकार के आद-मियों ने आप का जो सब रुपया जप्त किया था, वह आप को लौटा कर देने आया हूं।"

सूबेदार ने एक रुपयों की थैली निकाल कर रखी, थैली रुपयों से भरीथी, मेरा जितना रुपया जप्त किया था उस से कहीं अधिक रुपये उस थैली में थे। मैं समझ गया कि, सूबेदार मेरा रुपया

वापिस करने के बहाने विशेष कारण से मुझे भेट देने आये हैं। किन्तु सूबेदार के समान ऊंचे दरजे का कर्मचारी मुझे भेट क्यों देने आया है इसका कारण नहीं जान सका। खैर जो हो, मैं ने थैलीमें से अपना जितना रुपया था वह निकाल बाकी का सूबेदार को वापिस देदिया।

सूबेदार ने उस थैली की तरफ एक निगाह फेंक मुझ से कहा, " आप क्या मुझ दास से कुछ अप्रसन्न हैं? मैं जितना रुपया लाया हूं उस से आप सन्तुष्ट न हों तो मैं और भी अधिक रुपये लाये देता हूं।"

सूबेदार साहब की बातें सुनकर मैं अपना विस्मय छिपा नहीं सका, कई दिन पहले जो मेरे प्राण लेने को तयार था, मुझे अनेक प्रकार से कष्ट देने में जो तनक संकोच नहीं करता था, वह आज सहसा क्यों मुझे भेट देनेको तयार है? किन्तु यह बात न पूछकर मैंने कहा, आप को क्या कहना है; कह सकते हैं, मुझे बहुत कम समय है।"

सूबेदार ने कहा, " अहमद नाम के एक नौकर ने आप के बन्दूक का कुन्दा मारा था; यह बात सुनकर मैं बहुत दुखी हुआ एवम् हुक्म देदिया कि जब तक इसके हाड न निकल आवें तब तक बराबर इसके पैरों पर चोटें लगती रहें।"

मैंने कहा, " देखता हूं कि मेरे प्रति आप की बहुत दया है, किन्तु आप को मैं जानता हूं, आप जो मेरे प्रति हटात् इतनी दया करते हैं, सो समझ नहीं सका, समझनेके लिये भी मेरा विशेष आग्रह नहीं है। मैं बहुत समय तक आप से बातें नहीं कर सकता, मुझे बहुत काम हैं, और सत्यबात क्या कहूँ, आप सरीखे दुर्जन के साथ अधिक रहना भी नहीं चाहता।"

मेरी बात सुनकर सूबेदार साहब बहुत दुखी हुए और कहा, " आप इस बन्दे के ऊपर नाराज मत हूजिये। आपके समान दयालु पुरुष से यदि बुरा व्यवहार किया गया; उसके लिये मैं उत्तर दाता नहीं हूं। मैं नौकर हूं, जैसा हुक्म मिलता है वैसा करताहूं। मित्रोंके सन्मानकी भी रक्षा नहीं कर सकता, मेरी यह त्रुटि दया कर माफ कीजियेगा। आपके समान मित्रका उपकार करनेके लिये ही मैं सदा सब काम करने को तयारहूं, आपजो हुक्म देंगे, वह फौरनहीं करूंगा, मैं आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा हूं।"

मैने हँस कर कहा; सूबेदार साहब, मेरी जेलकी अवस्था में आपने जो खजूर मेरे खाने के लिये भेजे थे, वही खजूर फौरन मेरे लिये भिजवादीजिये, बहुत दरकार है। ”

मेरी बात सुन, मैं सत्य बोल रहा हूं वा दिल्लगी कर रहा हूं, यह न जानकर सूबेदार सविस्मय मेरी तरफ देखने लगे, किन्तु उस समय मेरा मुख बड़ा गम्भीर था, मुंह पर उस समय रत्तीभर हँसी नहीं थी, इसी से उसने उठ बाहर जा द्वारवान को कुछ सूखे खजूर लाने के लिये हुक्म दिया, फिर भीतर आ मेरे पैरों में पड़कर कातर भाव से कहा, “ मैं बड़ी विपत्त में हूं, उस विपत्त से मुझे मुक्त करसके ऐसा इस राज्य में आपके सिवाय और कोई मनुष्य नहीं है। सुलतान साहब ने मुझे हुक्म दिया है कि, नगर वासियों से बीस लक्ष रुपये अदाकर एक सप्ताह में खजाने में दाखिल करो, यदि मैं यह काम न करसका तो मुझे पदच्युत कर किसी दूसरे आदमी को सूबेदार करेंगे; इस राज्य में मेरे अनेक शत्रु हैं, वे मुझे पदच्युत कराने के लिये सदा चेष्टा करते रहते हैं। यदि मैं एक बार पदसे उतार दिया जाऊंगा तो फिर मेरा ठिकाना नहीं। यदि मेरे पास रुपया होता तो अपने घर से इतना धन दे अपनी नौकरी बचालेता; किन्तु इतना रुपया देनेकी मेरी शक्ति नहीं है, और प्रजा में भी दम नहीं है कि वह देसकें; इस रुपये के इकट्ठे करने के लिये मैंने एक जमींदार प्रजाको बुलाकर उसमें बेंत लगवाये हैं, इस राज्य के कितने ही यहूदी सौदागरों के हाथों पर जलती हुई आग रखवायीहै. कितने ही जनों के नाक कान कटवा दिये हैं, तथापि इतना रुपया संग्रह नहीं करसका। उन लोगों ने कहा कि हमको जान से मार-डालो तो भी इतना रुपया संग्रह नहीं होगा। मैं जानता हूं कि सुल-तान साहब से आप कुछ अनुरोध करेंगे, तो वे उसे अवश्य स्वीकार करलेंगे. आप सुलतान से कहकर मुझे इस विपत्त से बचाइये; आप कहेंगे तो वे मुझे इस रुपये के लिये तंग नहीं करेंगे। मेरी नौकरी भी बनी रहेगी।

इतनी देर बाद सूबेदार साहब का अभिप्राय समझ में आया, किन्तु मैं उसे कुछ आशा भरोसा नहीं देसका। इतने ही में द्वारवान एक प्याले में सूखे खजूर ले आया; देखा कि जेलखाने में मुझे जैसे खजूर खाने को मिलते थे उनसे भी बुरे यह खजूर थे, इनमें रस नाम मात्र को नहीं था, मानो लोहे के टुकड़े थे।

मैंने सूबेदार से कहा, "सूबेदार साहब आपको याद होगा कि कई दिन पहले मैंने आपसे इनकी अपेक्षा कुछ अच्छा भोजन मांगा था, तब आपने यह कहा था कृष्टान कुत्ते तू यही खाने लायक है। मैं यह बात सुलतान के सामने पेश करूंगा। आप लोगोंके साथ कैसा व्यवहार करते हैं, यह जानने पर सुलतान पुरस्कार देवेंगे।

मेरी बात सुन सूबेदारका मुंह भयसे फक पडगया और कांपते२ मेरे पैरों पर लेट गया और बार बार क्षमा प्रार्थना करने लगा।

मैंने कहा, "मैं आपको क्षमा करसकता हूं, यदि आप इन खजूरों को खावें।"

मेरी बात सुनते ही सूबेदार का मुंह सूख गया; उसे ऐसी भद्दी चीज खाने का अभ्यास नहीं, पोलाव-कलिया भी वह नहीं खाता, तब ऐसे सूखे खजूर किस तरह खावे? वह बार बार सविनय इस कठिन परीक्षा से बचने के लिये प्रार्थना करने लगा। किन्तु मैंने उसके गिडगिडाने पर ध्यान नहीं दिया; और तेज हो कहा, "जब तक यह खजूर न खाओगे तब तक मैं तुम्हारी एक भी बात नहीं सुनूंगा। मेरी बात न रखनेसे सुलतानसे कहकर तुम्हारा सर्वनाश कराऊंगा" तब सूबेदार उठ खजूर चबाने लगा एवम् बडे कष्ट से दो एक खजूर खाये, उस समय उसके चेहरे का भाव देख कर मैंने बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी रोकी। उसका दो खजूर खाते ही गला भर आया; और कहा, "मैंने आपके हुक्म के मुताबिक दो खजूर खा लियेहैं और ज्यादा नहीं खा सकूंगा, मेरे दांत टूट जावेंगे।"

मैंने कहा, "भाई ऐसा नहीं, यह एक प्याले खजूर खाने ही पड़ेंगे।"

सूबेदार ने और भी दो खजूर चबाये फिर उस प्याले को हटाकर रख दिया।

मैंने कहा, "प्याला हटाकर रख देने से काम नहीं चलेगा, प्याले में यदि एक भी खजूर बाकी रहैगा तो मैं आज ही सुलतान साहब से कहकर तुम्हें पदच्युत कराऊंगा।"

सूबेदार ने बिना रुचि के और भी दो खजूर उठा मुंह में रख लिये; इस बार उसकी आखें ऊपर चढ़गयीं शिर पर पसीने छलकने लगे, उलटी होने की नौबत हो आयी।

उसका कष्ट देखकर मुझे दया आयी, मैंने कहा, "सूबेदार

साहब कैदीयों के प्रति कैसा व्यवहार करते हो अब समझे, भविष्यत में उनके साथ ऐसा व्यवहार न करो, इस लिये मैंने आपके प्रति ऐसा कठोर व्यवहार किया है, मेरी गुस्ताकी माफ कीजियेगा, आप जिस आशा से यहां आये हैं, मैं सो पूर्ण नहीं कर सकता, सुलतान के राजकार्य्य में मुझे हाथ डालने की इच्छा नहीं है। आप के लिये उन से किसी बात का अनुरोध मैं कर नहीं सकता आप अब जाइये।"

सूबेदार अत्यन्त दुखी मन से चले गये, कुछ मिनिट बाद मेरे खाने का सामान आया, इस बार सूखे खजूर नहीं थे; सुलतान के बवर्ची खाने में जो सब चीजें तयार होती हैं वे सबही मेरे लिये भेजी गयीं इसके सिवाय एक बोतल साम्पेन की भी मिली। मुसलमानों के शास्त्र में शराब छूना भी दोष है, सुतराम् सुलतान के महल में साम्पेन कैसे आयी, यह न जान सका; सुलतान इंगलेंड गये थे तो वहां से इसका व्यवहार सीख आये होंगे। जो हो सम्पेन की एक बोतल मुझे अमृत के समान मालूम हुई, मैंने बड़े आनन्द से भोजन किया; किन्तु सुलतान के निकट में जिस प्रतिज्ञा में बँध चुका हूं उसे याद करने से मेरा मन बड़ा दुखी हुआ। मैं स्वदेश बासिनी एक बडे घरकी लडकी को सुलतान के पास लेकर आऊंगा इस प्रतिज्ञा में बंधकर मैंने पूर्वोक्त सुख देख पाया है इस लिये मुझे अपने ऊपर बड़ी धिक्कार देनी पड़ी।

भोजन के उपरान्त तमाकू पीते पीते मैं चिन्ता करने लगा लेडी अलिभिया के निकट मैं अपरिचित नहीं हूं; बालकपन में मैं जब आक्सफोर्ड विद्यालय में पढ़ता था, उस समय अलिभिया का भाई मेरा सहपाठी था, इस लिये मैं कभी कभी उसके घर जाया करता था उन दिनों ही अलिभिया से मेरा परिचय हुआ था, मेरा वह मित्र अब जीवित नहीं है, एक दफे शिकार खेलने गया था उस में गोली लगजाने से वह मर गया। मित्र के मरजाने पर मैं अलिभिया के पितृ-भवन में कभी नहीं गया, इस परिवार से सम्बन्ध भी नहीं रक्खा। किन्तु अनुमान होता है कि अलिभिया इतने दिन पीछे भी मुझे पहचान लेगी।

उसी दिन सन्ध्या को फिर सुलतान के यहां मुझे तलब होना

पड़ा, मैं राह बतलाने के साथ सुलतान के महल में पहुंच एक बड़े कमरे में दाखिल हुआ; यह कमरा पूर्वी देशकी प्रथा से सजा हुआ था। देखा, सुलतान तकिया-वालिस के सहारे गद्दी पर बैठे हैं; एक बडे झाड़ में सैंकडों बत्ती जल रहीं हैं, इन बत्तियों की रोशनी से कमरा चमचमा रहा था।

मुझे राह बतलाने वाला दरवाजे पर से ही लौट गया, मैं अकेला सुलतान के सामने पहुंचा। इस बार मेरा बड़ा आदर किया। सुलतान ने सादर मुझे पुकार अपने पास बिठलाया; कहना तो ठीक नहीं, किन्तु मौका पडने से कहना ही पडता है, कि वजीर का भी सुलतान इतना आदर नहीं करते; आज मेरा सन्मान वजीर की अपेक्षा भी अधिक है।

सुलतान ने मुझ से कहा, "मैंने वजीर से कह दिया है, वह आज रातको तुम्हें पांच हजार रुपये दे आवेगा, तुम अपने देश में पहुंचकर मेरे आदमी द्वारा एक लाख रुपया पावोगे। मैं आशा करता हूं कि यह पुरस्कार तुम्हारे काम के लिये कम नहीं होगा।"

मैंने कहा, "जहांपनाह! आप ने मुझे जिस काम का भार दिया है, उसको पूरा करने में यह सबही रुपये खर्च पडजावेंगे; किन्तु मैं आप से रुपये पुरस्कार में लेने की प्रार्थना नहीं करता मैंने अपने प्राण बचाने के लिये जिस काम का भार लिया है उसे याद कर मैं अत्यन्त लाज्जित होताहूं। आप से रुपये पुरस्कार में लेकर मैं अपना पाप और बढ़ाना नहीं चाहता।"

सुलतान ने हँसकर कहा, मुझे वह सब बातें सुनने की इच्छा नहीं है। मैं उस सुन्दरी को यहां चाहता हूं, जितना रुपया खर्च पडे, उस की परवाह नहीं, इस लिये तुम्हें कोई पाप कर्म करना पडे वह मुझे सुनाना अनावश्यक है। तुम्हें फिर याद दिलाता हूं, बिश्वासघातकता करने से तुम्हारा निस्तार नहीं हैं; अब तुम जा सकते हो, महरबान खुदा तुम्हारी चेष्टा सफल करेंगे।"

सुलतान की ईश्वर भक्ति देख मुझे हँसी आयी; ऐसे भयंकर मनुष्य के पास जितना कम रहना हो उतना ही अच्छाहै यह विचार कर मैंने उठने के लिये इच्छा प्रकटकी। सुलतान की ताली बजाते ही एक सिपाही कमरेमें दाखिल हुआ, मैं अपने वासेको रवाने हुआ।

उसी रातको वजीर साहब ने मुझसे भेट की, अरब राज्य में

यही वजीर सबकी अपेक्षा योग्य कर्म्मचारी हैं एवम् सुलतान के अन्यन्त विश्वास पात्र हैं; इनको देखने से ही श्रद्धा भक्ति होती है। वजीर ने मुझे पांच हजार रुपये की गिन्नी दे कहा, "आप दयाकर यह गिन लीजिये।" किन्तु मैंने इस बात पर ध्यान न दे तोडा समेत गिन्नी अपने पास रखलीं।

वजीर ने कहा, "सुलतान ने आपको जतलाने के लिये कह दिया है, कि लण्डन पहुंचने पर एक लाख रुपये और मिलेंगे। जिसके पास से यह लाख रुपये मिलेंगे उसका नाम और ठिकाना लिख लाया हूं।" वजीर ने अपने अंगरखे की जेब में से एक कागज का टुकड़ा बाहर कर मुझे दिया। फिर मुझे सलामकर वजीर चले गये।

दूसरे दिन सवेरे मैं घोडे पर सवार हो समुद्र तीर वर्ती बन्दर की तरफ रवाने हुआ। सुलतान का एक सवार मेरा देह रक्षक नियुक्त हो साथ चलने लगा। उसी दिन रातको हम रास्तेकी चट्टी में पहुंचे। कुछ दिन पहले इसी चट्टी में सुलतान के सिपाहियों ने मुझे गिरफ्तार किया था, उस दिन औरइस दिन में कितना भेद हैं? आज सुलतान का सिपाही मेरे नौकर के समान मेरी प्रत्येक आज्ञा का पालन करता है। उस चट्टी में रात बिताकर दूसरे दिन सुबह फिर वहां से रवाने हुए एवम् सन्ध्या को समुद्रतीर वर्तीबन्दर पर पहुंचे। उस जगह दो दिन वासकर फिर मैं एक इङ्गलेण्ड जाने वाले जहाज में सवार हो स्वदेश को रवाने हुआ।

मेरी इस स्वदेश यात्रा का क्या फल होगा, यह अनुमान करना असम्भव है; अगाडी का हाल अन्धेरे में छिपा हुआ है।

आठवां परिच्छेद

लेडी अलिभिया।

नवम्बर महीने में, मैं इङ्गलेण्ड में पहुंचा। इस बार कैसी बुरी घडी में जहाज में पैर रक्खा था, सो नहीं जानता, किन्तु पग पग पर विपत्त पडी है; एकआदि बार जहाज डूबते २ रह गया, जहाज उपसागर में पहुंचा तब आंधी शिरू हुई; समुद्र-तरंग परवत के समान ऊंची उठने लगीं, उनके ऊपर हमारा सफेद छोटा जहाज एक छोटीसी चीज के समान दीखने लगा। प्रत्येकक्षण ऐसा मालूम पडने लगा मानो अभी डूबता है। यदि डूबजाता तो अच्छा ही था

क्योंकि अगाडी के दुख, कष्ट, अन्तरवेदना और निराशा सहनी नहीं पडतीं।

समुद्र में डूबकर मरना भाग्य में नहीं बदाथा, सुतराम् बच-गया; क्रमशः जहाज इङ्गलेण्ड के पास के एडिष्टोन के रोशनी वाले मीनार के पास पहुंचा, यही रोशनी वाला मीनार मानों इङ्गलेण्ड का पहरे वाला है। एक घंटे बाद प्लाई-माऊथ के बन्दर में जहाज ने लंगर डाला।

हवा का जोर उस समयभी बन्द नहीं हुआ था, बीच बीच में बूंदें भी गिर रहीं थीं।

मैं उस समय अपनी चिन्ता में मग्न था, जहाज से उतरूंगा क्या? कितना ही आकाश पाताल दीखने लगा, इस समय ठीक ठीक कहना कठिन है तब नम्वबर महीना शिरू हुआ था, अव्वल शीत का आरम्भ था, थोडा बरफ जमना शिरू ही हुआ था, उस समय की ठंडी हवा कपडों के भीतर होकर छाती में प्रवेश करती तो थी, किन्तु इतनी असह्य नहीं थी। जहाज के ऊपर बडी तेज हवा चलने लगी, जिस से मर्दोंकी टोपी और स्त्रियों के घांगरे उडने लगे, टोपी उडने से कुछ बिगाड नहीं है और बचाव भी है, किन्तु घांगरा उडने से स्त्रियों के सन्मानकी रक्षा करना कठिन है।

मेरे मन में तो ऐसी बात जमी हुई है कि लण्डन के समान और कोई शहर नहीं है, फ्रांस की राजधानी पैरिस खूब नामी शहर है, मार्किन की राजधानी न्यूयार्क में जीवन्त भाव और नूतनत्व देखा जाता है, किन्तु हमारी पाश्चिमी समुद्रतीरवर्ती राजधानी लण्डन शहरमें इतना माधुर्य्य है कि, किसी दूसरी राजधानी में जाने पर ऐसा अनुभव नहीं हो सकता। मैंने प्लाईमाऊथ से सिसिल नानक अपने एक मित्र को अपने लिये होटल में एक घर भाडे पर लेने के लिये तार किया था, मैं जहाज पर से उतर उस होटल की तरफ चला।

जहाज में मैंने खा पी लिया था, सुतराम् मुझे भूख नहीं थी, होटल में पहुंच कर कुछ भी नहीं चाहा; मैंने सोने के घर में जा कुछ समय तक विश्राम किया।

चार बजते न बजते ही सन्ध्या का अन्धेरा होने लगा, मैं चुप चाप उस घर में और न रह सका, विचार हुआ कि कुछ टहल

आऊं; मुझे कुछ चीजें खरीदनी जरूरी थीं। चार बजे उपरान्त मैं कपडे पहन घूमने के लिये बाहर निकला बहुत दिन बाद स्वदेश में आया हूं, लण्डन में कितनी ही जगह बदली हुई मालूम पडने लगीं। घूमते घूमते देखा तो सन्ध्या समय नदी किनारे बहुत आदमी इकट्ठेहुएहैं। मैं नदी किनारे से होता हुआ ट्राफालगार स्के-यर और हेमार्केट के भीतर होकर पिकाडिली में पहुंचा। मेरे समान घूमने वाले के लिये पृथ्वी अति छोटी मालूम होती है। सुतराम् लण्डन शहर कितना छोटा मालूम होगा यह कहना व्यर्थ है। घूमते घूमते मैं वालिंकटन हाऊस के पास पहुंच गया, ऐसे समय में मेरे एक पुराने मित्र से भेट हुई। बहुत दिन बाद इस मित्र से मुलाकात हुई; भारत वर्ष में मेरा इसके साथ परिचय हुआ था।

मुझे देख मेरे मित्र ने सविस्मय कहा, " आप निश्चय मि:गिवूसन हैं ? "

मैंने मित्र से हाथ मिला कहा, " लेसूवि तुम यहां हो। इस जगह तुम्हें देख सकूंगा यह बात एक बार भी मन में पैदा नहीं हुई थी, कितने दिन से इसशहर में हो ? "

मित्रने कहा, " एक महीना हुआ होगा, बोलिभिया से यहां आया हूं, तुम अब कहां जाते हो ? "

मैंने कहा, " एक चीज खरीदने जाताहूं, तुम्हें यदि कोई विशेष काम नहो तो मेरे साथ चलो। "

मित्र ने कहा, " राजी हूं किन्तु तुम्हारा काम पूरा होने पर हमारी क्लब में तुम्हें खाना पडेगा, भोजन आदि करलेने पर हम दोनों जने थीयेटर देखने चलेंगे, बहुत दिन बाद मिले हैं, तुम जो दस मिनिट में हाथ छुड़ाकर चले जावो यह कैसे भी नहीं होनेका "

मैंने कहा, " तुम्हारा प्रस्ताव मुझे मंजूर है, किन्तु मैं आज बहुत थका हूं, तिस पर कपड़ों की हालत देखो, इस अवस्था में आज थीयेटर देखने नहीं जा सकूंगा ? "

मित्रने कहा, " तुम कल जाने मरोगे या बचोगे यह कौन जानता है ! इस लिये थीयेटर देखना आज ही ठीक है; तुम मेरे समान जवान हो, मेरी पोशाक तुम्हारे शरीर में ठीक बैठेगी, और तुम यह कहते हो कि मैं थक गया हूं, यह कुछ बात नहीं है, कुछ समय तक थीयेटर देखने से ही थ . न दूर होगी "

देखा कि, मित्र कैसे भी नहीं छोडेगा; मैं भी पोशाक खरीदने बाहर हुआ हूं, जो दो एक खरीदनी चाहिये, इस ख्याल से एक पोशाक वाली दुकान में हम दोनों गये; इस दुकान में पहले भी मैं कई दफे आयाहूं इस दुकान का मेनेजर एक बूढ़ा है, शिर पर एक भी बाल नहीं है, शिर पके हुए बेल के समान है। मुझे दुकानमें घुसते देख उसी बूढेने हँसकर कहा, " मिःगिबूसन बहुत दिन से आप को देखा नहीं आज आप से मिलकर बड़ी खुशी हुई, किसी चीज की दरकार है क्या ?"

मैंने कहा, " मैं दूर देश में गया था, जहाज से उतरते ही पहले पहल तुम्हारी दुकान में आया हूं।"

मेनेजर ने कहा, "आपको देखने से ही यह मैं समझ गयाहूं।"

मैंने साविस्मय पूछा, आपने कैसे समझा ?"

मेनेजर ने कहा, " आपकी पोशाक छींटकी देखने ही से समझा, आप छींट की पोशाक पहनकर आये हैं। इस जगह दो वर्ष पहले इस छींट का चलन था, इस समय यह इतनी पुरानी होगयी है कि, गांव के लोग भी इस छींटको पसन्द नहीं करते, ऐसी छींट की पोशाक पहन कर आप बाहर निकले हैं ! कितनी बुरी बात है।"

पोशाक के दुकानदार ने मेरी छींट की पोशाक देख कितना बुरा माना । मैंने उसे समझाकर कहा, " कुछ डरकी बात नहीं है मैं आज ही यह छींट की पोशाक बदल डालूंगा । तुम एक अच्छी पोशाक मेरे लिये निकाल दो "

दुकान का काम पूरा होने पर एक गाड़ी भाड़े पर की, उसी गाड़ीमें अपने मित्र सहित उसके मकानकी तरफ चला; मित्रके मकान से लौटकर होटल में आया और यथा समय क्लब में पहुंचा । उस जगह सुन्दर भोजन का आयोजन था, रास्ते में घूमते घूमते भूख बहुत जोर कर आयी, कितने ही दिन बाद अच्छा भोजन मिला, उसे खाकर सन्तुष्ट हुआ।

भोजन करलेने के उपरान्त मित्रने कहा, मैंने सेराट जेम्स थीयेटर के दो टिकट खरीद रक्खे हैं, टिकट खराब तो नहीं जावेंगे ? थीयेटर तुम्हें कैसा लगता है ?"

मैंने कहा, " लड़कपन में थीयेटर खूब अच्छा लगता था, किन्तु बहुत दिन से थीयेटर देखा नहींहै, उस समय एक बड़ा विचित्र

घटना हुई थी, थीयेटर देखने वालों में एक स्त्री ने एक जवान पुरुष की छाती में छुरी मारी, फिर अपने गले में छुरी मारकर मर गयी स्त्री बड़ी सुन्दर थी।"

मित्रने कहा, "सौन्दर्य्य में इस तरह रक्तारक्ती खूब है, वह सब बातें जाने दीजिये, इस समय चलिये, गाडी करने की जरूरत नहीं है, बहुत दूर जाना नहीं पड़ेगा।"

पैदल चलकर कुछ मिनट में रंगमञ्च के दरवाजे पर पहुंचे। देखा, खूब भीड है; बडी मुश्किल से दो खाली कुर्सियां तलाश कर उन पर बैठे; जब तक पर्दा उठा नहीं था; कुछ मिनिट पीछे बाजा बन्द हुआ और पर्दा उठा। जिस तरफ "बक्स" था उस तरफ सब लोग बडी व्यग्रता सहित देख रहे थे, "बक्स" की तरफ देख ने वाले एक दम उठ खडे हुए।

मैंने मित्रसे पूछा, "बक्स" में क्या कोई राजपरिवार का आयेगा?"

मित्र ने कहा, "राजपरिवार का आसन दूसरी तरफ है; अनुमान होता है कि कोई मार्क्विस वा डयूक परिवार का कोई थीये-टर देखने आया है।

उन आयी हुई महिलाओं में से एक सुन्दरी को देख मैं निगाह नहीं हटासका, इतनी सुन्दर स्त्री जीवन भरमें और कोई नहीं देखी, मानो सुन्दर सफेद संगमरमर के पत्थर पर खुदी हुई अनिन्द्य सुन्दर देवी की मूर्ती है। उस सुन्दरी के पास एक प्रौढ़ पुरुष को देखा, यही सुन्दरी के बाप हैं।

मैंने मित्र से कहा, "यह युवती मुझ से अपरिचित नहीं है।"

मित्रने कहा, "परिचित होना ही सम्भव है; इङ्गलेण्ड में ऐसी सुन्दरी और नहीं है।"

मैंने कहा, "अच्छा बतलाओ यह कौन है?"

मित्रने कहा, "लेडी अलिभिया वेल हाम्टन्।"

हठात् मानो बिना बादल के मेरे माथे पर वज्रपात हुआ, शिर झन झन करने लगा, कानों में भन भन शब्द होने लगा, आखों के सामने से मानो उस रङ्गमञ्च की उज्वल रोशनी हटगयी; बड़े कष्ट से मैं कुर्सी के ऊपर बैठ रहने को समर्थ हुआ। सौभाग्य वशतः मित्र मेरा यह परिवर्तन भाव देख नहीं सके, वह उस समय एक टक तमाशे वालों की तरफ देख रहे थे।

मैंने अपनेको सम्हाल एक दफे बक्स की तरफ निगाह फेंकी; उस सुन्दरी को फिर देखा, उस रूप ज्योति को देखते देखते तृप्ति नहीं हुआ, उस तरफ देखने से आंखें थकती नहीं थीं बल्कि ठंडी होती थीं, उसके चेहरे पर कहीं भी कोई चिन्ह नहीं था, गले में हीरों का बहुमूल्य हार पड़ा था, किन्तु इस हारसे सुन्दरी का स्वाभाविक सौन्दर्य्य नहीं बढ़ताथा था, हजारों मनुष्यों की निगाह उस सुन्दरी के चेहरे पर रहने पर भी देखा कि, वह बिलकुल शान्त चित्त है, देखने वालों की तरफ वह एक बार भी निगाह नहीं करती।

इस अतुलनीय सुन्दरी महासम्भ्रान्त ड्यूक की प्राणोंसे प्यारी कन्याको हरण कर अरब राज्य में लेजाने के लिये मैं इङ्गलेण्ड में आया हूं। मुझे बड़ा खेद हुआ।

थीयेटर में क्या तमाशा होता है उस तरफ मेरा ध्यान नहीं था, मैं गहरी चिन्ता में डूबा हुआ था, विचार करने लगा कि, किस तरह यह भीषण काम पूरा होगा। मेरी चेष्टा का क्या फल होगा, यह कौन बतला सकता है; होसकता है कि इसी चेष्टा में डूबूं या अरब राज्य के सुलतान के हाथ से मरूं।

दृश्य पर दृश्य बदलने लगे, एक अंक पर और एक अंक का तमाशा शिरू हुआ, मैं मन्त्र मुग्ध के समान चुपचाप बैठा रहा। इतने में मेरा मित्र मुझे सिगरेट पिलाने के लिये बाहर लेगया। बाहर बरामदे में सिगरेट पीते पीते मेरे मित्र ने मुझसे कहा, "कैसा तमाशा देख रहे हो?"

मैंने कहा, अति चमत्कार; किन्तु लेडी अलिभिया को देख कर थीयेटर देखना भूल गयाहूं। बहुत दिन हुए लेडी अलिभिया से मेरा परिचय था, उस समय यह बालिका थी, इसका भाई मेरा सहपाठी था, उसके मरने के उपरान्त मैं ड्यूक के मकान पर कभी नहीं गया, और न फिर कभी अलिभिया कोही देख पाया, कहा अलिभिया के सम्बन्ध में कुछ खबरहै क्या?"

मित्रने कहा, "विषेश कुछ खबर नहीं है, पर इङ्गलेण्ड की सुन्दरी महलाओं में बड़ा मान है। इस देश में ऐसी सुन्दरी और नहीं है, ड्यूक के यही एक मात्र कन्या है, पिता के मरने पर अलिभिया अतुल ऐश्वर्य्य की, अधिकारिणी होगी। बिना तपस्या के बलके ऐसी सुन्दरी किसी को नहीं मिलसकती। सुन्दरी खूब अच्छी शिकार

खेलना जानती है, शिकार में ऐसा अव्यर्थ लक्ष बहुत पुरुषों का भी नहीं देखने में आता।"

मैंने पूछा, "सुन्दरी किस जगह शिकार खेलती है ?"

मित्रने कहा "लेष्टर शायर में वार्डिनहौल नामक इनका एक मकान है, शिकार खेलने की इच्छा होने पर लेडी अलिभिया उसी मकान पर जाती है, उस जगह से शिकार का मैदान दूर नहीं है।"

कुछ समय तक चुप रह कर मैंने फिर मित्र से पूछा, "लेडी अलिभिया के विवाह की बात सुनी है क्या ?"

मित्रने कहा, "नहीं, विशेष कुछ सुना नहीं, तब भी इतना सुना है कि पुरुष जाति पर उसकी श्रद्धा वा विश्वास नहीं है। इङ्गलण्ड के बहुत बड़े घरानों के सैंकड़ों लार्ड अलिभिया के पाणीग्रहण के लिये पागल हो रहे हैं। किन्तु उनमें से किसी को भी अलिभिया नहीं चाहती। उसकी क्या मनशा है वह मेरे समान तुच्छ जीव नहीं जान सकता। जानने से भी क्या मतलब, किन्तु बीच में एक बड़े मज़े की बात होगयी है; तुम जानते हो कि नहीं सो कह नहीं सकता, जुबली के समय अरब देश का सुलतान राज–दरबार में निमान्त्रित होकर आयाथा, वह लेडी अलिभिया को देख एक दम उन्मत्त होगया। वृद्ध ड्यूक से विवाह का भी प्रस्ताव किया था, इस बात से ड्यूक नाराज होगये, अन्तमें ड्यूक के डरसे सुलतान अपने देशको भाग गया। यह बात कहांतक सच है ठीक कह नहीं सकता। सुलतान के बेगम बहुत हैं, तो भी अङ्गेज जाति की लडकी पर इतनी इच्छा क्यों कौन कहसकता है ?"

इसके सम्बन्ध में, मैं जो जो बातें कहता, उन्हें सुनकर मित्र विस्मय स्तम्भित और डरसे कांप उठता, किन्तु वे बातें किसी के सामने कहने की नहीं थी यहांतक कि प्यारे मित्र के सामने भी कहने की नहीं। सुतराम् उस विषयको और नहीं छेड़ा; प्रायः आध डजन सिगरेट फूँककर फिर रंगमञ्च में प्रवेश किया। देखा, दृश्यपट बदल गया है एवम् नये एक अङ्क का खेल चल रहा है।

लेडी अलिभिया तब भी बक्स में बैठी थी, किन्तु ड्यूक को पास नहीं देखा; ड्यूक के एवज में एक दीर्घ–देह बलवान अङ्गेज सामरिक कर्म्मचारी को अलिभिया के साथ बातें करते देखा, अलि-

भिया का भावदेखकर मालूम हुआ, कि बातोंमें उसका मन नहीं है।

मैंने मित्र से पूछा, "यह आदमी कौन है?"

मित्र ने कहा, "उनको जानते नहीं हो क्या? वह लार्ड कार्बरो हैं, वह आज कल सेनापति हैं, घुड-दौड़ में उनका नाम विख्यात है; लार्ड कार्बरो के घोडे ने दो एक बड़ी २ बाजी जीती हैं।

खेल चल रहा था, सुतराम् और बातें नहीं हुई, कुछ देर बाद लार्ड कार्बरो चले गये, ड्यूक अपनी जगह आ बैठे। थीयेटर देखते देखते मैंने अपना मतलब विचार लिया। स्थिर किया, अलिभिया जिस जगह शिकार खेलने जाती है मैं भी उसी जगह जाऊंगा, तिस पीछे जैसा मौका हो वही होगा।

सच है, कि शिकार खेलने के लिये बडे खरच की दरकार है, अच्छे घोड़े खरीदने पडते हैं, शिकारी के कपड़े भी कीमती होते हैं, किन्तु सुलतान की कृपा से मुझे रुपये की कमी नहीं थी, ज़रूरत पडने पर सुलतान के पास से और भी अधिक रुपया मिलजावेगा, यह आशा थी।

मुझे चुप देख मित्रने कहा, "हठात् इतना गम्भीर क्यों हुए?"

मैंने कहा, लेडी अलिभिया के शिकार खेलने की बात सुनकर मुझे भी शिकार खेलने की इच्छा हुई है, बहुत दिनों से बन्दूक उठायी नहीं है, इस लिये एक दिन शिकार खेलना विचारा है?"

मित्र ने कहा, "यह तो बडी अच्छी बात है, चलो एक दिन दोनों जने शिकार खेलने जायेंगे, लेदरहेड में एक घोडे के व्यापारी से मेरी मुलाकात है; उसके अस्तबल से दो अच्छे घोडे खरीद लेने से ही काम चल जावेगा, यदि तुम्हारी सलाह हो तो सबेरे ही उसे टेलीग्राम करूं, कल सन्ध्या को उस जगह चलें।"

मित्र की बात मुझे नामन्जूर नहीं थी; सुतराम् उसी तरह की व्यवस्था की गयी। थीयेटर खतम होने पर मित्र से बिदा हो होटल में आया; किन्तु रात को मुझे नींद नहीं आयी, अलिभिया का सुन्दर मुंह बार बार मेरे ध्यान में आने लगा। उस सुन्दरी युवती से बातें करने के लिये मेरी इच्छा प्रबल हुई, किन्तु किस तरह यह इच्छा पूरी होगी, सो समझ नहीं सका।



नवां परिच्छेद

परिचय।

सुबह बिछोने से उठकर बाहर आया, कोहर से सब शहर ढका हुआ था, खूब जाड़ाथा, किन्तु शीत के डरसे चुपचाप घर में बैठ नहीं सका, बाहर सड़क पर आया एवम् अनेक रास्ते तय करता हुआ ड्यूक आफ वाम्बरोर के महल के दरवाजे पर पहुंचा। देखा, दास दासी उठकर घर साफ कर रही हैं, दरवाजे, खिड़की सब ही बन्द हैं, इस महल के किस कमरे में अलिभिया है, यह जानने की बड़ी इच्छा हुई, किन्तु यह इच्छा पूर्ण होनेका कोई उपाय नहीं देखा। उस जगह खडे रहने से कोई कुछ ख्याल करे इस लिये मैं धीरे धीरे चलने लगा, किन्तु उस मकानकी ही तरफ मेरी निगाह रही, इतने में ही दरवाजा खोल लेडी अलिभिया बाहर आयी, एवम् एक नौकरनी से दो चार बातें कह सुबह की हवा खोरी के लिये बाहर हुई।

मैंने देखा, लेडी अलिभिया से बातें करने का यही अच्छा समय है। सच बात है कि मैं ड्यूक परिवार का अपरिचित नहीं हूं, किन्तु बहुत दिनों से मेरा उनके साथ मिलना झुलना नहीं हुआ है, इस लिये मेरे बारे में अलिभिया को याद है कि नहीं, कह नहीं सकता; ऐसी अवस्था में हटात् रास्ते में अलिभिया से कैसे बात करूं यह स्थिर नहीं करसका। यदि मेरी बात से अलिभिया नाराज होजावे तो फिर अगाडी के लिये मिलने का कोई उपाय भी नहीं रहेगा, अथच यह सुयोग भी छोड़ा नहीं जाता, अलिभिया घूमनेके लिये बाहर हुई मैंने उसका पीछा न कर वह जिस जगह जाती थी मैं भी उधर ही चला एवम् कुछ देर बाद उसके सामने जा पहुंचा।

चलते चलते मानो मुलाकात होगयी है, इस भावसे मैंने टोपी उतार सलाम कर कहा, "मेरी गुस्ताखी माफ कीजियेगा। आप क्या लेडी अलिभिया वेल हमूटन नहीं है?"

मेरी बात सुन अलिभिया चलते चलते रुक गयी; बड़े गौर से मेरी तरफ देखा, फिर मीठी आवाज में कहा, "हां मेरा ही यह नाम है; मुझ से आप का क्या कोई काम है?"

मैंने कहा, "लेडी अलिभिया मुझे पहचान नहीं सकी हैं

ऐसा, ख्याल होता है, और पहचान भी कैसे सकती हैं ? बहुत दिनों से आप से मिला नहीं, मेरी सूरत में भी बहुत फरक पड़गया है, आपके भाई प्रेमभिक्ष मेरे परम मित्र थे ब्रामूलेके किले के पास एक बार आपके साथ मैं नाव में बैठ सैर करने गया था, इस समय भी ख्याल होता है, आप और मैं एक छोटी डोंगी में चढे थे, डोंगी डुबाने के लिये आपने बडी कोशिश की थी ? "

आलिभियाने बडे ताज्जुबके साथ पूछा, "आप क्या मिःगिवसन् हैं ?"

मैंने कहा, " आपने ठीक कहा है, रास्ते नें आपसे बातें की हैं इस लिये बुरा मत मानना।"

आलिभिया ने कहा, " मिःगिवसन् इतने दिन से आप कहां थे। बहुत दिनों से आप से मुलाकात नहीं हुई, आपके सम्बन्ध में कोई बात भी नहीं सुनी। "

मैंने कहा, " मैं देश देश घूमता फिरता था, चीन से पेरु तक के सब देश घूम चुका हूं, कल इङ्गलेण्ड में लौट कर आया हूं।"

आलिभियाने पूछा, " इस देश में अब कितने दिन ठहरोगे ?"

मैंने कहा, यह बात ठीक बतलाना बडा कठिन है, एक महीने में ही दूसरी जगह चला जासकता हूं, और एक वर्ष भी यहां रह सकता हूं, कुछ ठीक नहीं है। एक बार शिकार के लिये बाहर जाने का विचार किया है, किन्तु जैसा कोहर पड़ता है उस में शिकार के लिये बाहर जाने से क्या लाभ ? "

आलिभिया ने कहा, " हां यह बात बिलकुल ठीक है। "

मुझे और कुछ कहना नहीं था, रास्ते में इस तरह खड़े होकर बातें करना सभ्यताके विरुद्ध था इस लिये मैंने उसे सलाम कर बिदा ली। देखा, कुमारी आलिभिया को बचपन में जैसी देखा था वैसी अब नहीं है, बहुत बदल गयी है, यौवन की धीरता और गम्भीरताने बच्चपन की चञ्चलता और हास्यकौतुक की जगह अधिकार किया है।

बहुत घूमकर होटल में लौट कर आया एवम् भोजन के बाद तमाकू पीते पीते खबर का कागज पढ़ने लगा। इतने में मेरा मित्र लेसली एक बढ़िया काला कोट पहने रूसके ग्राण्ड ड्यूक की तरह मेरे सामने आखडा हुआ। उसकी ज़बानी सुना कि उसने घोडे बेचने वाले से तार द्वारा जबाव पाया है, चार अच्छे घोड़े हैं, उन में से दो हम ले सकते हैं।

कई घंटे पीछे हम दोनों मित्र औटालूंष्टेशन से रेल में सवार होकर लेदरहेड में पहुंचे। घोडे बेचने वाले मिःम्यानफीण्डने हमको अपना अस्तबल दिखलाया। हमने घोडों जांच की तिसपर बहुत कीमती एक जोडा घोडा खरीदा।

उसी दिन रातको मित्रके साथ एक होटल में भोजन करते करते सहसा अरब देश के उसी भीषण जेलखाने की बात का मुझे ख्याल हो आया मैं कांप उठा, सहसा मेरा मन दूसरी तरफ फिर गया, सुलतान के सामने मैं जिस प्रातिज्ञा में बंध चुका था, वह बात याद आते ही मेरी छाती धड़कने लगी। मेरी प्रकृति सहसा बड़ी गम्भीर होगयी।

मेरा भाव बदलते देख मित्रने ताज्जुब से पूछा, " हटात् तुम्हें क्या होगया ? तुम एक दम गम्भीर क्यों होगये ?

मैंने कहा, बातों ही बातों में मुझे मेरी पहली बात याद आगयी, उनकी याद आने से बड़ा दुख होता है, वह कितनी दुःसह हैं, यह बात ईश्वर जानता है। मुझे पृथ्वी के अनेक स्थानों में घूमते घूमते विपत्त में पडना पड़ा है, वही बात सुखके समय याद आजाने से, हटात् हृदय कांपने लगता है, अबभी वही हुआ है। "

मित्रने कहा, " नहीं, तुमने हटात् चुप होकर सब आमोद नष्ट किया है; अब दो एक ग्लास स्याम्पेन खाओ, उत्साह और प्रफुल्लता आजावेगी, संसार में दुख-विपत्ति बहुत हैं, तिस पर यदि दुःखमय पिछली बातें विचार कर काहिल होना पडे तो जीवन धारण करना कठिन होजावे।

मैंने कहा, " इन सब बातों के जिकर की दरकार नहीं है, आज जल्दी सोना चाहिये कल सुबह बहुत काम हैं। "

मित्र से बिदा ले एक सोने के कमरे में मैं गया, किन्तु नींद नहीं आयी, मैंने अपने सोने के कमरे का पिंजर खोल दिया, उस में से एक बडा उज्वल रोशनीदार मकान देखा, यह मकान ड्यूक आफ बाम्बरो का था।

दशवां परिच्छेद।

शिकार।

दूसरे दिन अपने मित्र लेसवी सहित शिकार के लिये घोडे

पर सवार हो बाहर हुआ। हम जिस बन में शिकार के लिये चले, वह नितान्त छोटा नहीं था, घोडे पर सवार हुए जब मैं रास्ता तय कर रहा था तब चारों तरफ देखने लगा, इस लिये कि कहीं लेडी आलिभिया को देख पाऊं क्यों कि वह भी शिकार खेलने आवेगी, यह खबर पहले मिलचुकी थी। कुछ देर बाद लार्ड कार्बेरो के साथ घोडे पर सवार अलिभिया दिखलायी दी; उनके साथ एक दल शिकारी कुत्ते थे।

मैं लेस्ली को पीछे छोड़ अलिभिया की तरफ घोडा बढ़ाने लगा। उस दिन रातको थीयेटर में उसे देख मुग्ध हुआ था, किन्तु आज घोडे पर सवार शिकारी वेश में सजी हुई देख और भी अधिक मुग्ध हुआ। वह घोडे पर सवार होने में इतनी होशियार थी कि बिना देखे उसका कोई विश्वास नहीं करसकता। मैंने उसके पास पहुंच कर सलाम किया।

लेडी अलिभियाने सलाम का जवाब सलाम से देकर कहा, "मिःगिब्सन्, आप इस जगह शिकार खेलने आवेंगे यह मुझे ख्याल भी नहीं था।"

मैंने कहा, "इस तरफ शिकार खेलने की गरज से मैं और मेरे मित्रने वार्लीरोड पर रिट्रीड नामक मकान भाड़े पर लिया है।"

अलिभिया ने कहा, "अच्छा! कर्नेल विभार्लि पहले उस मकान में रहते थे, वे मेरे पिताके परम मित्र थे।"

मैंने पूछा, "आपके पिता ड्यूक अच्छी तरह हैं न?"

अलिभिया ने कहा, "हां वे अच्छी तरह हैं, वे भी शिकार खेलने आवेगें, शीघ्र ही वे आप से मिलेंगे।"

मैंने पूछा, "इस जगह शिकार मिलने की आशा है क्या?"

अलिभिया ने हँसकर कहा "मैं तो जब आती हूं तब ही कुछ न कुछ जरूर पाती हूं। मिःगिब्सन् आपका घोडा बहुत अच्छाहै।"

मैंने कहा, "मेरे घोड़े का चेहरा खराब नहीं है। किन्तु मालूम होता है कि आपका घोडा अधिक कष्ट सहनकर सकता है और घुडदौड में भी बाजी जीत सकता है।"

आलिभिया मेरी बात सुनकर बडी प्रसन्न हुई, उसने प्यार से अपने घोड़े के ऊपर हाथ फेरते कहा, "मैं अपने इस घोडे को खूब चाहती हूं मेरे जन्म दिन के उपलक्ष में मेरे पिता ने यह घोडा मुझे

उपहार दिया था, ऐसा घोडा हमारे अस्तबल में और नहीं है; देखो वे पिता आरहे हैं।

मैंने फौरन घोडे का मुंह फिराया, देखा, ड्यूक घोडे पर सवार मेरे पास आ रहे हैं । उन ने मेरी तरफ एक दफे देख अपनी लड़की से कहा, " अलिभिया इस जगह और देर करने से काम नहीं चलेगा । इसी समय शिकार की खोज में दौड़ना पडेगा।"

अलिभिया ने कहा, "चलिये मैं तयार हूं । बाबा आपने मि:गिब्सन् को क्या नहीं पहचाना ? पहले यह कितनी ही दफे हमारे मकान पर गये थे; बिचारे ग्रेनभिल के साथ इनकी बडी मित्रता थी, दोनों कालेज में एक साथ पढ़ते थे।"

वृद्ध डयूक ने मेरी तरफ देख कहा, " त्रुटि माफ कीजियेगा मैं पहले आपको पहचान नहीं सका, बहुत दिनों से आप को देखा नहीं था।"

मैंने कहा, "मैं बहुत दिन से देश छोड़ बाहर दूर देश में था, एक सप्ताह से इङ्गलेंड में हूं।"

ड्यूक ने कहा, " आपको हम इस जगह देख कर बडे प्रसन्न हुए। आशा करता हूं इस जगह मन के माफिक शिकार मिलेगी । मि:गिब्सन् आप जब इस जगह आगये हैं, तब आपको अपने यहां के मकान में भोज देने की इच्छा करता हूं, सोमबार की रातको हमारे यहां के मकान में भोजन करने का आपको निमन्त्रण है; अलिभिया की मा आपको देखकर निश्चय सुखी होगी।"

मैंने कहा, आपकी दया से मुझे बडा आनन्द हुआ। किन्तु मैं इस जगह अकेला नहीं आया हूं मेरे एक मित्र और साथ हैं।"

ड्यूक ने पूछा, "मैं क्या उन्हें जानता हूं?"

मैंने कहा, " वह सेनापति मि:लेस्ली के लडके मि: लेस्ली हैं।"

ड्यूक ने कहा, "सेनापति मि:लेस्ली से मेरी परम मित्रता थी, आप उनको भी संग लेकर आइयेगा। सोमबार की रातको आठ बजे की याद रहेगी तो?"

मैं सन्मान पूर्वक ड्यूक और अलिभिया को सलाम कर

और उनसे बिदा ले लेस्ली के पास हाजिर हुआ। लेस्ली कुछ ही दूर पर थे।

लेस्ली ने मुझे देख हंसकर पूछा, तुम इस तरह कैसे हो? ड्यूक परिवार के साथ तुम्हारी इतनी घनिष्ठता है, उस दिन थीयेटर देखने गये थे, तब तो तुमने नहीं बतलायी।"

मैंने कहा, "इस परिवार के साथ पहले मेरी खूब घनिष्टता थी, बीच में बहुत दिनों से मिलना नहीं हुआ था, अबही पुरानी मुलाकात निकाली है। अलिभिया की बावत जब तुम से अनेक बातें पूछी थीं, तब वह मुझ से एक तरह की अपरिचित हीथी"

हमारी बातें पूरी होते न होते अलिभिया के कुत्ते शिकार की तलाश में छूटे, लेडी अलिभिया और उसके पिता दोनों ने भी अपने घोडे सरपट दौडाये। हम दूसरी तरफ घोडे लेगये मेरे घोडे की उमर पांच वर्ष से आधिक न होने के कारण वह बहुत तेज था; मुझे पीठ पर सवार किये हुए वह दौडता दौडता एक जगह पहुंचा। उस जगह देखा कि प्रायः तीस गज की दूरी पर ड्यूक और लेडी अलिभिया घोडे पर सवार दौड चले आ रहे हैं, वे सहज में ही नदी के पार हुए, मैंने भी उसी तरह नदी के पार होने की चेष्टा की किन्तु सहसा एक पत्थर के टुकडे की ठोकर लगने से मेरे घोडेके पैर में मोच आगयी, साथ ही मैं भी जल में गिर पडा।

मेरे बहुत चोट न लगने पर भी मेरे कपड़े पानी और कीचड में सनगये; मैं फौरन उठकर फिर घोड़े की पीठ पर सवार होगया एवम् दस मिनट में ही रेटन के बनमें पहुंच गया। मेरे पहुंचने के बहुत पहले ही लेडी आलिभिया वहां पहुंच गयी थी।

अलिभिया ने मेरी ऐसी हालत देख सदयभावसे पूछा, "आप की ऐसी बुरी हालत क्यों देखती हूं?"

मैंने कहा, "नदी में गिर पडा था" लेडी अलिभिया ने पूछा, "चोट तो नहीं लगी?"

मैंने कहा, "न केवल भीग गया हूं।"

उस जगह अधिक बातें नहीं हुई, लेस्ली और शिकार की तलाश में घूमने लगा बहुत चेष्टा करने पर कुछ शिकार मिली, किन्तु आश्चर्य्य की बात यह है कि लेस्ली को कहीं न पाया।

शिकार खेलकर ड्यूक और आलिभिया अपने मकान पर गये, मैं बहुत देर लेस्वी को तलाश करता रहा किन्तु उसके न मिलने के कारण बासे पर लौट आया।

बासे पर आकर देखा, लेस्वी अभी तक लौटकर नहीं आया है। उसे न पाने के कारण मुझे बड़ी चिन्ता हुई; तलाश करने पर उसे न पाकर मुझे डर हुआ, किन्तु कुछ ही देर बाद लेस्वी को लौटते देखा; उसकी अवस्था देखकर मेरे ताज्जुब की सी मान रही, कीच में उसके पैर से लेकर शिर तक सना हुआ था उसकी टोपी टूट गयी थी, मुंह पर जगह जगह चोट के निशान थे एवम् एक पैर में जूता नहीं था।

लेस्वी से पूछने पर मालूम हुआ कि, वह कई कीच में सने हुए सूहरों का शिकार करने गया। सूहर एक झाडी वाले कीचड़ के कुंड में छिपे हुए थे, लेस्वी के वहां पहुंचते ही सूहर भाग गये और घोडे के बिचकने से वह गिरपडा इसी से यह दशा हुईहै।

उस दिन रातको दोनों मित्रों ने उत्तम भोजन किया, दूसरे दिन बर्षा के कारण शिकार के लिये बाहर नहीं गये। लेस्वी अत्यन्त चंचल था वह बासे में चुपचाप बैठ न सका, मुझे बासे पर छोड नगर में घूमने के लिये चला गया।

मैं बासे में अकेला बैठा हुआ क्या करूंगा स्थिर न करसका; घोडे वा गाडी पर सवार होकर बाहर जाऊं यह सम्भव नहीं था, क्यों कि रास्ते में खूब बरफ जमी हुई थी, दुःखका विषय है कि उस दिन भोजन भी ठीक नहीं हुआ। सन्ध्या समय मेरे घोड़े के सहीस ने आकर कहा, " घोडे के पैर में मोच चले जाने के कारण वह उस पैर को हिला डुला नहीं सकता है।"

" आजकल दिन बडे खराब हैं " इतना कह मैं घोडे का पैर देखने को चला; देखा कि चोट गहरी नहीं लगी है, उसके पैर में बन्धेज बांध औषध दी।

घर लौट कर चा पी दिया जला एक पुस्तक पढ़ने लगा; इतने में नौकर ने आकर कहा, दो विदेशी आदमी आप से मिलने के लिये वरामदे में खडे हैं।

इतनी बात सुनते ही मेरे मन में ऐसा ख्याल हुआ कि वे सुलतान के तो आदमी नहीं है? जो हो, सन्देह दूर करने के लिये नौकर से उन्हें मेरे सामने हाजिर करने को कहा।

दो मिनट बाद दो मुसलमान युवक अपने देशी लिबास में मेरे सामने आ आदर पूर्वक सलाम कर खड़े हो गये, उन्हें देखते ही सुलतान की बात याद आयी, उस भीषण प्रतिज्ञा की बात यादकर मैं कांप उठा।

मेरा नौकर कमरे से बाहर चला गया, मैंने पूछा, "तुम क्या चाहते हो ?"

दोनों युवकों में से जिसकी कुछ उमर ज्यादाथी, उसने अपनी रंगीन डाढी पर हाथ फैरते हुए कहा, "हम कुछ भी नहीं चाहते जिनने हमको आपके पास भेजा है उनकी आज्ञाकी आपको याद दिलाने आये हैं।"

मैंने कुछ गुस्से से कहा, तुम क्या कहते हो खुलकर कहो तुम्हारा मतलब क्या है मैं ठीक नहीं समझ सका।"

जवाब मिला, "हमारे मालिक ने आपको जिस काम का भार सौंपा है, वह क्या आपको याद नहीं है ?"

मैंने पूछा, "तुम क्या अरब राज्यके सुलतानके गुप्तचर हो ?"

मुसलमान ने सलाम कर कहा, आपका अनुमान ठीक है, उनकी आज्ञा से ही यहां आये हैं।

मैंने उत्तर दिया, "उनने जिस काम का भार मुझे दिया है उसको पूरा करने में बड़ी देर लगेगी, किन्तु यदि तुम जब तब जहां तहां मुझे छेड़ोगे एवम् लोग तुम दो विदेशी आदमियों को एकान्त में मेरे साथ बातें करते देखेंगे, तो उस काम का पूरा होना कठिन होजावेगा। मेरे सम्बन्ध में अनेक प्रकार बुरी बातें सुनायी पड़ने लगगी, तब मुझे इस काम का भार छोड़ कर अलग होना पड़ेगा।"

पहले बोलनेवाले मुसलमानने सलामकर फिर कहा, "महाशय हमारे ऊपर आप नाराज़ मत हूजिये, हम अपने मालिक का हुक्म पालन करनेके लिये मजबूर हैं उनकी आज्ञा से ही हमने आपका पीछा किया है एवम् वे जो आज्ञा करेंगे, वह चाहे जितनी कठिन क्यों न हो उसे हम पालन करेंगे ही, आपका क्रोध देखकर हमें डरने से काम नहीं चलेगा।"

इन दोनों मुसलमानों की बातें सुन मुझे बड़ी चिन्ता हुई; यद्यपि वे लोग आदर पूर्वक बातें करते थे तथापि उनकी बातों के भाव से मालूम पड़ा कि सुलतान के इशारे से वे मेरे प्राण

लेने में भी तनक संकोच नहीं करेंगे । सुलतान के जेलखाने का भीषण दृश्य मेरी निगाह के सामने घूमने लगा; मैं हजारों कोश दूरवर्ती इङ्गलेण्ड में रहता हूं, अब मुझे किसी प्रकार के सुख की कमी नहीं है, चारों तरफ आनन्द है, विलास और उपभोग के सब सामान मौजूद हैं, प्रथम श्रेणी के होटल में भोजन करता हूं ड्यूक के समान बडे घर के लोगों से मेरी मित्रता है, स्वाधीन भाव से जहां इच्छा हो वहां जा सकता हूं; तब भी यह दोनों मुसलमान सुलतान की आज्ञा से जब चाहें तब मुझे जान से मारडाल सकते हैं इस में विलकुल सन्देह नहीं। ऐसी अवस्था में मैं क्या कर सकता हूं ? सुलतान की आज्ञा पालन करने में समय लगेगा; किन्तु वह बहुत ही उतावले होगये हैं, इससे मैं सुयोग और सुविधा के प्रति दृष्टि रख कुछ देर लगाऊंगा तो वह नाराज होजावेंगे। इसी तरह की कितनी ही बातें विचार कर मैंने उन दोनों मुसलमानों से कठिन शब्द नहीं कहे; किन्तु वे जहां तहां जब तब मेरे पीछे छाया के समान लगे हुए हैं यह मुझे बडा असह्य हुआ।

मैंने उन से पूछा, " इस जगह तुम कहां रहते हो ?"

उन में से बडे ने फिर सलाम कर कहा, " हम लोग गांव में रहते हैं हम गरीब आदमी हैं शहर में रहने लायक खर्च हमारे पास कहां से आवेगा ? गांव में एक छोटी कोठरी भाडे पर ले उसमें बडे कष्ट से दिन काटते हैं।"

यह बात सच मालूम नहीं हुई, हो सकता है कि यह लोग गरीब हों, किन्तु सुलतान जिस काम के लिये लाखों रुपये खर्च करने को तयार है, उसी काम का भार लेकर जो छोटीसी कोठरी में कष्ट से रहें यह अनुमान करना कठिन है।

जो हो, इस सम्बन्ध में और कोई बात न कह, मैंने उन से पूछा, " कितने दिन से तुम मेरे ऊपर नज़र रख रहे हो "

मुसलमान ने कहा, " हुजूर ऐसी बात न कहिये, आपके ऊपर नजर क्यों रखेंगे ? पर हां हमारे प्रभु सुलतान के किसी काम का भार लेकर आये हैं, काम पूरा होने से पहले आप और किसी काम में न लगजावें, जिस से हमारे मालिक का काम जल्दी पूरा हो, इसी मतलब से आप के प्रति दृष्टि रखते हैं।"

समझा, मेरे मंगल के लिये वे इतने दिन से पहरा दे रहे हैं,

इतने दिन से रास्ते, जंगल में इन ने मेरी छाती में छुरा नहीं मारा यही आश्चर्य्य है ।"

कुछ समय के उपरान्त मैंने पूछा, "तुमको और क्या कहना है ? यदि तुम्हारा कहना खतम हो चुका हो तो तुम यहां से जा सकते हो । मैं आज बहुत थक गया हूं, मुझे सोने दो ।"

मेरी बात सुनते ही मुसलमान दोनों सलाम कर चले गये । जाते समय कहगये, "सुलतान की आज्ञा है कि काम जल्दी होना चाहिये । यह बात आपको याद न रहेगी तो हमको फिर तकलीफ देनी पडेगी; आप क्या करते हैं वा कुछ नहीं करते हैं यह हम से छिपा नहीं है ।"

मुसलमानों के चले जाने के उपरान्त मैं कुर्सी पर से उठ वारामदे में आ खडा हुआ । उस समय मेरे मनकी अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी । वारामदे में घूमते २ सोचने लगा, अब क्या करूं ? अपने प्राण बचाने के लिये कोई बुरा काम करने में मुझे संकोच नहीं था, किन्तु इतना होने पर भी इङ्गलेण्ड की सर्व श्रेष्ठ सुन्दरी और मेरे बच्चपन के मित्रकी बहिन को प्राण के एवज में एक नरपिशाच के हाथ में पटकना मनमें उचित नहीं समझा, ऐसी कल्पना भी मेरे लिये असह्य है ।

कुछ भी स्थिर न कर मैं कमरे में रखे हुए अग्नि कुण्ड के पास बैठ गया; निदारुण आत्म ग्लानी से मेरा हृदय दग्ध होने लगा ।

ग्यारहवां परिच्छेद ।

निमन्त्रण रक्षा ।

क्रमशः सोमवार का दिन आया । उस दिन सन्ध्या के पीछे ड्यूक के घर हमारा नौता था, मैं और लेस्वी दोनों खूब अच्छे कपडे पहन, ड्यूक के गांव वाले घरकी तरफ रवाने हुए । उस समय सन्ध्या होगयी थी; अन्धेरे से सब धरती ढकी हुई थी, एक हाथ दूर की चीज भी दिखलायी नहीं पडती थी, किन्तु मित्र लेस्वी उसी अन्धेरी में तेजी से टमटम चलाने लगा, हम कुछ मिनट बाद ही ड्यूक के मकान पर पहुंच गये ।

इङ्गलेण्ड के धनाढ्य मनुष्यों के गांवों में असंख्य मकान हैं, किन्तु एक छोटे पर्वत के पास बडे मैदान में यही एक मकानहै

इसके पास एक छोटी नदी है, पास और दूर खूब बड़े २ पेड़ हैं, इस निबिड जंगल की शोभा इस मकान से मानो सतगुनी होगयीहै।

यदि मैं सौ वर्ष जीवित रहूं तो इंगलेण्ड की इस नीति को कभी नहीं भूलूंगा। जिस के यहां आज मैं निमन्त्रण-रक्षा करने आया हूं और कभी भी ऐसी लज्जा की बात देखी नहीं; आज जिस ने मुझे अपना मित्र समझकर परम आदर से निमन्त्रण दिया है, मैंने उसकी प्राणों से प्यारी लड़की को चोरों के समान हरण करने का भार लिया है, वृद्ध ड्यूक का जीवन दुःखी करने को तयार हूं। यह सब बातें याद कर मेरा हृदय सैकड़ों तीरों के समान विदीर्ण होने लगा; मेरे मन में हुआ कि सुलतान के उस भीषण कारागार की अपेक्षा मरना अच्छा है। अनेक चिन्तायें मेरे हृदय में उठने लगीं, ख्याल हुआ कि मरना ही है एक न एक दिन जरूर मरूंगा फिर क्यों ऐसा खोटा कामकरके मरूं? भाग्य में जो बदा है वह होगा कुछ परवाह नहीं। यह भयंकर बुरा काम करके मैं अपना जीवन कलंकित नहीं करूंगा। सदाके लिये अपने नाम में बट्टा नहीं लगाऊंगा।

ड्यूक के दरवाजे पर टम टम से उतरते ही एक नौकरआया। वह हमको बड़े सन्मान पूर्वक एक कमरे में लेगया; उस कमरे में ड्यूक-पत्नी, और आलिभिया हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे, बहुत दिनों बाद ड्यूक-पत्नी से भेट हुई, देखा उसकी जवानी की सुन्दरता अब नहीं है, लडके की मौत के बहुत शोक के कारण उसे कुसमय पर बुढ़ापा आया है, उसके शिरके कुल बाल पक गये हैं। ड्यूक पत्नी ने आदर पूर्वक हमें बिठलाया। सस्नेह मेरी कुशल पूछी; उस का लडका मेरा परम मित्र था, बातों ही बातों में उसने अपने मरे लडके का जिकर छेड़ दिया। उसकी आखों में आंसू भर आये; उस के मुंह की तरफ देखने से मुझे दुःख होने लगा।

कई मिनट पीछे ड्यूक उसी कमरे में आये; एक जन प्रजा किसी जरूरी काम के लिये उनसे मिलने आया था इस लिये वह हमारे आते ही नहीं मिले इतना कह दुःख प्रकट किया किया। प्रायः पन्द्रह मिनिट तक अनेक बातों के बाद भोजन के लिये हम चले। ड्यूक-पत्नी और मैं आगे आगे चले, हमारे पीछे लेसवी और आलिभिया, सब के पीछे ड्यूक एवम् उनके साथ एक लेडी और थी, इस लेडी को मैंने पहले कभी नहीं देखा।

हम जिस कमरे में भोजन करने बैठे थे वह बहुत बडा था। उस कमरे में बहुत लोग एक साथ भोजन करसकते हैं। कमरा खूब सजा हुआ था।

भोजन का प्रबन्ध इतना उत्तम था कि कहने में नहीं आता। मैंने तृप्ति सहित भोजन किया, साथ ही साथ गप्प और हंसी की बातें होती जाती थी। भोजन करलेने पर हम फिर उसी कमरे में चले गये। लेडी अलिभिया गाने लगी, उसका गला जितना सुरीला, वैसा ही गाना भी सुन्दर था। हम सब मुग्ध होगये किन्तु मेरी मनकी अशान्ति दूर नहीं हुई, दो गीत गाकर अलिभिया प्यानो छोड अलग होगयी। और हंस कर मुझ से कहा, "मिःगिब्सन् आप एक गीत गाइये; आप गा नहीं सकते हैं ऐसा कहने से काम नहीं चलेगा, मैं जानती हूं आप खूब अच्छा गाते हैं ग्रेनाभिल सदा आप के गाने की तारीफ किया करता था, बहुत दिनों से आपका गाना सुना नहीं है ?"

क्या करूं, लेडी की बात टाल नहीं सकता, विशेषतः गाने में मेरा नाम विख्यात भी था, मैंने एक विख्यात गीत गाना शिरू किया। कैसे गाया, सो बतला नहीं सकता। अनुमान होता है कि अच्छा नहीं गा सका, क्योंकि मेरा मन दूसरी तरफ लगा हुआथा। सब बातों का सार यह है कि मन में ऐसा ख्याल आया कि बासे पर पहुंचकर अपने गोली मार मरजाऊं अब इतनी कपटता सही नहीं जाती। यही बातें मेरे मनकी हैं यदि इन्हें सुनकर कोई घृणा करे तो मुझे दुःख नहीं होगा, मैं भले आदमियों की घृणा का पात्र के सिवाय और क्या होसकता हूं ?

क्रमशः हमारे चलने का समय हुआ। टम टम हाज़िर हुइ ड्यूक परिवार से विदा ग्रहण कर हम टमटम में सवार हुए। रास्ते में चलते चलते मित्रने मुझ से पूछा, "आज बीच बीच में तुम्हारा ध्यान दूसरी तरफ क्यों मालूम पड़ता है ? दुश्चिन्ता की कोई बात होगयी है क्या ?"

मैंने कुछ हँसकर कहा, "मनुष्य को दुश्चिन्ता किस समय नहीं होती ? मेरे मनकी तकलीफ किसी के सामने प्रकट करने की नहीं है।"

लेस्ली ने कहा, "मैं तुम्हारा मित्र हूं क्या मुझ से भी छिपा कर रक्खोगे ?"

मैंने दुःख प्रकट करते हुए कहा, "तुम्हारे समान परम मित्र के सामने भी प्रकट करने की बात नहीं है।"

कुछ समय तक चुपरह लेसूधी ने फिर पूछा, "उस विषय में मैं तुम को कुछ साहयता देसकता हूं क्या?"

मैंने कहा, "करसकते हो, किन्तु उस काम को करोगे?"

मित्रने कहा, "कहो क्या करूं।"

मैंने कहा, "गोली मेरे मार सकते हो?"

मेरी बात सुन मित्रने तेज निगाह से मेरी तरफ देखा, और ताज्जुब से कहा, "तुम पागल होगये हो क्या, इस जगह जब तुम आये थे तब बड़े ही हँस मुख थे, हटात् तुम्हारा ऐसा भाव क्यों बदल गया, हटात् लेडी अलिभिया के प्रेम में तो नहीं फँस गये?"

मैंने लम्बी सांस ले कहा, "जिसके हृदय में रात दिन आग जलती है उस के हृदय में कहीं प्रेम पैदा होसकता है? आपने कहा, कि हटात् तुम्हारा ध्यान दूसरी तरफ क्यों होगया यह बात सच नहीं है, मैं वही निदारुण मानासिक यन्त्रणा बहुत दिन से सहन कर रहा हूं, सैंकडों उपाय से अपने मनको प्रसन्न करने की चेष्टा करताहूं, किन्तु मन प्रसन्न नहीं रहता। जो हो, इन सब बातों की आलोचना करने में भी कष्ट होता है, चलो इस समय शीघ्र बासे पर पहुंचे।"

मेरी बात पूरी होने से पहले ही मित्रने घोड़े की पीठ पर चाबुक मारा, घोड़ा मानो हवा के वेग में टम टम को ले उडा, कुछ ही समय में बासे पर पहुंच कपडे बदलकर मैं तमाकू पीने बैठा एवम् चिन्ता को दूर करने के लिये एक उपन्यास पढ़ना शिरू किया किन्तु गुरुतर चिन्ता में जिसका मन डूबा हुआ है, उसे पढ़ना अच्छा नहीं लगता। मैंने पुस्तक रख घर में रहना शिरु किया। क्रमशः रात के तीन बज गये, किन्तु मुझे नींद नहीं आयी। उसी समय लेस्वी एक बार उठा था उसने मेरे कमरे में आ इतने रात गये अस्थिर भाव से मुझे रहते देख पूछा, "अभी तक तुम नहीं सोये तुम को क्या होगया है?"

मैंने कहा, "नींद नहीं आती है, क्या करूं, चुपचाप बिछोने पर पडा रहना दुखदायी है, इस लिये ही इस तरह टहल रहा हूं।"

मित्रने कहा, "तुम्हारे ख्याल का अन्त नहीं है, रात खतम

होने को आचुकी है, सब रात इस तरह जागने से बीमार होजावोगे, बिछोने पर लेटकर आंखें मींच चुप रहो नींद जल्दी आजावेगी।"

मैंने कहा, तुम दुखी मत हो, मैं नींद बुलाने के लिये तपस्या कर रहा हूं।"

"तो तपस्या करो" इतना कह मित्र सोने को चला गया, मैं प्रायः रात के चार बजे थके शरीर से बिछोने पर जालेटा एवम् कुछ ही समय में नींद आगयी।

इस घटना के उपरान्त एक महीने में ड्यूक परिवार से मेरी यथेष्ट घनिष्टता होगयी। उनके साथ मेरा जितना मेल बढता जाता था, उतनी ही मेरे गुप्त संकल्प सिद्धि में कठिनता आती जाती थी। सुलतान के गुप्तचर मेरा पीछा छाया के समान कर रहे हैं इस में रत्तीभर सन्देह नहीं था; किन्तु वे कहां रहते हैं, खूब कोशिश करने पर भी पता नहीं लगा सका; इसी तरह कुछ दिन और भी कट गये।

बारहवां परिच्छेद

गुप्तचर।

एक दिन मैं लेस्ली के साथ शिकार खेलने गया था, शिकार खेल चुकने पर लेस्ली किसी काम के लिये मेरा साथ छोड़ चला गया। मैं अकेला शिकार के मैदान से बासे की तरफ चला, बासे में पहुंचते पहुंचते सन्ध्या होगयी, मैं घोडे को धीरे धीरे चलाने लगा।

मेरे बासे से प्रायः तीन मील दूर पर एक जंगल था, इसी जंगल में होकर मुझे आना था, इस जंगल में सन्ध्या को कोई नहीं जाता था, सर्वसाधारण को उस जगह लुटेरों का डर था; कितने आदमियों का विश्वास था कि वहां भूतों का अड्डा है। बहुत दिन पहले एक स्त्री अपने भाई के हाथ से वहां मारी गयी थी, सुनाजाता है कि उस स्त्री की प्रेतात्मा रातको उस जगह आदमियों को डराती है; इन सब कारणों से ही लोग रात में वहां नहीं जाते थे। मैं यह सब बातें जानता था, किन्तु इनके प्रति मेरा विश्वास नहीं था।

सब दिन के परिश्रम से थक जाने के कारण मैं धीरे धीरे घोडा चला रहा था; ऐसे समय में उस जंगल में से एक लम्बा आदमी बाहर निकल हाथ के इशारे से मुझे घोडा रोकने के लिये कहने लगा।

मैं एक दम डरपोक मनुष्य नहीं हूं, किन्तु उस सन्ध्या के समय उस निर्जन जंगल में सहसा आदमी को देख मुझे कुछ डर मालूम हुआ। जब रात होगयी थी, चन्द्रमा की चांदनी बादलों में से निकलकर जंगल में फैलरही थी, उस चांदनी में मैं पहले उस आदमी को पहचान नहीं सका; किन्तु वह मेरे सामने आकर खड़ा होगया तब मैंने उसे पहचान लिया, यह वही ऊपर कहा हुआ गुप्तचर था।

मैंने नाराज हो कहा, "तुम मेरे पीछे क्यों आरहे हो?"

गुप्तचर ने सलाम कर कहा, "हुजूर से दो एक बातें करनी हैं।"

मैंने कहा, "बातें करने के लिये तुमने बडी विकट जगह निकाली है, अब क्या कहते हो जल्दी कहो।"

गुप्तचर ने कहा, "मेरे प्रभु सुलतान साहब के पास से आज खबर आयी है, अल्ला उनकी बडी उमर करे।"

मैंने पूछा, "मेरे सम्बन्ध में उनने कुछ लिखा है क्या? सो कहो?"

गुप्तचर ने कहा, "उनने हमको जतलाया है कि, आप जिस तरह काम कर रहे हैं वह सन्तोष जनक नहीं है; सुलतान साहब विलम्ब देख कर अत्यन्त अधीर हो गये हैं आप से कहने को हमें लिखा है कि, यदि आप काम जल्दी न कर सकेंगे तो आपका मंगल नहीं होगा।"

मैंने दुखी हो कहा, "कैसी झकमारी में पडा हूं, क्यों ऐसे जघन्य काम का भार लिया था?"

बात मैंने उस गुप्तचर को लक्ष्यकर कही थी, किन्तु उस के कान तक बात नहीं पहुंची, उसने कहा, "हुजूर व्यर्थ दुखी होते हैं, आप यदि इस काम का भार न लेते तो क्या अपने देश में आकर इस तरह घूम सकते थे? सुलतान के कारागार में ही बडी यन्त्रणा से आपका जीवन समाप्त होता।"

गुप्तचर की बात सच थी; पहली बातें याद कर मेरा हृदय कांपने लगा; मैं सुलतान से जिस बात की प्रतिज्ञा में बंध चुका हूं, उसे पूर्ण न करने से मुझे फिर सुलतान के कारागार में जाना पडेगा यह क्या मेरे पक्ष में सम्भव है? मुझे दुश्चिन्ता और भी सताने लगी, मैं घोडे की पीठ पर बैठा बैठा सोचने लगा।

मुझे चुप देख गुप्तचर ने पूछा, "सुलतान को क्या लिखदूं कहिये, तुरन्त ही उनके पत्रका उत्तर देना होगा।"

मैंने कहा, "मैं उनके काम में पूरी पूरी कोशिश कर रहा हूं, किन्तु ऐसे काम में जल्दी करने से, सब बना बनाया ढङ्ग बिगड़ जावेगा, उनके इस तरह उतावले होने से काम नहीं चलेगा।"

गुप्तचर ने कहा, "आपने जो जो बातें कहीं हैं मैं ठीक वैसे ही सुलतान को लिखूंगा, आपके विरुद्ध कोई बात नहीं लिखूंगा। आप जब काम पूरा कर सुलतान साहब को प्रसन्न करेंगे, तब मुझ गरीब की भी याद रखियेगा; और मेरे पक्ष में दो चार बातें उन से कहने को न भूलियेगा।"

गुप्तचर की बातों से मुझे क्रोध आया, इच्छा हुई, कि इसकी पीठ पर चाबुक ही चाबुक मारूं; किन्तु बडी कठिनता से उस इच्छा को दमनकर उससे पूछा, "मानलो कि यह काम मेरे द्वारा पूरा नहीं हुआ, तब क्या होगा?"

गुप्तचर ने कहा, "सुलतान खुद इसका उत्तर दे सकते हैं; मैं तो उनकी आज्ञा का नौकर हूं, वे मुझे जो आज्ञा करेंगे मैं उसे जैसे बनेगा वैसे पालन करूंगा।"

मैंने कहा, मानलो कि, मैं सुलतान की आज्ञापालन करने में असमर्थ हूं, तो इस हालत में तुम क्या करोगे? एक दिन गुप्तभाव से मेरे ऊपर हमलाकर मेरे गले पर छुरी चलाओगे?"

गुप्तचर ने हंसकर कहा, "अनुमान होता कि यहां तक नौबत नहीं पहुंचेगी, ईश्वर करे मुझे ऐसा निर्दयीपन का काम कभी न करनापडे। आपके ऊपर मेरासम्पूर्ण विश्वासहै; सुलतानकी चिट्ठी पाने के उपरान्त विचार हुआ कि आज आपके घर पर जाकर मिलूं किन्तु इस ख्याल से कि कोई मुझे देख लेगा, इस लिये मैं यहां जंगल में मिला हूं, कुछ बुरे ख्याल से नहीं। जो हो, अब मैं जाता हूं, ईश्वर आपका मंगल करे, इस अधीन को आप याद रखियेगा।"

गुप्तचर मुझे सलाम कर जंगल में चलागया, मैंने भी अपना घोडा बासे की तरफ चलाया। बासे में पहुंचकर थके होने के कारण बिछौने पर लेटा किन्तु नींद नहीं आयी; किस तरह सुलतान का काम पूरा करूंगा, किस तरह आलिभिया को सुलतान के यहां लेजाऊंगा, इन सब चिन्ताओं में घंटे पर घंटे निकलने लगे।

सुलतानके सामने मैंने प्रतिज्ञा की है, "यदि मैं आपका काम पूरा न कर सकूंगा तो फिर अपने को आपके हाथ में सौंपूगा।" यदि उस जगह मुझे लौटकर जाना पडा, तो कैसे भी मेरे प्राण नहीं बचेंगे, सुलतान की आज्ञा से उसके नौकर मुझे बडी तकलीफ दे देकर मेरी जान लेंगे। यदि मैं प्रतिज्ञा भङ्ग करूं और अरब राज्य में न जाऊं तो भी मेरा बचाव नहीं है। सुलतान के अनेक गुप्तचर हर घड़ी मेरे पीछे लगे रहते हैं; क्रुद्ध सुलतान का इशारा पातेही वे मेरे देह के टुकडे २ कर फैंक देवेंगे। दूर देश में चले जाने से भी मैं उनके हाथ से नहीं बच सकता। मैं जिस जगह जाऊंगा उसी जगह वे मेरे पीछे छाया के समान लगे रहेंगे। हां पर एक बात जरूर है कि आत्महत्या कर लेने से मैं इस विपत्ति से बच सकता हूं, किन्तु जीवन सबको बडा प्यारा है, अपने आप आत्महत्या करनेकी किस को इच्छा होती है? यदि किसी उपाय से आत्मरक्षा कर सकूं तो फिर क्या आत्महत्या करूं? मैंने गहरी चिन्तामें सबरात काटी किन्तु कुछ भी स्थिर नहीं कर सका।

मैं प्रायः कभी कभी ड्यूक के मकान पर जाता था; इस परिवार के सब लोगों से मेरी यथेष्ट आत्मीयता होगयी ड्यूक मुझे प्यार की निगाह से देखने लगे। एक दिन ड्यूक ने बातों में मुझ से पूछा, " तुम यहां और कितने दिन इस मकान में रहोगे?"

मैंने कहा, " इस मकान के मालिक जल्दी आवेंगे ऐसा नोटिस मुझे मिला है, सुतराम् इच्छा रहने पर भी मैं अधिक दिन इस मकान में नहीं रह सकता, मालूम होता है कि चार पांच दिन में ही इस मकान को मुझे छोड़ देना पडेगा।"

ड्यूक ने पूछा, " फिर क्या विचार है?"

मैंने कहा, " अभी तक सो निश्चय नहीं किया है, हो सका तो कुछ दिन के लिये विदेश भी चला जाऊं, क्यों कि कोई काम जरूर हाथ में लेना होगा; मैं एक जगह चुप चाप बैठा नहीं रहसकता।"

ड्यूक ने कहा, " आलिभिया ने तुम से कहा है वा नहीं, मालूम नहीं, मैं सपरिवार नायेञ्जा नामक जहाज में सवार हो आगामी शुक्रवार को भूमध्य-सागर में समुद्र की सैर करने को बाहर होऊंगा। विदेशयात्रा के समय दो एक इष्ट मित्र साथ रहने से

दिन बड़े आनन्द में कटते हैं, मेरा जहाज जिब्राल्टर पर्यन्त जावेगा, उस जगह मेरे एक मित्र सेनापति का काम करते हैं कई दिन उस जगह रहकर मैं सेरण्डो पर्यन्त जाऊंगा । उस जगह से नीलनद में घूमने की इच्छा है, सम्भवतः मैं कायरो पर्यन्त जाऊंगा । यदि तुम्हें कोई बिशेष काम न हो तो तुम हमारे साथ चलो तो हम बड़े सुखी होंगे ।

ड्यूक सपरिवार जिब्राल्टर पर्यन्त जावेंगे यह सुनकर मेरी छाती धड़कने लगी सो भय से या आनन्द से उछने लगी यह ठीक २ समझ में नहीं आया; मेरा शिर घूमने लगा; ख्याल हुआ कि मैंने जिस काम का भार लिया है वह मुझ से पूरा होगा। क्यों कि जिब्राल्टर से अरब देश बहुत दूर नहीं है एवम् उस जगह से अलिभिया को किसी तरह सुलतान के गुप्तचरों के हवाले करना कुछ कठिन काम नहीं है; किन्तु जान जाने के डर से मुझे यह खोटा काम करना पड़े तो मैं अपने को क्षमा नहीं कर सकता, जितने दिन मैं जीवित रहूंगा, उतने दिन निदारुण आत्मग्लानी से रात दिन दग्ध रहूंगा।

मुझे चुप देख ड्यूक ने पूछा, "तुम क्या सोच रहेहो ? तुम क्या हमारे साथ चल नहीं सकोगे ?"

मैंने कहा, "मेरे समान घूमने वाला विदेश यात्रा की ऐसी सुविधा कभी नहीं त्याग सकता है, किन्तु एक बात यह है कि मैं आपके साथ चलकर आपको कुछ प्रसन्न कर सकूंगा वा नहीं यही सोचता हूं।"

ड्यूक ने कहा, "तुम्हें यह बात सोचने की जरूरत नहीं है, तुम हमारे साथ चलोगे इसी से हम सबको खूब आनन्द होगा; इस जगह तुम्हारा जो कुछ काम काज है, वह शुक्रवार तक पूरा कर सकोगे तो ?"

मैंने कहा, "हां वह निश्चय कर सकूंगा; देश बिदेश घूमना ही जिसका पेशा है; वह दो घंटे में विदेश जाने के लिये तयार हो सकता है ।

ड्यूक ने आनन्द प्रकट कर कहा, "तब तो तुम्हारा चलना स्थिर हुआ; चलो मैं अपनी स्त्री और लड़की को यह खबर सुनाआऊं वे दूसरे घर में हैं।"

ड्यूक के साथ में दूसरे कमरे में जाते समय मेरे पैर कुछ

हिचके, भगवान जानते हैं, अलिभिया के सर्वनाश की भीतरली इच्छा रहते हुए ऊपर से उस से प्रसन्न मुख बातें करने में मेरा चित्त बहुत दुखी हुआ।

वृद्ध ड्यूक ने अपनी कन्या को सम्बोधन कर कहा, "गिवसन् हमारे साथ समुद्र यात्रा के लिये राजी हुए हैं, इनके साथ रहने से हमारे दिन बडे आनन्द में कटेंगे। क्या कहती हो अलिभिया?"

अलिभिया ने प्रसन्न मुख मेरी तरफ देख कहा, "यह हमारे साथ जावेंगे यह सुनकर मैं बडी खुश हुई अनुमान होता है कि इनने बहुत दफे समुद्र यात्रा की है।"

मैंने कहा, "हां समुद्र ही मेरा घर कहने में कुछ अत्युक्ति नहीं होगी, आपको समुद्र में घूमने का अभ्यास तो है?"

अलिभिया ने कहा, "हां समुद्र यात्रा में मुझे कुछ कष्ट नहीं होता। किन्तु मेरी मा थोडी ही देर में समुद्र की पीडा से कातर हो जाती हैं, शिरू में वे कई दिन तक केबिन के बाहर तक नहीं आ सकती।"

ड्यूक—पत्नी ने अपनी लड़की की बात का समर्थन कर कहा, अलिभिया सच कहती है, जहाज के जरा हिलने झुलने से ही मैं समुद्र पीडा से दुखी होजाती हू, एक सप्ताह तक मैं बिछौना नहीं छोड सकती।"

रात के साढ़े दश बजे मैंने ड्यूक परिवार से बिदा ले वारामदे में आकर देखा, बादल खूब होरहे हैं, तेज हवा चल रही है, कुछ २ बूंदें भी पड रही हैं। मैंने कुछ समय तक वारामदे में खडे हो अपेक्षा की, किन्तु बूंदें बंद नहीं हुईं, और भी जोर से बूंदें पडने लगीं, इतनी अन्धेरी रात थी कि हाथ को नहीं पहचान सकता था। आकाश में एक तरफ से दूसरी तरफ को बिजली दौडती थी, बिजली इतने जोर से कडकती थी, मानो बज्रपात हुआ है।

ड्यूक ने वारामदे में आ मुझसे कहा, "ऐसी भयानक रात में कैसे तुम अपने बासे पर जाओगे, आज रात इसी जगह रहो।"

मैंने कहा, "आपकी कृपा के लिये धन्यवाद है, किन्तु मैं बादल देख ओवरकोट संग लाया हूं, बहुत भीगने का डर नहीं है, यदि घोड़ा रास्ता देख गाडी लेजासकेगा तो बासे पर पहुंचने में विशेष कष्ट नहीं होगा।"

मेरी इच्छा न देख ड्यूक ने अपने घर में मुझे रहने के लिये बहुत नहीं दवाया। मैं बूदोंमें भीगता भीगता टम टममें बैठा; क्योंकिन् टास से मेरा सब शरीर ढका हुआ था, टम टम के चलाते ही मूसला धार वृष्टि होने लगी एवम् कुछ ही चलते न चलते बादल खूब कड़-कड़ाया, मानों कहीं पास ही बिजली गिरी है ऐसा प्रतीत होने लगा उस शब्द से मेरा घोडा चौंक पडा और तेजी के साथ दौड़ने लगा; यदि मैं उसे न रोक सकता तो मैं टम टम से नीचे गिर मरजाता । सड़क पर प्रायः एक हाथ जल भरगया था, उसी जलके ऊपर चलकर किसी तरह घर पहुंचा मेरे सहीस डिकसन् ने कहा, "आज आप खूब बचे यदि आप घोडे को न रोकते तो हम गाडी सहित पुलके नीचे जा पडते, गाड़ी तो जाती किन्तु हमारे हाड़ भी नहीं बचते ।"

मैं गाड़ी में से उतर पड़ा, डिकसन् घोडा और गाडी अस्तबल में लेगया मैं कपडे बदल बैठकर चुरुट पीने लगा, कितनी ही चिन्ता मेरे मन में उदय होने लगीं; एक बार मनमें आया कि सुबह ड्यूकको लिख भेजूंगा, कि मैं आपके साथ समुद्र यात्रा नहीं कर सकूंगा, मुझे किसी कामके लिये दूसरी जगह जाना पडेगा, फिर विचार हुआ कि जब मैंने वचन देदिया है तब क्योंकर उसे लौटाऊं ? मेरे व्यवहार को देख वे अपने मन में क्या कहेंगे ? बाहर जिस तरह का प्राकृतिक दुर्योग, बादल और अन्धकार है, वैसे ही हृदय में भी दुर्योग उपस्थित हुआ, अन्धकार के सिवाय एक तरफ भी रत्तीभर उजेला दिखलायी नहीं दिया, रात समाप्त होने पर फिर प्रकृति के मुंह पर हँसी दिखलायी देगी, आकाश निर्मल होगा, वर्षा और तेज हवा का चिह्न तक दिखलायी नहीं देगा किन्तु मेरे हृदय का अन्धकार इस जीवन में कभी दूर होगा वा नहीं, यह भगवान् के सिवाय कौन जानता है ?

इसी तरह कुछ समय तक चुरुट पीते पीते मुझे नींद आगयी, कुर्सी पर बैठे हुए ही मुझे तन्द्रा ने दबा लिया एवम् उसी अवस्था में एक भयानक स्वप्न देखा, वह यह है कि मैं अरब के सुलतान के महल में पहुंच गया हूं; एवम् सुलतान के सामने खडा हूं मेरे दोनों हाथ पीठ की तरफ सांकल से बंधे हैं, दो हथियारबन्द पहरे वाले मेरी दोनों तरफ खडे हैं, एवम् मेरे सामने गद्दी पर

बैठे हुए सुलतान मेरी तरफ देखकर हँस रहे हैं, उस हँसी में क्रूरता झलकती है। पास ही सुन्दरी आलिभिया घूंटू टेके बैठी हुई हाथ जोड गिड़गिडाकर सुलतान से अपने और मेरे लिये दया की भिक्षा मांग रही है, उसकी दोनों आंखों से आंसुओं की धारा बह बह कर उसे भिगो रही हैं। दुःख से, क्षोभ से और अपमान से उसका हृदय विदीर्ण होरहा है। वह अच्छी तरह बोल भी नहीं सकती है, दुःख के मारे उसका कण्ठ बार बार रुकजाता है। उसका यह भाव देख मेरे मन में घृणा और क्रोध उत्पन्न हुआ, यदि मेरे दोनों हाथ संकल से पीछे की तरफ न बँधे होते तो मैं सुलतान के उपर टूटकर फौरन अपने हाथ की संकल से उसका शिर तोड़ देता; किन्तु यह शक्ति मुझ में नहीं थी, मैंने असहायभाव से धरती की तरफ देख मनहीमन में कहा, "धरती मा तुम जगह दो मैं तुम्हारे गर्भ में प्रवेश करूंगा।"

आलिभिया की अनुनय-विनय, कातरता और रोना सब ही व्यर्थ हुआ, सुलतान ने उसकी प्रार्थना पर ध्यान नहीं दिया; तब आलिभिया क्रुद्ध काली नागन की तरह गर्ज्जकर खड़ी हुई एवम् अपने कपडों में से एक तेज छुरी निकाल अपनी छाती में भोंकली। तुरन्त ही उसका शरीर पैरों में गिर गया।

मैं चिल्लाकर उठ खडा हुआ मेरी नींद टूटगयी, देखा, वह सच नहीं है, स्वप्नमात्र है, उसभीषण स्वप्न के दीखने से मेरे सब शरीर में पसीने आरहे हैं, मैं व्याकुलभाव से कमरे में टहलने लगा।

तेरहवां परिच्छेद

विदेशको।

दूसरे दिन से मेरी समुद्र-यात्रा की तैयारी होने लगी, मैंने गाडी घोडा बेच दिये; जो सब चीजें साथ लेनी ज़रूरी थीं वह सब बांधकर रखलीं, फिर लेस्वी से बिदाली।

लेस्वी मेरा बहुत पुराना मित्र था इस लिये उस से बिदा होने में मुझे बडा कष्ट हुआ, उसने कहा, "भाई, तुम्हारा भाग्य अच्छा है, तुम्हारा सौभाग्य देख मुझे हसद होती है, यदि सम्भव होता तो मैं भी तुम्हारे साथ चलता। अनुमान होता है कि

ऐसा कोई दुनियां में नहीं है कि इस सुयोग को छोड़ता; सुन्दरी आलिभिया के साथ एक जहाज में बहुत दिनों तक रहना बड़े भाग्य की बात है। तुम जो कितने भाग्यवान हो, यह अनुमान में नहीं आ सकता।"

मैंने उसकी इस बात का कुछ जवाब नहीं दिया, एक लम्बी सांस ले चुप रहा। यदि लेसूवी मन की बात जानता, मैं रात दिन कितनी असह्य यन्त्रणा भोग रहा हूं, तो वह कभी ऐसी बात कह कर मेरा मन दुखी नहीं करता; किन्तु मेरे मनका भाव किसी के सामने प्रकट करने का नहीं।

शनीवार की सन्ध्या को मैं नापेञ्जा जहाज में सवार हुआ; ड्यूक ने मेरे साथ अपनी स्त्री और लड़की को भेज दिया था, वह खुद उस समय नहीं आ सके, कितने ही काम निवटा कर वह हमारे साथ आ मिले, मैं थोड़े ही दिनों में ड्यूक का यथेष्ट विश्वास भाजन होगया था। उन ने किस तरह अविश्वासी के ऊपर विश्वास कर लिया यह जानने मात्र की उन में शक्ति नहीं थी; जिस ने मेरे ऊपर इतना विश्वास किया है उसके साथ मैं कैसे विश्वासघातकता करूंगा, यह बात विचार कर मैं अत्यन्त दुखी हुआ।

ड्यूक जहाज में सवार होगये, उनसे दो एक बातें कर मैं अपने केबिन में गया और वहां अपनी चीजें यथा स्थान सजाने लगा। मेरे लिये जो केबिन निर्दिष्ट हुआ था, वह खूब बड़ा और साफ सुथरा था।

यथा समय जहाज चल दिया, मैंने लेडी आलिभिया के साथ जहाज की पतवार पर खड़े हो इंगलेण्ड को सलाम की। जहाजके चलते ही धीरे धीरे प्लाईमाऊथ बन्दर निगाह से गायब होगया, मैं कठपुतली के समान खड़ा हुआ स्वदेश की तरफ देखने लगा।

मुझे चुप देख आलिभिया ने कहा, "मि:गिल्सन् आज आप को इतना गम्भीर और अस्थिर क्यों देखती हूं?"

मैंने कहा, "बहुत दिनों बाद स्वदेश में आया था, इतने थोड़े दिनों में स्वदेश त्यागने से कुछ कष्ट होता है, अब फिर कितने दिन बाद लौटकर आना होगा, जिस तरह देश छोड़ रहा हूं उसी तरह लौटकर आना होगा कि नहीं, यह कौन कह सकता है? भविष्यत अन्धकार में है, उस अन्धकार को हटाकर देखने का कुछ भी उपाय नहीं है।"

अलिभिया ने कुछ हँसकर कहा, "आप बड़े स्वदेश भक्त हैं, तो भी विदेश में ही अधिक रहना अच्छा समझते हैं।"

मैंने कहा, "आपका अनुमान ठीक है, सचही मेरा अधिकांश जीवन देश विदेशों में घूमते घूमते ही कटगया टीडियों का दल जैसे एक दिन से अधिक एक जगह नहीं ठहर सकता है वैसे ही, मेरी अवस्था है, एक जगह मैं एक महीने तक ठहर नहीं सकता; दूसरी जगह यदि मैं न जा सकूं तो घबडा जाता हूं। घूमने वालों का स्वभाव ही इस तरह का होता है; आप यदि कुछ दिन देश विदेश घूमें, तो फिर दश दिन एक जगह नहीं रहसकतीं। यह एक प्रकार का रोग कहना भी ठीक होगा।"

अलिभिया ने हँसकर मुझ से पूछा, "इस रोग की क्या कोई दवा नहीं है?"

मैंने कहा, "यह रोग जीवन का साथी है, बिना मरे यह छूटता नहीं।"

अलिभिया ने कहा, "आशा करती हूं कि, आप जहाज में गम्भीर होकर न बैठेंगे; गम्भीरपन ही इस रोग का कारण है। यदि आप प्रफुल्लभाव से हमारे साथ न मिलेंगे, तो मैं आपके ऊपर नाराज़ होजाऊंगी?"

इस जहाज में और सवारी भी कम नहीं थीं; किन्तु हम एक दूसरे से थोड़ी थोड़ी दूर पर रहते थे, हमारे भोजन की मेज भी अलग अलग थीं। जब अलिभिया सुन्दर कपड़े पहन खाने की मेज के सामने बैठती थी, तब जहाज की दूसरी सवारियों की निगाह उसके सुन्दर मुँह पर पडती थी, कोई सहज में निगाह नहीं फिरा सकता था। किसी सुन्दरी की तरफ इस तरह से एक निगाह बांध देखना भद्दी बात है; किन्तु अलिभिया सवारियों की यह भद्दी चाल प्रसन्न मन से माफ करती, इस लिये उसने एक दिन भी असन्तुष्टता प्रकट नहीं की। जो सब बड़े घरों की युवती यूरुपके राज परिवार से सदा बिना संकोच के मिलसकती हैं, वे सर्व साधारण को एक टक अपनी तरफ देखते हुए नाराज नहीं होतीं।

प्लाईमाऊथ की तरङ्गों को छोड़ जहाज उपसागर में आया; तब जहाज तरंगों के लगने से डगमगाने लगा, ड्यूक-पत्नी कुछ ही घंटों में समुद्र-पीडा से दुःखी हो बिछौने पर पडगयी

लेडी अलिभिया ने कहा, "मा इस थोडे ही समय में समुद्र पीडा से दुखी होगयी है। उसे देखकर बडा दुःख होता है। वह बिछौने पर से शिर तक नहीं उठासकती। समुद्र-पीडा में स्याम्पेन उपकारी होने की वजह से मैंने उसे कुछ स्याम्पेन पिला दी है, किन्तु उसे स्याम्पेन से कुछ फायदा नहीं हुआ, डाक्टर कहता है कि ब्रोमाईड फायदा करेगा, किन्तु स्याम्पेन के उपर ब्रोमाईड देने से कुछ फल होगा कि नहीं इस में सन्देह है।

डूयूक डेक के ऊपर मेरे ही पास बैठ थे, उनने अलिभिया की बात सुनकर कहा, "मैं एक बार उसे देख आऊं कि वह कैसेहै।"

जितने दिन जहाज तरंगों के कारण झूलता रहा उतने दिन जहाज की सवारियों में से कितने ही आदमी समुद्र-पीडा की यन्त्रणामें दिन काटने लगे। मैंने बहुत दिनों तक समुद्र में यात्राकी थी इसी कारण से समुद्र-पीडा मेरे अभ्यास में पडगयी थी, इस लिये मुझे कुछ भी कष्ट नहीं मालूम हुआ।

समुद्र यात्राके तीसरे दिन ड्यूक तमाकू पीने के कमरे में बैठे हुए लुइषट् खेल रहे थे, लेडी आलिभिया अपनी मा के केबिन में बैठी हुई मा को एक पुस्तक पढ़कर सुना रही थी। मैं जहाज के नये परिचित कर्मचारी से बातें कर रहा था, बातों ही बातों में उस कर्म्मचारी ने मुझ से कहा, "मालूम पडता है कि आपने अनेक जहाज देखे हैं, किन्तु हमारा यह जहाज बिलकुल नया है, इसकी कलों में एक विशेषत्व है, यदि आप की इच्छा हो तो जहाज का कुल अंश अच्छी तरह देख सकते हैं।

उस समय मुझे और कोई काम नहीं था, कर्म्मचारी की बात सुनकर जहाज के विभिन्न अंश देखने की मेरी बड़ी इच्छा हुई; इस लिये मैं कर्म्मचारी के साथ घूम घूमकर जहाज के कुछ अंश देखने लगा। फिर तीसरे दर्जे के यात्री जिस जगह थे, घूमते घूमते उसी जगह पहुंचे; उस जगह पहुंचते ही हठात् मेरा शिर घूमने लगा, मानो और अगाडी बढ़ने की मुझ में शक्ति नहीं रही। मैंने देखा वे दोनों मुसलमान गुप्तचर जो कि मुझसे मेरे वासे में मिले थे जहाज के एक कोने में लेट रहे हैं, उन में से एक सो रहा था, जिस आदमी ने जङ्गल में मुझ से बातें की थीं वह जग रहा था, मुझे देखते ही वह पहचान गया, उस का भाव देखने से मालूम हुआ

कि, मुझे न पहचानने का कोई कारण नहीं था। मैं जो नायेआ जहाज में विदेश जाऊंगा, यह बात इन को कैसे मालूम हुई ? इस बात का मैंने तो किसी से ज़िकर नहीं किया था एवम् डूयूक और दो एक मित्रों के सिवाय और किसी को मालूम भी नहीं था। मुझे अपने लिये कुछ चिन्ता नहीं थी एवम् लेडी अलिभिया इस जहाज में न होती, तो इन दोनों मुसलमानों को देखकर मुझे बिन्दुमात्र चिन्ता नहीं होती। समझा, इनने मेरा ही पीछा किया है, इसका अन्त में फल क्या होगा, कौन बतला सकता है?

दोनों मुसलमानों को जहाज में भी मेरा पीछा करते देख मुझे बडा दुःख हुआ दिन रात गोयन्दा साथ लगे रहने से कोई आदमी सुस्थचित्त नहीं रहसकता। अनेक चिन्ताओं के उपरान्त मैंने स्थिर किया, जैसे हो इन दोंनो की आंखों में धूल डालनी होगी।

जहाज जब लिस्बन नगर के पास पहुंचा, उस समय समुद्र में तूफान न होने के कारण जहाज ठीक ठीक चलने लगा, समुद्र पीडा के कारण जो लोग कई दिन से बीमार थे, वे सब धीरे धीरे अच्छे होगये। जहाज जितना भूमध्य-सागर की तरफ बढ़ता था, सर्दी उतनीही कम होती जाती थी; गरमी पडने लगी, सर्दी के दूर होने पर जहाजमें सवार हुए लोगों में अनेक प्रकारके खेल होने लगे। अलिभिया भी उन सब खेलों में कभी कभी शामिल होती थी, यद्यपि वह बहुत बड़े घर की लडकी थी तो भी वह समय समय पर जहाज में सवार हुए साधारण से साधारण मनुष्यों के साथ मिलने की इच्छा को नहीं रोकसकती थी, आदमी की प्रकृति जैसी होती है वह धर्म्म, पद मर्य्यादा वा वंश मर्य्यादा के ख्यालसे बदलना बडा कठिन है। उस जहाज में जो और कई युवती यात्रा कर रहीं थीं, वे अलिभिया के समान सुन्दरी नहीं थी, जहाज के सब सवार हुए आदमी अलिभियाके रूपके पक्षपाती होने से वे युवतियां बड़ी कुढ़तींथीं।

जहाज फिर क्रमशः जिब्राल्टरके पास पहुंचने लगा, किन्तु सुलतान के निकट जिस काम की प्रतिज्ञा कर आया था, उसके पूरे होने की अभी तक कोई सम्भावना नहीं थी। दोनों मुसलमान गुप्तचरों ने किसी दिन भी मुझे नहीं छेड़ा किन्तु वे मेरे ऊपर हर समय तेज निगाह रखतेथे, वह निगाह उनकी भूखे शेर की निगाहके समानथी। उनकी ऐसी निगाह से मैं कभी कभी बडा दुःखी होजाताथा

यथा समय जहाज का लंगर जिब्राल्टर बन्दर पर हुआ। जिब्राल्टर में एक अङ्गरेज सेनापति ड्यूक का मित्र था। वह ड्यूक और उनके परिवार के लिये अपना एक खास स्टीमर लेकर हमारे जहाज के पास आया, ड्यूक ने सेनापति महाशय से मेरी मुलाकात करादी। मैंने विचार किया था कि जितने दिन ड्यूक अपने मित्र के घर रहेंगे उतने दिन मैं जिब्राल्टरके किसी होटल में रहूंगा। मित्र के घर महमान बनकर रहना उचित नहीं है, किन्तु अतिथि परायण सेनापति महाशय ने मेरी बात न मानी, वह मुझे अपने घर ले चलने के लिये बहुत दबाने लगे, सुतराम् अन्त में मुझे उनकी ही बात माननी पड़ी।

सेनापति ने मुझ से कहा, "आप मेरे नौकरों को अपना लगेज बतला दीजियेगा, वे ड्यूक के लगेज के साथ आपका भी मेरे मकान पर पहुंचा देवेंगे।"

सेनापति के नौकरों को अपना असबाव सौंप, हम सब सेनापति के साथ चलने लगे।

सेनापति के छोटे स्टीमर में सवार होकर चलने के उपरान्त जहाज की तरफ देखा, कि दोनों मुसलमान गुप्तचर भी एक नाव में सवार हो किनारे की तरफ आरहे हैं, वे किस उद्देश्य से जिब्राल्टर में उतर रहे हैं सो समझ में नहीं आया। किन्तु उनको जिब्राल्टर में उतरता देख मुझे बड़ा दुःख हुआ। उनकी मनशा अच्छी नहीं थी यह खूब अच्छी तरह समझ में आगया।

स्टीमर से किनारे पर उतर हम सब सरकारी गाड़ी में सवार हो गवर्नमेण्ट हाऊस की तरफ रवाने हुए। जिब्राल्टर मेरी देखी हुई जगह थी, इस जगह में कई दफे आया हूं एवम् इस जगह के कितने ही आदमियों से मेरी खूब मुलाकात थी, इस बार मैं प्रधान सेनापति का महमान हूं, यह बात वे लोग सुनेंगे तो अपने मन में क्या ख्याल करेंगे?

अलिभिया ने अपने रूप ज्योति से नायेआ जहाज में सवार हुए लोगों को मुग्ध किया था, प्रधान सेनापति के मकान में भी आकर देखा, उनके एडीकांग और सेक्रेटरी का दल भी अलिभिया के मन सन्तुष्ट करने की जीजान से चेष्टा कररहा है। जिब्राल्टर में पहुंच हम सब एक दल बांधकर देखने योग्य स्थानों को देखने लगे।

एक दिन गवर्नमेण्ट हाऊस में नाच हुआ, सेना ने भी एक दिन हमको निमन्त्रित किया।

एक दिन मैं सन्ध्या को गवर्नमेण्ट हाऊस के पास वाले बाग में बैठा हुआ हवा खा रहा था, अलिभिया फूल रानी-वेश में मेरे पास बैठी थी। उस दिन बड़ी गरमी थी, अलिभिया ने पंखा झलते झलते मुझ से कहा, "मि:गिवसन् मैं आप से एक बात पूछूंगी, आप ठीक ठीक जवाब देवेंगे तो ?"

मैंने कहा, "इस में मुझे क्या आपत्ति है ? आपको क्या पूछना है कहिये।"

अलिभियाने कहा, "आप मुझसे कुछ नाराज क्यों हैं, कहिये।"

मैंने उसकी बात पर ताज्जुब से उत्तर दिया, "लेडी, अलिभिया मैं आपके ऊपर नाराज हूं ऐसा ख्याल आपको क्यों हुआ ? किसी किसी समय मुझे ऐसा ख्याल होता है कि, आपही किसी कारण से मुझसे असन्तुष्ट हुई हैं।"

अलिभिया ने कहा, "यह आपकी बड़ी भूल है। क्यों कि आपसे असन्तुष्ट होने का कोई कारण नहीं है।"

मैंने कहा, "तो हम दोनों की भूल है। हम दोनों का भ्रम दूर हुआ; आइये हम मेल करलें।"

मेरी बात सुनकर अलिभिया ने हँसकर अपना दाहिना हाथ बढाया, मैंने उस से अपना हाथ मिलाया। उस दिन भी सेनापति के महल में नाच था; दो एक बातों के उपरान्त हम दोनों नाच के कमरे में गये।

दूसरे दिन एक युद्ध-जहाज में आहारादि शेषकर सेनापति के छोटे स्टीमर द्वारा कीनारे आये; उस दिन रातके भोजन का प्रबन्ध गवर्नमेण्ट हाऊस में था

मेरे समान भ्रमणप्रिय मनुष्य रात दिन लाट साहब की कोठी में रहा आवे, यह सम्भव नहीं है; दूसरे दिन मैं सुबह लाट साहब की कोठी से निकल पुराने मित्रों की तलाश में चला।

धनजन-पूर्ण सुरम्य अट्टालिकाओं से सुशोभित प्रधान राजपथ से होकर जाते जाते इस छोटेसे नगर की मनोहारिणी शोभा देख मैं मुग्ध होगया, पहले इस जगह मेरे जो मित्र रहतेथे उन सबकी याद, आने लगी; मेरे वे सब पुराने मित्र इस समय कहांहैं मेरा परम मित्र ज्याकरिकाईस

अफगानके युद्ध में मारा गया, डिकमामिल व्यापार के लिये किसी दूर देश में गया, ह्यारीडरणफील्ड कुइन्सलेण्ड में व्यापार करता है एवम् टम्गुर्ण इङ्गलेण्ड में जा, एक धनाढय की लड़की से विवाह कर आनन्द में रहता है । संसार का नियम इसी तरह है; नाना जातीय पक्षी रात के समय एक पेड़ पर आश्रय लेते हैं, सुवह होते ही वे अलग अलग दशा को उडजाते हैं । मनुष्य भी एक तरह पक्षी के समान ही हैं।

मैं अपने एक मित्र के कारखाने की तरफ जारहा था, ऐसे समय में, ख्याल हुआ कि कोई मेरा पीछा कर रहा है। क्यों कर ऐसा ख्याल हुआ सो समझ में नहीं आया, किन्तु फिर कर देखा तो किसी को नहीं पाया, केवल एक थोडी उमर का बालक एक मिट्ठा हाथों में लिये चौंख रहा है। मैं फिर चलने लगा। कुछ दूर चलकर फिर पीछे की तरफ देखा कि वह बालक मेरा पीछाकर रहा है। मैंने उसकी तरफ न देख मित्रके आफिस में प्रवेश किया।

मुझे देखते ही मित्र अपनी कुर्सी से उठ खडा हुआ, मेरे इस मित्रका माम मि:म्याक्सवेल है।

म्याक्सवेल ने कहा, "अहा, गिवसन् तुम यहां हो ! मेरा ख्याल था कि तुम आज कल लण्डन में होगे, जंगल जंगल में मन के माफिक शिकार करते हुए घूमते हो और मित्रों के साथ भोजन करते हो।"

मैंने म्याक्सवेल से हाथ मिलाकर कहा, "तुम्हारा अनुमान झूठा नहीं है, इसी तरह मैं अपने दिन काट तो रहा था, किन्तु मन एक जगह नहीं लगता, इस लिये कई एक मित्रों के साथ भूमध्य सागर में घूमता घूमता इस जगह आया हूं; उनके साथ शीघ्र ही देशाटन करने को जाने की इच्छा है।"

म्याक्सवेल ने कहा, "तब तो इतने दिन होने पर भी आपका वही पुराना देशाटन का रोग गया नहीं है। तुम पिछली वार जब यहां आये थे तब तुमने कहा था कि अब इस तरफ कभी नहीं आऊंगा। जो हो, तुमको देख बडा आनन्द हुआ। किन्तु इस जगह ठहरे कहां हो ? मेरे ऊपर दया नहीं होगी क्या ?"

मैंने हँसकर कहा, "म्याक्सवेल तुम मुझ से घृणा क्यों करते हो ? तुम्हारे ऊपर अबकी वार दया नहीं करसकता, अबकी बार मैं

लाट साहब का महमान बना हूं, गवर्नमेण्ट हाऊस में डचेज़ और ड्यूक प्रभृति के साथ रहता हूं।"

म्याक्सवेल ने हँसकर कहा, बड़े लोगों में जो तुम खूब मिलते हो इस से अनुमान होता है कि, कुछ मतलब है। किसी बड़े घराने की लड़की से विवाह करने की इच्छा है क्या?"

मैंने मित्र की इस बात का कुछ भी उत्तर न दे कहा, "देखो म्याक्सवेल मेरा तुम से एक अनुरोध है, तुम क्या उसे मानोगे?"

म्याक्सवेल ने कहा, "मुझ से होसकेगा वहां तक मैं मानूंगा, कहो क्या बात है?"

मैंने कहा, "मुन्शी हुसेन और उसके भाई की तुम्हें याद है क्या?"

म्याक्सवेल ने कहा, "ऐसा एक जोड़ा रास्कल दुनियां में और है वा नहीं इस में सन्देह है, उनको भूलना असम्भव है। उनसे क्या तुम्हें कुछ मतलब है?"

मैंने कहा, "तुमने शायद सुना होगा, कुछ दिन पहले मैं सुलतान के फन्दे में पड़ा था, सुलतान ने मुझे अपने जेल में कैद कर रक्खा था उसके फंदे में से निकलने की मुझे बिलकुल आशा नहीं थी, बहुत कष्टों से मैं उसके फन्दे में से निकला तो हूं; किन्तु मैं उस से एक प्रतिज्ञा कर आया हूं, उसके लिये मुझे एक बहुत कठिन काम करना पड़ेगा, काम केवल कठिन ही नहीं है, दुष्कर्म भी है; प्राण बचाने के लिये मुझे यह स्वीकार करना पड़ा है।

म्याक्सवेल ने कहा, "तुम स्वदेश में आ दोनों हाथोंसे रुपया उड़ा रहे थे, यह सुना था, वह रुपया कहां से आया, वह अब कुछ समझ सकूंगा; मेरी बात पर कुपित मत होना, तुम्हारे मनकी क्या बात है खुलकर कहो।"

मैंने कहा, "सुलतान से जिस काम की प्रतिज्ञा मैं कर आया हूं; उसके अनुसार मैं काम करता हूं कि नहीं, यह जानने के लिये सुलतान ने दो गुप्तचर मेरे ऊपर निगाह रखने को नियुक्त किये हैं। वे छाया के समान मेरे पीछे पीछे घूमते हैं; बहुत प्रयत्न करने पर भी मैं उनकी निगाह से नहीं बच सका।"

म्याक्सवेल ने कहा, "वह क्या इस जगह तक तुम्हारे पीछे लगे हुए आये हैं?"

मैंने कहा, "हां, मैं जिस जहाज में आया हूं उसी जहाज में वे जिब्राल्टर आये हैं। उनका क्या अभिप्राय है सो समझ में नहीं आता।"

म्याक्सवेल ने कुछ समय तक सोच विचार कर मुझसे कहा, "देखो, गिवसन् तुमने सुलतान के सामने किस बात की प्रतिज्ञा की है वह मुझे जानने की दरकार नहीं है, किन्तु तुमने खुद कहा है कि वह दुष्कर्म्म है, मुझे अनुमान होता है कि अभी तक आप उसे पूरा नहीं करसके हैं।"

मैंने कहा, तुम्हारा अनुमान यथार्थ है; मैं इस समय तक उसे पूरा नहीं करसका हूं, मेरे जीवन में एक समय ऐसा था जब किसी काम को मैं कठिन नहीं समझता था, इस समय भी मैं और किसी काम को कठिन नहीं समझता हूं; किन्तु मैं जिस काम की बात कहता हूं, वह पूरा करना मेरी ताकत के बाहर है, इस तरह के बुरे काम में मुझे अपना हाथ डालने की इच्छा नहीं है।"

म्याक्सवेल ने कहा, "तुम्हारी बात सुनकर मैं खुश हुआ, अब मुझे क्या करना पडेगा सो कहो।"

मैंने कहा, "मानालाकी जिब्राल्टर में है कि नहीं, जानना चाहता हूं, यदि वह इस जगह है तो बतलाइये किस जगह मिलेगा।"

म्याक्सवेल ने कहा, "एक सप्ताह पहले वह इस जगह था, किन्तु आज कल वह यहां है कि नहीं सो कह नहीं सकता उस से तुम्हें क्या मतलब है?"

मन कहा, "मैं सुलतान के सामने प्रतिज्ञा कर आया हूं कि यदि मैं उसका काम पूरा न कर सकूंगा; तो अरब में फिर जाकर उसे अपने को सौंप दूंगा; इसी लिये मानालाकी के साथ कुछ परामर्श करना चाहता हूं"

म्याक्सवेल ने ताज्जुब से कहा, "तुम यह कैसे दुःख की बात कहते हो? सुलतान को जो तुम अपने को सौंप दोगे तो तुम्हारी रक्षा कैसे भी नहीं होगी। इस ख्याल से तुम आत्म हत्या मत करना।"

मैंने कहा, "तुम चाहे कुछ कहो, मुझे प्रतिज्ञा पालन करनी पडेगी; सुलतान को मैं दिखलाऊंगा, अंग्रेज प्रतिज्ञा पालन के लिये किस तरह आत्म विसर्जन कर सकता है; किन्तु अरब जाने से

पहले मैं दोनों गुप्तचरों को कुछ शिक्षा देजाऊंगा, इस लिये मानालाकी की खोज करता हूं।"

म्याक्सवेल ने कहा, "तुम जो ख्याल करते हो, उस में सफल होगे कि नहीं इसमें सन्देह है, यह गुप्तचर पंखदार मछली के समान हैं जो कि गठरी में से भागजाती है।"

मैंने कहा, "जो हो, तुम मानालाकी के साथ एक बार मुझे मिलादो।"

म्याक्सवेल मेरे अरब जानेके संकल्प में बार बार वाधा देनेलगा; किन्तु मैंने उसके वाधा देने परख्याल नहीं किया, मुझे सुनाम-रक्षा के लिये यह काम करना ही पड़ेगा, और उपाय नहीं है।

म्याक्सवेलने कहा, "यदि तुम अभी मानालाकीसे मिलना चाहते हो, तो मैं उसे बुलवादूंगा; तुम आज मेरे यहां से जाने नहीं पाओगे? बहुत दिनों से हमने साथ साथ भोजन नहीं किया है।"

मैंने कहा, तुम्हारा कहना ठीक है, मैं रह नहीं सकता, गवर्नमेण्ट हाऊस में सब मेरी प्रतीक्षा करेंगे।"

म्याक्सवेलने हँसकर कहा, "यह भी एक बातहै, तुमनेजो आज कल घर में वासा किया है इसी से यहां नहीं रहसकते।"

और अधिक बातें नहीं हुईं, मित्रसे विदा ले मैं स्थानीय बाजार में होकर लाट-प्रसाद की तरफ चला। मित्र के आफिस से बाहर होते हुए मैंने देखा, वह बालक रास्ते में एक किनारे से खड़ा है, इस समय भी वह मिट्ठा चोंख रहा है, उसको फिर उस जगह देख मुझे ताज्जुब हुआ। इतना छोटा बालक किसकी कहन से मेरा पीछा कर रहा है? वह जो मेरा पीछा करही इतनी दूर आया है इस में मुझे तनक भी सन्देह नहीं रहा, क्योंकि मैं जैसे ही चलने लगा वैसे ही वह बालक मिट्ठा चोंखते चोंखते मेरे पीछे२ चलने लगा। मैंने तब उसकी निगाह बचाने के लिये कुछ दूर जल्दी चलकर एक गली में प्रवेश किया, कुछ ही मिनट बाद मालूम हुआ, कि वह बालक भी दौड़कर आरहा है, मैंने और समय नष्ट न कर दूसरी गली में होकर लाट-भवन में प्रवेश किया।

लाट साहब तब किसी काम के कारण बाहर गये थे; ड्यूक और ड्यूक-पत्नी बरामदे में बैठे बातें कर रहे थे; अलिभिया को उस जगह नहीं देखा, सुना कि लेडी अलिभिया एक दो चीज़ें

खरीदने के लिये लाट साहब के एक एडीकाङ्क और प्राईवेट सेक्रेटरी के साथ बाज़ार गयी है। एक बजे लाट-साहब लौट कर आये, किन्तु उस समय तक लेडी अलिभिया और उसके दोनों साथी दिखलायी नहीं दिये।

ड्यूक ने कहा, "अलिभिया बाजार में जाकर क्या कर रही है? वह क्या सब बाजार ही खरीद लावेगी? टिफिन का समय हो आया है किन्तु वह नहीं आयी, इतनी देर क्यों हुई?"

लाट साहब ने कहा, "अलिभिया की जो इच्छा हो वह खरीद सकती है, किन्तु वह खूब ठगा आवेगी, इस में सन्देह नहीं, इस जगह के दूकानदार भयानक ठग हैं।

यथा समय हम टिफिन करने बैठे, किन्तु उस समय तक अलिभिया की कुछ खबर नहीं मिली; मुझे बड़ी फिकर हुई, मेरे मन में नाना प्रकार की दुश्चिन्ता पैदा होने लगी, अन्त में जब दो बजगये तब लाट साहब का वह एडीकाङ्क जो कि अलिभिया के साथ बाजार गया था एक गाड़ी में बैठा हुआ लौटकर आया। उसका नाम मिःओयाकुलीहै। ओयाकुली का चेहरा देखनेसे मालूम हुआ कि निश्चय ही कोई दुर्घटना हुई है।

लाट साहब ने उत्कण्ठित भावसे पूछा, "ओयाकुली अलिभिया को किस जगह छोड़ आये?"

ओयाकुी ने टूटे फूटे शब्दों में कहा, "मैंने उसे तलाश किया किन्तु पाया नहीं।"

लाट साहब ने अधीरभाव से गर्जकर कहा, "तलाश किया किन्तु पाया नहीं यह क्या कहते हो? तुम उस के साथ बाजार गये थे लौट कर आ कहते हो कि उसे तलाश किया किन्तु पाया नहीं तुम क्या उसके साथ नहीं थे? बात क्या है साफ साफ कहो।"

ओयाकुी ने कहा, "महाशय मेरा कुछ अपराध नहीं है, लेडी अलिभिया दुकानों में घूमती घूमती एक दूसरी दुकान में गयीं, उस दुकान में स्त्रियां ही केवल सामान बेचतीं थीं, इस लिये हम दुकान के भीतर नजा बहर ही खडे हुए लेडी साहब के लिये अपेक्षा करने लगे, उस दुकान नें उन्हें चीज पसन्द करने नें देर लगती हुई समझ हम पास की एक चुरुट की दुकान में एक बण्डल चुरुट खरीदने गये थे, उस जगह हमें पांच मिनट से ज्यादा नहीं लगे; चुरुट ले आकर हम

लेडी साहब के लिये एक घंटे तक प्रतीक्षा करते रहे, तथापि वे दुकान के बाहर नहीं आयीं; तब मामला क्या है यह जानने के लिये मैं दुकान में गया। दुकानदार के मुंह से सुना कि लेडी साहब को यहां से गये हुए बहुत देर हुई। वे किस तरफ गईं दुकानदार से पूछने पर वह कुछ नहीं बतला सका। मि:मार्सार और मैंने बाजार की एक एक करके सब दुकानें देख डालीं किन्तु उन्हें कहीं भी नहीं पाया। मि:मार्सार अभीतक उनको बाजार में तलाश कर रहे हैं; लेडी साहब और किसी रास्ते से इस जगह लौट कर आगयी हों यह जानने के लिये मैं सीधा यहां आया हूं।"

लाट साहब ने कहा, "ड्यूक, बड़ी चिन्ता की बात है मेरे बीस हजार रुपये खोजाते तो मुझे इतनी चिन्ता न होती, मामला क्या है कुछ समझ में नहीं आता।"

ड्यूक ने कहा, आप का अपराध क्या है? चिन्ता करने से कुछ काम नहीं चलेगा; लड़की की इच्छा न मालूम क्या थी, यह कोई नहीं बतला सकता; किन्तु इस अपरिचित स्थानमें वह कहां जावेगी?"

लाट साहब ने कहा, "मैं खुद एक बार तलाश कर आऊं।"

ड्यूक ने कहा, "मैं भी आप के साथ चलूंगा, लड़की के लिये बड़ी दुश्चिन्ता होगयी है।"

इतनी देर बाद मैं बोला; "जिब्राल्टर के सब गली रास्ते मेरे देखे हुए हैं, अनुमति हो तो मैं भी आपके साथ जासकता हूं अनुसन्धान करनेमें मैं भी आपकी विशेष सहायता कर सकूंगा, ऐसा ख्याल है।"

लाट साहब ने कहा, "अच्छी बात है आप भी चलिये।"

एक गाड़ी में लाट साहब, ड्यूक, मैं और वह हतबुद्धि एडीकाङ्ग चारों जने बाज़ार की तरफ़ चले। मेरा ख्याल हुआ कि, दुर्वृत्त सुल-तान के आदेश से किसी ने अलिभिया का खून किया है। मूली हुसेन और उसका भाई इब्राहीम हुसेन के ऊपर मेरा सबसे पहले सन्देह हुआ। क्योंकि उनके लिये कुछ भी कठिन नहीं था। अब समझा आज सबेरे मेरे ऊपर दृष्टि रखनेके लिये उनने ही उस बालक को मेरे पीछे भेजा था। यदि मैं आज सबेरे लाट भवन से बाहर न जाता तो निश्चय यह दुर्घटना न होती। जो हो मैंने अपने मन का भाव किसी के सामने प्रकट नहीं किया। मेरे सन्देह का कारण यदि

मेरे तीनों साथी जान जाते तो निश्चय ही बड़ा गोलमाल होता। कभी कभी मेरी इच्छा होती थी कि सब बातें मैं खोल कर इन लोगों से कह दूं, किन्तु मेरी ऐसी हिम्मत नहीं हुई, सब बातें सुनने पर वे निश्चय ही मुझे क्षमा नहीं करते। मैं बिलकुल निर अपराध होने पर भी वे निश्चय यह समझते कि मैं भी इस षडयन्त्र में शामिल हूं, तब मेरी अवस्था कैसी होती। मैंने विचार किया कि मुझे अपने पाप का प्रायश्चित्त करना ही होगा, भले ही चाहे जो हो, मैं अलिभिया को तलाश करलाऊंगा अरब राज्य से अलिभिया को लाने में भले ही मेरी जान चली जावे, तो मैं बडी खुशी के साथ प्राण दूंगा। किन्तु उसे सुलतान के फंदे में से जरूर निकालना चाहिये।

चौदहवां परिच्छेद।

अनुसन्धान।

जिस दुकान से अलिभिया अदृश्य हुई थी, हमारी गाड़ी उसी तरफ चली। बाजार में कुछ ही दूर पर ओरियाण्टल होटल के पास पहुंच कर लाट साहब ने गाडीवान को गाड़ी रोकने के लिये कहा, उनने अपने प्राईवेट सेक्रेटरी मि:मार्सार को वहां देखा।

मि:मार्सार को हमारी गाडी की पास आते ही लाट साहब ने पूछा, " क्या खबर है मि:मार्सार, क्या कुछ पता लगा? "

मार्सार ने विमर्षभाव से कहा, " नहीं, अभी तक कुछ भी पता नहीं लगा सका। मैंने पुलिस को साथ ले बाजार की सब दुकानें एक एक करके देख डाली हैं। यदि पहिले ऐसा मालूम होता कि पांच मिनट के लिये अलग होने से ऐसी घटना होगी तो लेडी अलिभिया को कभी अकेला न जाने देता। "

लाट साहब ने पूछा, " लेडी अलिभिया जिस दुकान से गायब हुई हैं उस दुकान में बदशाशों ने तो कहीं किसी कोठरी में बन्द कर नहीं रक्खा है? बदमाशों के लिये कुछ भी कठिन नहीं है, कुछ लाभ की आशासे यह लोग कठिनसे कठिन काम को करसकते हैं। "

वृद्ध ड्यूक ने कहा, " ऐसा अनर्थ होगा, यह पहले कभी ख्याल में भी नहीं हुआ था, अब लडकीके मिलनेसे ही जानमें जान आवेगी। "

मैंने कहा, " आप को डरना नहीं चाहिये, वह जिस जगह होगी, मैं उसे वहीं से तलाश कर लाऊंगा। " बात कहनी तो सहज है,

किन्तु आलिभिया को तलाश करलाना यह सहज बात नहीं है।

लाट साहब ने कहा, "ओयाक्री और मार्साार, तुम दूसरी तरफ तलाश करो, मैं एक दफे और बाज़ार में तलाश कर देखूं; पुलिस क्या करती है?"

मार्साार ने कहा, "रास्ते में जो सब गाडी जाती हैं वे उन्हें ही देख रहे हैं।"

हमने और भी अगाडी बढ़कर गाड़ी को बाजार में रोका एवम् गाड़ी से उतर कर, अलिभिया जिस दुकान में गायब हुई थी, उसी में गये।

लाट साहब ने मुझ से पूछा, "मि:गिवसन आप इस देश की भाषा बोल सकते हैं? मैं और ड्यूक, हम दोनों इस देश की भाषा नहीं जानते हैं।"

मैंने कहा, "इस देश की भाषा में मैं पण्डित तो नहीं हूं किन्तु काम चला सकता हूं।"

हम लोग दुकान में पहुंचे, दुकानदार ग्रीक जाति का है; दुकानदार लाट साहब को पहचानता था, उन्हें देख झुककर सलाम कर कुर्सी छोड अलग खड़ा होगया। यूरुपीयन होने पर भी वह बड़ा भद्दा आदमी था, उसके कपडे जैसे मैले थे शरीर भी वैसा ही मैला था।

मैंने दुकानदार से पूछा, "आज सवेरे जो अङ्गरेज-महिला दो आदमियों के साथ तुम्हारी दुकान में चीजें खरीदने आयी थी, वह मिलती नहीं है; वह कहां है बतलाओ।"

दुकानदार ने अपने दोनों हाथ ऊपर को उठा शिर हिलाकर कहा, "परमेश्वर की शपथ खाकर कहता हूं, मैं उसकी कुछ भी खबर नहीं जानता। उनने यहां आकर जो चीजें चाहीं वे मेरी दुकान में नहीं थी; यह बात जानकर वे मेरी दुकान से फौरन बाहर चली गयीं। किधर गयीं, सो मैंने देखा नहीं?"

मुझे ख्याल हुआ कि दुकानदार यह झूंठ बोल रहा है, यह कुछ नहीं जानता यह बिलकुल असम्भव है। क्योंकि अलिभिया इस की दुकान से चली जाती तो, उसके दोनों साथी उसे जरूर देखते जो हो, दुकानदार ने जो उत्तर दिया वह लाट साहब को मैंने सुना दिया। लाट साहब ने कहा, "उस से पूछो आलिभिया कहां है, यदि वह यह फौरन न बतलावे तो उसे इतना कठिन दंड दूंगा कि, जिन्ना-

लटर में आज तक किसी को नहीं मिला हो। ”

मैंने लाट साहब की बात दुकानदार की भाषा में अनुवाद कर उसे सुनादी। मेरी बात सुन दुकानदार हूं हूं कर रोने लगा, रोते रोते उसने कहा, “दुहाई लाट साहब की, मैं निर्दोषी हूं, मेम साहब किधर गयी हैं मैं नहीं जानता, मुझे दंड देने में कुछ लाभ नहीं। मैं गरीब जरूर हूं किन्तु बदमाश नहीं हूं और मिथ्यावादी भी नहीं हूं।”

लाट साहब ने मुझसे कहा, “उस से कहो, हम उस के मकान की खाना तलासी लेंगे।

मेरी बात सुन दुकानदार ने कहा, “खाना तलासी लेने की इच्छा हो लीजिये, किन्तु मेरे मकान में उन्हें नहीं पावेंगे। विना कारण के इस गरीब के घरकी खाना तलासी लेंगे तो लोग आपकी ही निन्दा करेंगे। मुझ निर्दोषी को तंग कर क्या फल लाभ करेंगे?”

दुकानदार की बात सुन लाट साहब क्रोधित होकर बोले, “हमसे गुस्ताखी करता है। मैं इसे आज रीतिमत शिक्षा दूंगा। मेरा विश्वास है कि इसी रास्केल ने किसी के साथ षड्यन्त्र कर आलिभियाको अपने मकान में छिपा रक्खा है। आप लोग इसे कहीं जाने मत देना, मैं एक पहरे वाले को बुला इसकी दुकान मकान की खानातलासी लेता हूं।”

मैंने दुकानदार को लाट साहब का अभिप्राय जतलाया; उसने सुनकर कुछ व्याकुलता प्रकट नहीं की, उतना डर भी नहीं माना। लाट साहबके आदेशानुसार हमने उसे नजरबन्दी कर लिया; लाट साहब दुकान से बाहर चलेगये एवम् पांच मिनटमें ही एक पहरे वाले को साथ ले दुकान में लौट कर आगये।

फिर खाना तलासी शिरू हुई, नीचे दुकान थी, दो मंजिल पर उसका रहने का मकान था, मैं उस मकान के सब कमरे घूम घूम कर देखने लगा; जिन सब कोठरियों में ताले लगे हुए थे, उनके ताले खुलवा खुलवाके देखीं गयीं, किन्तु कहीं भी अलिभिया नहीं मिली, सुतराम् हताशहो दुकान में आये। तब दुकानदार ने लाट साहब को सलाम कर कहा, “मालूम पडता है कि हजूर को अब विश्वास हुआ कि, मैंने झूठी बात नहीं कही थी, मेम साहब को मैं किस लिये अपने मकान में छिपा कर रखूंगा? अङ्गरेजों के राज्य में रहता हूं, मुझे क्या अपनी जान जाने का डर नहीं है? सामान्य

दुकान कर गुज़र करता हूं, इन सब झगड़ों से मुझे क्या मतलब ? "

दुकानदारकी बातें अङ्ग्रेजी में तर्जुमा कर लाट साहबको सुनादी लाट साहब ने मुझ से कहा, " उससे कहो, अलिभिया को यद्यपि उसके मकान में नहीं पाया है, तो भी मेरा विश्वास है कि उस की सहायतासे ही किसी ने उसे कहीं छिपा कर रक्खा है। बदमाश हमें वह सब बातें नहीं बतलाता है। "

दुकानदार ने यह बात सुन माथे पर हाथ मार कर कहा, " परमेश्वर की सौगन्ध में कुछ नहीं जानता। "

क्रोध, क्षोभसे लाट साहब का मुंह लाल होगया, उनने कहा, " शहर की सब जगह अलिभिया को तलाश करना होगा, इस लिये कुल शहर उलट पुलट हो तो भी मुझे कुछ संकोच नहीं है, अपराधी को यदि पकड़ पाया तो मैं उसे कठिन दंड दूंगा; बदमाशों की इतना स्पर्द्धा और साहस है। "

हम दुकान के बाहर आये; वृद्ध ड्यूक की अवस्था देख बड़ा दुःख हुआ, उन का मुंह सूखा था, उनके दोनों पैर कांपते थे, सौ वर्ष का बूढ़ा चलते चलते जैसे बीच में थककर गिरजाता है, उनकी हालत प्रायः वैसी ही होगयी। उनकी अवस्था देख मैंने लाट साहब के कान में कहा, " ड्यूक महाशय को अपने साथ न ले चलकर मकान पर ही भेज देना उचित जान पड़ता है। उनकी मानसिक अवस्था अत्यन्त शोचनीय होगयी है, इससे अनुमान होताहै कि कुछ समय तक लेडी अलिभिया को और न पावेंगे तो वे निश्चय ही पागल होजावेंगे। "

मेरी बात सुन लाट साहब ने कहा, " आपने ठीक कहा है, मैं उन्हें घर ही भेजे देता हूं। " फिर उन ने ड्यूक से कहा " आप की लड़की की खोज में हम सब ही चले आये हैं, होसकता कि आपकी स्त्री एक दम घबड़ा गयी हों, उनको समझाना भी परम आवश्यक है। आपको एक गाड़ी में बिठलाये देता हूं आप घर जा अपनी स्त्री को समझाइयेगा; और आप भी हताश न हूजियेगा, जैसे हो, हम अलिभिया को तलाश कर लावेंगे। "

लाट साहब की बात सुन ड्यूक मेरी तरफ देखने लगे एवम् उन की स्त्री को समझाना जरूरी है यह मंजूर किया। मैंने फौरन एक गाड़ी मंगा ड्यूक को उसमें बिठला लाट भवनकी तरफ रवाने किया।

ड्यूक के चले जाने पर लाट साहब ने मुझ से पूछा, " मि॰गिब-सन् अब क्या करना चाहिये ? "

मैंने कहा, " जब आप मुझ से सलाह लेते हैं तब मेरी समझ में जो ठीक मालूम पडता है वही कहूं। हम दोनों जनों का एक साथ रहकर तलाश करना ठीक नहीं दोनों को अलग अलग दो तरफ रवाना होना ही अच्छा है । आप थाने में जा पुलिस इन्स्पेक्टर से सलाह कीजिये, मैं इतने में अपने पूर्व परिचित एक आदमी से मिल आऊं, वह आदमी इस जगहके सब बदमाशों की खबर रखताहै, वह सच्ची सलाह देसकेगा, वह मुझ से जो कुछ कहेगा वह सब आपको मैं सुना दूंगा; तब फिर क्या करना चाहिये यह स्थिर किया जावेगा। "

लाट साहब ने कहा, " आपकी यह युक्ति बहुत ठीक है, मैं अभी थाने में जाता हूं; इस मामले में मुझे इतनी शरम आती है कि क्या कहूं ? मार्सार और ओयाक्री बड़े दुखित हुए हैं, किन्तु मैं उन का कोई विशेष दोष नहीं देखता; सच है कि उनने अलिभिया का साथ कुछ मिनट के लिये छोडा था, किन्तु और कोई भी अलिभिया के साथ होता तो भी इसी तरह उसे साथ छोड़ना पडता। "

मैंने कहा, " इस विषय में मुझे भी कुछ सन्देह नहीं है। जो हो, मैं अब उस आदमी से मिलने जाता हूं। "

लाट साहबसे विदा ले मैं फौरन म्याक्सवेलके आफिस में पहुंचा। उस दिन मैं उसके यहां दूसरी बार उपस्थित होऊंगा, ऐसा ख्याल म्याक्सवेल को नहीं था, उसने मुझे अपने आफिस में फिर देखकर बडा ताज्जुब हुआ।

म्याक्सवेल के बोलने से पहले ही मैंने उससे कहा, " एक बड़े जरूरी काम के लिये मैं आपको तकलीफ देने आया हूं। "

म्याक्सवेल ने कहा, " मैंने मानलाक्री की तलाश में आदमी भेजा था, किन्तु वह मिला नहीं; मैंने अपने आफिस के एक किरानी को उसकी खोज में फिर भेजा है। "

मैंने कहा, " मैं ठीक उसी लिये आपके पास नहीं आया हूं एक दुर्घटना हुई है। अब क्या करना चाहिये, इस लिये सलाह करने आया हूं। "

अलिभिया के गुम होजाने की बात सविस्तार म्याक्सवेल को मैंने सुनादी। म्याक्सवेल ने बड़े ध्यान से मेरी सब बातें सुनी।

उसका चेहरा अत्यन्त उदास होगया; वह कुर्सी से उठकर उसी कमरे में टहलने लगा, और कहा "बडाही दुःसम्वाद है, किस के ऊपर तुम्हारा सन्देह होता है ?"

मैंने कहा, इस मामले में मूली हुसेन और उसका भाई इब्राहीम हुसेन जरूर शामिल हैं, यदि उनने अलिभिया को चोरी नहीं किया तो उनकी सहायता से यह काम पूरा हुआ है, इस सम्बन्ध में मुझे तनक भी सन्देह नहीं है।"

मेरी बात सुन म्याक्सवेल ने कुछ भी नहीं कहा, और सोच में डूबे हुए भावसे उसी कमरे में टहलने लगा। फिर उसने हठात् मेरे सामने खड़े हो कहा, "देखो गिवसन् मामला बड़ाही रहस्यपूर्ण है इस रहस्य को भेदना मेरी ताकत के बाहर है, तो भी मैंने जहां तक समझा है कह सकता हूं, कि इस काम में तुम्हारे ऊपर तक दोष लग सकता है। आज सुबह जो तुम मुझसे कहगये थे उससे मैं ऐसा अनुमान करता हूं; तुमने अरब के सुलतान से क्या प्रतिज्ञा कर मुक्ति लाभ की है वह मैं नहीं जानता; सुलतान के कैदखाने से छूटकर तुम किस लिये स्वदेश आये हो सो भी, मुझे मालूम नहीं, तब मैं इतना कह सकता हूं, कि यदि तुम इस युवती को बचाना चाहो तो जल्दी उपाय करो, देर होजाने पर फिर तुम उसे बचा नहीं सकोगे। यदि अलिभिया उन दो नर पिशाचों के हाथ में पड़गयी, तो सहज में उस का छुटकारा नहीं है, तुम सुनाम रखने की एवज में जीजान से प्रयत्न करो।"

म्याक्सवेल की बात सुनकर मानों मेरे शिर पर बज्राघात हुआ, मैं मेज पर शिर रख गम्भीर चिन्ता में डूबगया। उसने जो बातें कहीं थीं वह सब युक्ति सङ्गत थीं, इस में मुझे तनक भी सन्देह नहीं था, समझा मेरे सामने भीषण परीक्षा उपस्थित है।

मुझे एक दम सुस्त देख म्याक्सवेल ने कहा, "इस समय तुम को इस तरह सुस्त होने से काम नहीं चलेगा, इस समय साहसही तुम्हारा एक मात्र अवलम्बन है। इस समय यदि मानालाकी से एक बार भेट होजाती, तो उस से बडा काम निकलता।"



पन्द्रहवां परिच्छेद।

दश हज़ार रुपये इनाम।

हम उस समय जिस विपत्त में थे, उस विपत्तमें मानलाकीके सिवाय और किसी के द्वारा कुछ नहीं होसकताथा, यह मैं भी जानता था, कांटेके द्वारा कांटा निकाला जाता है; सुना है कि पुलिस चोर पकड़नेके लिये पैसा खरच कर चोरों को हिला रखती है, किन्तु इस समय हटात् मानालाकी को कहां पावें ? उसकी खोज में दो बार आदमी भेजा, वह नगर में होता तो निश्चय ही म्याक्सवेल के यहां आता।

मैं मनही मन यह सब सोच रहा था, ऐसे समय में आफिस का दरवाजा खोल एक आदमी मेरे सामने आ खड़ा हुआ। उसे देखते ही हम दोनों ने प्रसन्नता प्रकटकी। आया हुआ मनुष्य मानालाकीहै।

मानालाकी का जीवन बहुत विचित्र घटनाओं से पूर्ण है, ऐसा अद्भुत मानव चरित्र पृथ्वी पर बहुत ही कम देखने में आवेगा, सुतराम् उसकी दो चार बातों का परिचय देना जरूरी है, मैं उसके विचित्र जीवन के विषय में जो बातें जानता हूं, वह अभी प्रकट करूं तो एक बड़ी पुस्तक तयार होगी, यदि समय मिला तो फिर वे सब बातें प्रकट करूंगा, किन्तु सब उन बातोंके ऊपर विश्वास नहीं करेंगे।

मानालाकी नाम सुनकर अनुमान होताहै कि पाठक समझ गये होंगे कि वह ग्रीक जाति का आदमी है। उसका शरीर असाधारण दीर्घ है, उसके शरीर में भी असाधारण शक्ति है; उसे रूपवान कहने में भी अत्युक्ति नहीं होगी; वह बिल्ली के समान चञ्चल है, सिंह के समान साहसी है, शृगाल के समान धूर्त्त है। उस का प्रधान गुण यह है कि वह बड़ा ही शरणागत वत्सल है। यदि, तुम उस से सहायता की प्रार्थना करो तो वह जी जान से तुम्हारा काम पूरा करेगा, यदि उस से शत्रुता करोगे तो वह तुम्हारा सर्वनाश करेगा। किसी प्रकार के दुष्कर्म में उसे संकोच नहीं है, किन्तु वह बिना कारण के किसी की क्षति नहीं करता। उसकी जीवका क्या है सो कोई नहीं जानता। पृथ्वी के सब देशों में वह जाया करता था, किन्तु किसी एक जगह दश दिन एक साथ नहीं ठहरता, एक बार इटाली देश में मैं उसका कोई काम करसका था, तब से ही वह मेरे साथ

मित्रका सा व्यवहार करता है। भद्र समाज में उस को अपना मित्र कह भी नहीं सकता, किन्तु विपत्त पड़ने पर उसको बार बार मित्र ही कहना पड़ता है।

मानालाकी अपना बायां हाथ पाजामे की जेब में दिये हुए और दाहिने हाथ से मूंछों पर ताव देता हुआ मेरे सामने आखड़ा हुआ। और हम दोनों को सम्बोधन कर अङ्गरेजी में कहा, "नमस्कार, जो से ने आज मुझ से कहा था, आप लोगों ने मुझे याद किया है, इस गरीब को हठात क्यों याद किया है, यह जानना चाहता हूं।" बात पूरी कर वह एक सिगरेट ले बडे आराम से पीने लगा।

हमने किस लिये उसे बुलाया था, वह म्याक्सवेलने उसे संक्षेप में सुना दिया, और कहा, "इस विपत्त में यदि कोई हमारा उपकार कर सकता है तो वह तुम हो; सब कैफियत सुना चुका, अब कहो क्या करना चाहिये?"

सिगरेट पूरी कर मानालाली ने मुझसे पूछा, "मि:गिवसन् जिस स्त्री को तलाश कर आप नहीं पासके, वह क्या आपके देश के किसी बड़े आदमी की लडकी है? अनुमान होता है कि उसके बापके पास रुपया बहुत है।

मैंने कहा, "हां उसके बाप हमारे देश के एक बहुत बडे आदमी हैं, और वह युवती परम सुन्दरी है।

मानालाकी इतनी देर से खड़ा था, अब वह एक कुर्सी पर बैठ गया, फिर गम्भीर स्वर में उसने कहा, "वह युवती भालियसी की दुकान पर कुछ चीजें खरीदने गयी थी, और उसके साथी दोनों आदमी उसे अकेला छोड चुरुट खरीदने गये थे, उनने लौटकर आ देखा, कि युवती गुम हो गयी है। भालियसी इतना भला आदमी है कि उसके षड्यन्त्र से वह युवती गुम हुई है इस बात पर मुझे विश्वास नहीं होता। मि:गिवसन् का यह विश्वास है कि इब्राहीम और उसका भाई इस षड्यन्त्र में शामिल हैं। यह सत्य होसकता है। मैं इब्राहीम को एक दफे खूब समझूंगा; दो वर्ष पहले उसने मुझे आलजिरिया में बड़ी विपत्त में पटका था, यह बात मैं कभी नहीं भूलूंगा।

मैंने कहा, यह सब ठीक है किन्तु उस युवती को किस तरह तलाश कर निकाला जासकता है? यदि तुम उसे लासको तो तुम को दस हज़ार रुपये के विलक्षण लाभ की सम्भावना है।

मानालाकी ने कहा, मि:गिवसन् आप मेरे मित्र हैं, जिस लड़की के खोजाने की बात हो रही है, सुन चुकाहूं कि वह भी आपके मित्र की लडकी है, मैं यदि आप सरीखे उपकारी मित्रका कुछ उपकार करसकूं, तो अपने को धन्य समझूंगा, पुरुस्कार के पाने का मैं इतना लालची नहीं हूं, यदि मैं उस युवती को बदमाशों के फंदे में से निकाल सकूं तो मेरा परिश्रम सफल होगा।"

मैंने कहा, वह युवती जिस दुकान से अदृश्य हुई है, हमने उस दुकान की खानातलाशी ली थी, बाज़ार की एक भी दुकान देखने से बाकी नहीं रही, किन्तु उसे कहीं भी नहीं पाया, जिस से पूछा, वही कहता है कि उसे देखा नहीं।"

मानालाकी ने कहा, "देखा होगा तो भी वे लोग यह बात स्वीकार नहीं करेंगे, इब्राहीम से सब डरते हैं, कौन उस के विरुद्ध बात कहसकता है? अब आप की अनुमति होने से ही मैं उसकी खोज में एक दफे बाहर निकलूंगा, गुप्त अनुसन्धान के सिवाय उस का पता लगना कठिन है, मैंने इस काम में हाथ दिया है यदि वे यह जान जावेंगे तो फिर वे सावधान होजावेंगे।"

मानालाकी कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ, और मुझ से पूछा, "आप कहां मिलेंगे?"

मैंने कहा, "मैं तो एक जगह नहीं रहता, तुम मुझसे कब मिलना चाहते हो?"

मानालाकी ने कहा, "यह कह नहीं सकता, दो घंटे में लौट कर आसकता हूं और दस घंटे भी लग सकते हैं।"

मैंने कहा, यदि तुम दो घंटे बाद लौट सको तो मैं आपको इसी जगह मिलूंगा। मैं बाहर का काम कर दो घंटेमें इस जगह आऊंगा।"

मैंने कहा, "ठीक बात है मैं भी दो घंटे बाद इसी जगह आऊंगा आशा करता हूं कि सुसम्वाद ला सकूंगा।"

मानालाकी हम से हाथ मिला गुन गुन कर गाता हुआ बाहर हुआ। उस के चले जाने पर म्याक्सवेल ने मुझ से कहा, "मानालाकी यदि यह काम न कर सका तो फिर आशा भी नहीं, पृथ्वीका सर्वश्रेष्ठ गोयन्दा भी गोयन्दागिरी में मानालाकी के समान नहीं है, कितना ही कठिन काम क्यों न हो, मानालाकी के प्राणपण प्रयत्न करने से वह पूरा होने से बाकी नहीं रहता, तो दूसरे की अपेक्षा इस को अधिक पारितोषक देना पड़ेगा।"

मैंने कहा, यह विचार मैं करूंगा, उसे खुश करनेके लिये रुपये खर्च करने में कंजूसी नहीं कीजावेगी। अब मैं जाता हूं, केवल मानालाली के ऊपर निर्भर रह मैं बैठा नहीं रहसकता, मैं भी कुछ गोयन्दागीरी कर आऊं, उस से कुछ विशेष फल मिलेगा ऐसा ख्याल नहीं है।

मैंने खड़े हो टोपी पहिन बाजार का रास्ता लिया, कुछ नये समाचार मिलें यह जानने के लिये सबसे पहले लाट भवन की तरफ रवाने हुआ।

लाट भवन में पहुंच देखा कि, सब ही हताश हो बैठे हैं। ड्यूक पत्नी कातर भाव से रो रही हैं, ड्यूक की भी मानसिक अवस्था उसी तरह से शोचनीय है। मैंने लाट साहब को मानालाकी की सब बातें सुनादी और यह भी कह दिया कि, "मानालाकी के ऊपर निर्भर रह मैं बैठ नहीं सकता, मैं अभी बाहर जाता हूं।

लाट साहब ने कहा, "हम आपके भरोसे बैठे हैं, यदि कुछ सुसम्वाद मिले तो तुरन्त हम को सुनाइयेगा।"

लाट भवन में और समय नष्ट न कर मैं भालीयसी की दुकान की तरफ चला, देखा, भालियसी दुकान के सामने खड़ा है, उसने मुझे देख हँसकर पूछा, "मेम साहब का कुछ पता लगा क्या?"

उस की हँसी देखकर मुझे बडा क्रोध आया, मैंने कहा, "अभी तक पता नहीं लगा है, मैं जानता हूं कि इस में तुम भी शामिल हो यह बात साबित करने में कुछ देर नहीं लगेगी, तब तुम को मालूम होगा।

भालियसीने कहा, "आप अन्याय करते हैं, मैं कुछ खबर पाता तो फौरनही आपको सुना देता, सच्ची बात छिपानेमें मुझे क्या फायदा सच्च कहताहूं कि मैं कुछ नहीं जानता, मैं गरीबहूं, गरीबको ही उत्पीडन सहना पडता है, इस लिये आप लोगों ने मुझे उत्पीडन किया, पृथ्वी का यही नियम है।"

मैंने उस से और बातें करना अच्छा नहीं समझा, फिर म्याक्सवेल के आफिस की तरफ रवाने हुआ। वहां मानालाकीको नहीं देखा।

म्याक्सवेल ने मुझ से कहा, "तुमको इतना उतावला होना ठीक नहीं, एसे कामोंमें जल्दी करने से कुछ फल नहीं होता, वरन काम बिगड जाता है, मानालाकी के लौट आने पर कुछ न कुछ नयी खबर जरूर मिलेगी।"

मैंने कहा, तुम मुझ को उतावला होने से मना करते हो सही, किन्तु मेरे मन का भाव जान जाते तो ऐसा उपदेश नहीं देते, मैं किसी तरह भी स्थिर नहीं रहसकता।

म्याक्सवेल ने कहा, " उतावले होने से क्या फल होता है? मानालाकी जब तक न लौट आवे तब तक तुम बैठे बैठे चुरुट पीयो बिलायती मेल में मुझे दो तीन चिट्ठी भेजनी हैं, डांक का समय हो आया है, मैं चिठियां लिखलूं।"

म्याक्सवेल ने चिट्ठी लिखना शिरू किया, मैं चुरुट पीने लगा, आध घंटा होगया तथापि मानालाकी नहीं आया। मेरी उत्कण्ठा की सीमा न रही, मैं और बैठा न रहसकने के कारण वरामदे में आस्थिर चित्त से घूमने लगा, और आध घंटे बाद मानालाकी मेरे सामने आ उपस्थित हुआ, कमरेमें आ उसने दरवाजा बन्द कर दिया।

मैंने तुरन्त ही पूछा, " मानालाकी कुछ नयी खबर है क्या?"

मानालाकी ने कहा, " नयी खबर बिना लिये ही क्या मैं लौट आया हूं? आपने जो अनुमान किया था, वही ठीक है। यह इब्राहीम का ही काम है; मैंने उनको देखा है।"

मैंने पूछा, " किसकी बात कहते हो?"

मानालाकी ने कहा, " इब्राहीम हुसेन वा हासिम और मूली हुसेन इनही दोनों बदमाशों की बात कहता हूं।"

मैंने पूछा, " अलिभिया क्या उनके पास है?"

मानालाकी ने कहा, "यह खबर अभी तक ठीक ठीक नहीं लगी है, सम्भवतः उनने उसे छिपाया है।"

मैंने पूछा, " यह बात तुम ने कैसे जानी?"

मानालाकी ने कहा, " मैंने कौनसी बात किस तरह जानी यह तुम्हें बतलाने से फायदा क्या? किन्तु आप यह ध्यान रखियेगा कि मैं केवल अनुमान से ही कोई बात मुंह से नहीं निकालता। मेरे जो सब धार्म्मिक बन्धु हैं, उनसे मुझे खबर लगी है, मैं जिस कामको अकेला नहीं करसकता, उस में उन लोगों की सहायता लेता हूं?"

मैंने कुछ विचार कर कहा, " मानालाकी तुम को तो सब ही खबर मिलगयी। अब यह बतलाओ कि हमको क्या करना चाहिये?"

मानालाकी ने कहा, " उन दोनों बदमाशों को सबसे पहले गिरफ्तार करना जरूरी है, आज रात को मैं आप के साथ एक अड्डे में चलूंगा, उस जगह हम इन्हें गिरफ्तार करेंगे।"

मैंने पूछा, "रातको तुम कहां मिलोगे, और कितनी रात गये।"

मानालाकी ने कहा, रात के आठ बजे के समय तुम ओरियण्टल होटल के सामने उपस्थित रहना, उस जगह से मैं आपको साथ ले इब्राहीम हुसेन और उसके भाई की खोज में चलूंगा। यदि मौका मिला तो उस सुन्दरी को भी खोज लेंगे।"

मैंने पूछा, "इस षड्यन्त्र में भालियसी भी शामिल है वा नहीं?"

मानालाकी ने कहा, "यह पीछे मालूम होगा; भालियसी यदि इस में शामिल हुआ तो, उसकी खैर नहीं है, मैंने भी उस से यह कह दिया है।"

मैंने कहा, "इस बीच में मूलीहुसेन और इब्राहीम कहीं भाग न जावें।"

मानालाकी ने कहा, "यह बात मैंने पहले ही सोचली थी, इस लिये उनके पीछे गोयन्दा लगा आया हूं।"

मैंने कहा, "मानालाकी मेरे मन में बडी बुरी बुरी बातें पैदा होती हैं, वे सब मैं तुम्हें सुना नहीं सकता; जब तक काम पूरा न होजावेगा तब तक मैं स्थिर नहीं रहसकूंगा।

मानालाकी ने कहा, आपको इतना अधीर होने से काम नहीं चलेगा, अति ही सावधान हो चारों तरफ सोच विचार कर काम करना होगा, यदि कुछ भी भूल की तो सब परिश्रम व्यर्थ जावेगा। आप ठीक रात के आठ बजे मुझ से मिलना भूलियेगा नहीं।"

मानालाकी के चले जाने पर मैं लाटभवन की तरफ रवाने हुआ; उस जगह मेरे मित्र सब व्याकुलभाव से मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे।

लाटसाहब ने कहा, "कुछ सुसम्वाद है क्या ? क्या कर आये तुरन्त सब बातें कहिये, हम और उद्वेग सह नहीं सकते।"

मैंने जवाब दिया, "अभीतक कोई विशेष सम्वाद नहीं मिला; तो भी अलिभिया को चोरी करले जाने का जिनके ऊपर सन्देह है, उनके पीछे गुप्तचर लगाये हैं; वे जिस मकान में रहते हैं, आज रातको उसकी खानातलासी लेने का विचार किया है।"

ड्यूक ने कहा, "मि॰गिविसन् तुम हमारे लिये बहुत कुछ कर रहे हो, परमेश्वर तुम्हारे इस काम में सहायक हों, वे हमारे देहों में जान दें।"

लाटसाहब ने कहा, " अलिभिया को चुराने में क्या उद्देश्य है, सो कुछ मालूम हुआ ? चोरों ने क्या यह काम रुपये के लोभ में किया है ?"

मैंने इस प्रश्न का कुछ भी उत्तर नहीं दिया, मैं जो सब बातें जानता था वह लाट साहब से कहना असम्भव था, लज्जा से मैं शिर नीचा किये बैठा रहा।

ड्यूक ने कहा, मेरे मन में ऐसा ख्याल होता है कि कुछ रुपये के लोभ से बदमाशों ने मेरी लड़की को चुराया है; अलिभिया को पाने के लिये मुझे उन्हें क्या देना चाहिये ?"

मैंने कहा, " आज रातको जो आदमी मेरे साथ अनुसन्धान के लिये जावेगा, वह यदि अलिभिया की खोज लगा सका, तो मैं उसे पुरस्कार देने को कह चुका हूं; आप से बिना पूछेही मैं उसे पुरस्कार देने का वचन दे चुका हूं। आशा करता हूं कि आप इस लिये असन्तुष्ट नहीं होंगे।"

ड्यूक ने कहा, " आपने अच्छा काम किया, आप उस से कह दीजियेगा कि वह अलिभिया का उद्धार कर सकेगा तो उसे मैं आठ हजार रुपये पुस्कार दूंगा।"

लाटसाहब ने कहा, " मैं उसे दो हजार रुपये और दूंगा; अनुमान होता है कि यह दशहजार रुपये थोड़े नहीं होंगे।"

मैंने कहा,"यह पुरस्कार बहुत है, मैं तो इस से आधे में भी उसे खुश कर सकता हूं।"

ड्यूक ने कहा,"नहीं नहीं उसे असन्तुष्ट न करना, मिः गिबसन् तुम मेरे लिये जो कुछ कर रहे हो वह ऋण मैं इस जीवन में चुका नहीं सकूंगा।"

मैंने कहा, " आप यह बात न कहिये, आप मेरे उपर जैसा अनुग्रह करते हैं, उसके एवज में आपका कुछ काम करने का यत्न कर मैं अपने को धन्य समझता हूं।"

बात ही बातों में सन्ध्या के सात बज गये, मुझे बाहर जाने की तयारी करते देख लाटसाहब ने मुझे भोजन कर जाने के लिये कहा, उन की बात न टाल सकने के लिये मैंने कुछ खा लिया एवम् पाकेट में एक पिस्तोल रख पौने आठ बजे लाट भवन से बाहर हुआ। उस समय आकाश में बादल खूब हो रहे थे, चारों तरफ

अन्धेरा छाया हुआथा, वर्षा होनेकी सम्भावना थी; किन्तु इस दुर्योग की तरफ ध्यान न दे मैं कांपते हुए हृदय से ओरीयण्टल होटल की तरफ बढ़ने लगा। होटल के सामने पहुंच कर देखा कि मानालाकी मेरी प्रतीक्षा कर रहा है।

मानालाकी ने कहा, " आप ठीक समय ही आये हैं, अब काम के लिये चलना होगा, साथ में कोई हथियार लाये हैं ? "

मैंने हँस कर कहा, " तुम मन में क्या समझते हो, ऐसे काम के समय मैं क्या हथियार छोड आऊंगा ? मेरे पास पिस्तोल है। "

मानालाकी ने कहा, पिस्तौल लाये हो यही अच्छा किया, बुरी जगह जाना होगा, विपत्त पड़ना कुछ आश्चर्य्य नहींहै, सुतराम् हथियार साथ रखना जरूरी है। "

मैंने कहा, " मानालाकी, तुम यदि ड्यूक-कन्या का उद्धार कर सकोगे तो तुम्हें पुरस्कार मिलेगा, यह बात मैं तुम से पहले ही कह चुका हूं, किन्तु तुम्हें कितना पुरस्कार मिलेगा यह नहीं कहा था, मैं स्थिर कर आया हूं, कि काम पूरा करसके तोतुम्हें दश हजार रुपये पुरस्कार मिलेंगे। "

दश हजार रुपये की बात सुन कर मानालाकी के चेहरे पर प्रसन्नता दिखलायी दी। अनुमान होता है कि इतना रुपया उसने इस जीवन में कभी नहीं देखा। किन्तु उस ने उत्साह दमन कर मुझ से कहा, " मिःगिवसन् आप पुरस्कार का लोभ न दिखलाते तो भी मैं प्राणपण से यह काम करता; आप मेरे मित्र हैं आपके लिये सब कुछ कर सकता हूं। "

मैं मानालाकी के साथ उस अन्धेरी रातमें पहाड़ पर चढने लगा, अन्धेरे में रास्ता दिखलायी नहीं पडताथा, कुछ वर्षा होनेसे पहाडपर रपटन होगयी थी, पग पग पर पैर खिसलता था, अन्त में पर्वत पर पहुंच हम एक तरफ चलने लगे; लेडी अलिभिया के समान बड़े घर की लड़की ऐसे कीचड के स्थान में बन्द है, यह विचार कर मन में बडा कष्ट हुआ।

मानालाकी ने कहा, " किसी तरह का शब्द न कर चुप चाप बहुत ही धीरे धीरे हमको चलना होगा; बदमाश अति धूर्त हैं, यदि उनको खबर हमारे यहां आने की लगजावेगी तो फिर उन के पकडने की आशा नहीं रहेगी। "

घूमते घूमते हम एक घरके पास पहुंचे, मानालाकी ने मेरे कान में धीरे से कहा, " यही वह मकानहै, इसी जगह हुसेन लोग मिलेंगे तिस पर वे ही जीवित रहेंगे वा हम ही जीवित रहेंगे।"

सोलहवां परिच्छेद।

शून्य पिञ्जर।

मानालाकी मुझे पहाड के ऊपर जिस घर के सामने लेगया था, वह घर पहाड़ के सबसे ऊंचे स्थान पर बनाथा, सुतराम् उस में चढ़ कर जाना बड़ा कठिन था, ऐसे भद्दे, जीर्ण, छोटे, दुर्गन्ध मय घर में अलिभिया के समान चिर-सुखी क्रोड़पति की लड़की बन्दी हो दिन काटती है ऐसा ख्याल कर मेरा हृदय विदीर्ण होने लगा।

बडे कष्ट से मैंने अपनेको समझा मानालाकी से पूछा, " अब क्या करोगे ? हम अलिभिया का उद्धार करने को आये हैं यह जानते ही वे उसे ले किसी गुप्त स्थान से भाग जावेंगे।"

मानालाकीने कहा, कहां भागकर जावेंगे चारों तरफ मेरेआदमी हैं; घर में पहुंचकर मैं उनके ऊपर हमला करूंगा; आप पिस्तौल ले दरवाजे पर पहरा देना।"

इस समय मानालाकी के परामर्शानुसार ही मुझे चलना होगा, किन्तु उसका परामर्श मुझे बिलकुल ही ठीक नहीं मालूम हुआ; क्योंकि घर का दरवाजा खुला नहीं मिलेगा, दरवाजा तोडते २ वे लोग अलिभिया को ले किसी गुप्तद्वार से निकलजावेंगे तो हम इस अन्धेरी रात में कैसे पता लगावेंगे, इसके सिवाय एक और विपत्त की आशंका है, यह हुसेन दोनों भाई जैसे दुर्वत्त पापाचरण में पक्के हैं, इस से भागने के समय अलिभिया की हत्या कर जाना भी सम्भव है, ऐसा होने से हमारे पश्चाताप की सीमा न रहेगी। इतनी चेष्टा, यत्न, परिश्रम सबही व्यर्थ जावेगा। इस काम में हम जिब्राल्टर की पुलिकी सहायता ले सकते थे, किन्तु हमारी यह इच्छा नहीं थी, क्योंकि हम जानते थे, यह बात साधारण मनुष्यके कान में पहुंचने से अलिभिया के प्रति झूठा कलंक लगावेंगे। इस लिये किसी तरह सर्वसाधारण में यह बात प्रकट करने की नहीं। सुतराम् हमने यथा सम्भव गुप्तभावसे अलिभिया का उद्धार करनेके लिये संकल्प किया था।

हम सामने के दरवाजे से घर के भीतर न जा सके, क्यों कि सामने का दरवाजा भीतर से बन्द था; तब हम दोनों घर के बगलवाली एक गली से मकान के पीछे पहुंचें; इस घर के पीछे की तरफ कई एक खिडकी देखीं, किन्तु घर के उस तरफ कोई गुप्त दरवाजा नहीं देखा, सुतराम् मानालाकी ने खिडकी तोडने के लिये अपनी जेब में से एक लोहे का हतोडा और दो एक टांकी बाहर निकालीं यह खिड़की लोहे के सीखचेदार किवाडों से बन्द थी। मानालाकी ने थोडी ही चेष्टा से एक किवाड अलग कर दिया, इस काम में उसने मेरी सहायता नहीं ली। मैं घर की आड में खडा हुआ उसका काम देख रहा था। इस ढङ्ग के हलके हाथ से मानालाकी ने किवाड तोड डाला कि इस विद्या में पेशेदार चोर डाकू भी मानालाकी से हार मानेंगे।

किवाड़ अलग कर लेने पर मानालाकी ने मुझे हाथ के इशारे से बढने के लिये कहा; उस समय बादल हट गये थे और चन्द्रमा उदय हो रहा था, उस चन्द्रमा की चांदनी में पर्वत की शोभा बड़ी अच्छी मालूम होती थी किसी तरफ मनुष्य या किसी जीव का शब्द सुनाई नहीं देता था, केवल हम दो आदमी ही रात के समय शान्तिहीन प्रेत के समान इस पर्वत पर विचरण कर रहे थे। किन्तु उस समय प्रकृति की शोभा देखने का मौका हमको नहीं था। मानालाकी के इशारे से मैं उसके साथ उस अलग किये हुए किवाड के रास्ते से उस मकान में पहुंचा। ऐसा दुःसाहस का काम कभी इस जीवन में किया है वा नहीं इस में सन्देह है, मेरी छाती धडकने लगी; मैंने अपनी पिस्तोलें जकड कर पकड ली।

हम जिस घर में पहुंचे, उसका सा दुर्गन्धमय घर कभी देखा नहीं। मुझे ख्याल हुआ, इसकी तुलना में सुलतान का कारागार स्वर्ग तुल्य है। इस घर में कभी झाडू भी लगी है वा नहीं इस में भी सन्देह है। इस घर में कई कोठरियां थीं, किन्तु घर में पहुंच कर किसी तरफ से भी मनुष्य की सांस सुनाई नहीं दी; उस घर में कोई है, ऐसा ख्याल नहीं हुआ। मुझे सन्देह हुआ कि बहुत बुद्धि काम में लाने से मानालाकी ठगा गया; वह भूल कर इस जगह आया है, व्यर्थ इतना परिश्रम किया यह विचार कर मुझे बड़ा पश्चाताप हुआ।

मैंने मानालाकी के कान में पूछा, "ढङ्ग क्या है मानालाकी! इस घर में तो कोई नहीं है! अथच तुमने कहा था कि इस मकान पर पहरे वाले नियुक्त किये हैं; तुम्हारे आदमियों ने खाली मकान का पहरा दिया न? उन लोगों की खूब बहादुरी है। जो हो!"

मानालाकी ने कुछ क्रोधित हो कहा, इस मकान में हुसेन लोग हैं यह जान कर मैंने पहरे वाले नियुक्त किये थे। किन्तु देखता हूं कि मेरी सावधानता का कुछ फल नहीं हुआ; जिनके हाथ में इस काम का भार दिया था; वे क्या नमकहराम हैं? यदि ऐसा ही, है तो उन हतभागों का मेरे हाथ से छुटकारा नहीं है; मैं क्या चीज़ हूं वे यह जान जावेंगे।"

उस खाली घर में व्यर्थ खड़े हो अपना समय नष्ट करना उचित नहीं समझ बाहर आये; मेरा मन एक दम हताश होगया। मन में बड़ी आशा थी कि अलिभिया को शत्रु के हाथ से निकाल उसके मा बाप के हाथ में सौंपूंगा, किन्तु देखा, वह आशा जाती रही। अलिभिया इस समय कहां है और कितने कष्ट से समय काट रही है यह कैसे अनुमान करूं? उस रात में न मालूम वह शत्रु के हाथ से कितनी यन्त्रणा पा रही होगी, दुख से मेरा हृदय विदीर्ण होने लगा, मानालाकी के साथ बातों में भी मेरा मन नहीं लगा।

मुझे उदास देख मानालाकी ने कहा, "आप इतने हताश क्यों होते हैं? ऐसा कठिन काम एक दफे की चेष्टा से ही सफल नहीं होता; आप मेरे ऊपर विश्वास कीजिये, जिस काम में मैं हाथ डालता हूं उसे बिना पूरा किये छोड देने का मुझे अभ्यास नहीं; मेरे यह दो हाथ देखते हो न, यह हाथ नहीं वज्र हैं; इन हाथों से ही मैंने कितनी ही लोहे की सन्दूकें तोडीहैं। कितनेही भीषण-प्रकृति के गुण्डों के छुरी मारी है, कितनेही तलवारों के निशाने व्यर्थ कियेहैं, सहस्त्र विपत्तोंसे भी किसी दिन निराशनहीं हुआ, तोभी यदि आप मन में ऐसा समझें कि मैंने आपके साथ विश्वासघातकता की है, तो मैं सहस्त्रवार कहूंगा, आपने इतने दिन में भी मुझे नहीं पहचाना। मैं सब प्रकार के दुःष्कर्म्म कर सकता हूं। किन्तु विश्वासघातकता मेरी सामर्थ से बाहर है; कापुरुष ही विश्वासघातकता करते हैं, आप जानते हैं, मैं कापुरुष नहीं हूं, मैं आपका चिरकृतज्ञ हूं, यदि उस ऋण को परिशोध न कर सका तो मेरा जीवन वृथा है।"

मैंने कहा, " मानालाकी तुम में कितनी शक्ति है, वह मैं जानने के कारण ही इस रात के समय में ऐसी दुर्गम शत्रुपुरी में आया हूं; तुम पर मेरा अगाध विश्वास न होता तो यह गुरुतर काम तुम्हारे हाथ में मैं कभी न सौंपता । मैं जानता हूं तुम्हारी चेष्टा व्यर्थ नहीं जावेगी, तुम्हारा लक्ष्य व्यर्थ नहीं जावेगा। किन्तु इस जगह आकर देखता हूं कि पिञ्जर शून्य पडा है, पक्षी उडकर भाग गया है। ऐसा क्यों हुआ, तुम्हारी इतनी चेष्टा किस कारण से निष्फल हुई, यह न समझने के कारण तुम्हारे ऊपर कुछ सन्देह हुआ था, किन्तु तुम्हारी बातें सुनकर वह सन्देह दूर हुआ, अब क्या करोगे, वह करो।"

मानालाकी ने कहा, " आपकी बात सुनकर खुश हुआ, इस काम में मानालाकी के समान और कोई योग्य पुरुष आप नहीं पाओगे

मैंने कहा, " मैं अलिभिया के बाप से कह आया हूं, कि अलिभिया के सम्बन्ध में बिना कुछ खबर लिये मैं अपना मूंह नहीं दिखलाऊंगा; ध्यान रखना, कि मेरी बात रहे, और तुम्हारे हाथ से हटा कर पुलिस के हाथ में इस काम का भार न देना पडे।

मानालाकी ने उत्तेजित भाव से कहा, " पुलिस में मेरे आदमियों के समान आदमी हैं क्या ? वे सरकार का निमक खाते हैं, काली पोशाक पहिन सडक पर घूमते हैं, और किसी के अपराध में किसी को पकडकर ले जाते हैं, उन लोगों की बुद्धि से यदि काम लिया जावे तो ड्यूक महाशय इस जीवन में फिर अपनी लडकी को नहीं देखेंगे। यह काम हल्ला मचाने का नहीं है, इस पहाड के ऊपर मेरे एक मित्र हैं उनकी सामर्थ बडी विचित्र है, जिस जगह किसी की भी पहुंच न हो, उस जगह वह सहज में चला जाता है; यदि वह मेरी सहायता करे तो काम बहुत सहज होजावेगा; वह मुझे बहुत चाहता है, मेरी बात को वह टाल नहीं सकेगा। मैं अभी उसके पास जाऊंगा।"

मैंने कहा, " मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा; और तुमने जिसके हाथ में इस मकान का पहरा दिया था, उसके साथ एक बार बातें करनेकी मेरी इच्छा है।"

मानालाकी ने कहा, " यह फिर होगा, पहले चलो मेरे मित्र के पास चलना चाहिये।"

हम दोनों एक संकीर्ण गली में होकर पर्वत के ऊपर की दूसरी गली में चले।

मानालाकी ने कहा, "ऐसा भद्दा रास्ता और कहीं नहीं देखा।"

मैंने कहा,, "इतना कष्ट सहकर भी, ऐसे कुस्थान पर आकर भी यदि कार्य—सिद्धि हो, तो यह परिश्रम और कष्ट सफल होगा।"

सत्रहवां परिच्छेद।

कनष्टानिडिस।

गली के सामने एक छोटा घर है उस घर के दरवाजे के पास पहुंच मानालाकी ने मुझे ठहर ने को इशारा किया एवम् उस घरके बाहर की तरफ का कड़ा पकड़ कर हिलाया। देखा, उसके इस कड़े के हिलाने में भी विशेषत्व है, हमारे यहां जैसे सब लोग कड़ा हिलाते हैं, उसका कड़ा हिलाना ठीक उसी तरह का नहीं है। कड़ा हिलाकर मानालाकी ने एक प्रकार शीशी शब्द अपने मुँह से किया, पांच वार शीशी शब्द कर चुकने पर घर के भीतर से एक घंटा बजा एवम् साथ ही दरवाजा भी आधा खुला, उस आधे खुले हुए दरवाजे में से एक चेहरा बाहर हुआ, उस जगह अन्धकार होने के वजह से यह नहीं मालूम हुआ कि वह चेहरा स्त्री का है वा पुरुष का। मानालाकी ने आये हुए मनुष्य के कान में न मालूम क्या कहा, तब अधखुला दरवाजा उसने पूरा खोल दिया।

मैंने मानालाकी के साथ उस घरमें प्रवेश कर चारों तरफ देखा, घर को सजा हुआ देख कर बडा ताज्जुब हुआ, ऐसी भद्दी जगह यह छोटासा मकान इतना सजा हुआ है कि बिना देखे कोई भी इस की सजावट पर विश्वास नहीं कर सकता। देखा, पृथ्वी भरके राजाओं के यहां जो सब आश्चर्य सामिग्री मिलतीं हैं वह सब इस जगह थीं, किन्तु इस जगह के स्वामी को देखकर मुझे और भी ताज्जुब हुआ। ऐसा मनुष्य जिन्दगी भर में और कभी देखा नहीं। घर के मालिक का शरीर बहुत ही छोटा, मुंह पर डाढी मूंछ नहीं थी। उसे देखकर यह अनुमान नहीं किया जाता था कि इसकी उमर क्या है। उसने मुझे अपने यहां रात के समय देखकर बिन्दुमात्र विस्मय प्रकट नहीं किया, केवल तीक्षण दृष्टि से एक बार मेरी तरफ

देखा, फिर ग्रीक भाषा में मानालाकी का सत्कार किया । उससे समझा कि, इन लोगोंमें आपस में गहरी मित्रता है, घर के मालिक ने हम लोगों को बैठने के लिये कहा और चुरुट पीनेको हमें दिये।

चुरुट पीते पीते मानालाकी ने हमारा उद्देश्य घर के मालिक को सुनाया। घर के मालिक का नाम कनूष्टानिडिस है । यह भी जाति में ग्रीक है ?

कनूष्टानिडिस इब्राहीम हुसेन का नाम सुन अत्यन्त उत्साहके साथ सम्हल कर बैठ गया । इस से मालूम हुआ कि यह भी माना-लाकी के समान हुसेन दोनों भाइयों का शत्रु है.। मानालाकीकी बात पूरी होने पर कनूष्टानिडिस ने कहा, " इतनी रात गये आप मेरे पास क्यों आये हैं, समझ में नहीं आता, मैं जो आप की कुछ सहायताकर सकूंगा, ऐसे तो ख्याल नहीं। "

मानालाकी ने कहा, " हम जिस लिये आये हैं वह यह है कि, मेरा विश्वासहै, उन लोगों ने उस युवतीको इस जगह से हटा दियाहै

कनूष्टानिडिस ने कहा, " तुम्हारा क्या यह विश्वास है कि वे लोग उसे साथ ले इस जगह से चले गये हैं ? "

मानालाकी ने कहा, " हां मेरा तो ऐसा ही ख्याल है। "

मैंने कहा, " कि तुम्हारा ऐसा ख्याल है यह तो तुम ने मुझ से नहीं कहा था, ऐसा ख्याल किस कारण तुम्हारा हुआ ? "

मानालाकी ने कहा, " सो बतलाता हूं सुनो। सुलतान के गुप्त-चरों ने इङ्गलेण्डमें तुम्हारा पीछा कियाथा, आप जिस काम का भार लेकर आये थे, वह कहां तक पूरा हुआ है यह देखना ही उनका काम था; वे लोग यह जान गये कि आपके द्वारा सुलतान का काम कुछ भी नहीं हुआ, और यह उन ने निश्चय सुलतान को लिखदी होगी। फिर आप विलायत से जहाज में सवार हो जिब्राल्टर आये तो वे लोग भी आपके साथ ही साथ जहाज में सवार हो जिब्राल्टर आये। और उन लोगों ने इस जगह आकर देखाकि आप उस काम की कुछ भी चेष्टा नहीं कर रहे हैं। तब उन ने स्वयम् इस काम का भार लिया, हुसेनों के साथ में मिलकर उन ने उस युवती को हरण किया है। इब्राहीम हुसेन और उसका भाई जितने बढ़िया बदमाश हैं उतने ही का पुरुष भी हैं, होसकता है कि सुलतान ने उन्हें डर दिखलाया होगा कि, यदि वे लोग काम पूरा न कर सकेंगे तो वे

सपरिवार मार डाले जावेंगे, इस लिये ही इन लोगोंने अपने परिवार की जान बचानेके लिये यह काम किया है। और इस के सिवाय वे कुछ पुरस्कार भी पावेंगे। मैं आप को साथ ले जिस मकानपर गया था, सन्ध्या से पहले वे उसी मकान में थे, यह मैं जानता हूं।"

मैंने कहा, "आप कहते हैं कि वे लोग अलिभिया को देशान्तर में ले गये हैं, किन्तु यह कैसे सम्भव है? अलिभिया निश्चय अपनी इच्छा से नहीं जावेगी, उस की बिना इच्छा के वे लोग जबरदस्ती उसे ले जावेंगे तो वह चिल्लाकर लोगों से बचाने के लिये सहायता मांगती।"

मानालाकी ने इस बात का कुछ उत्तर न दे गम्भीर भाव से अपनी जेब में हाथ डाला एवम् एक छोटी शीशी निकाल मेरे हाथ में दी। शीशी को जरा सूंघने से मालूम हुआ कि वह क्लोरोफारम की शीशी है। मैंने कनूष्टानिडिस को शीशी देदी, उसने भी उसे सूंघा किन्तु कुछ कहा नहीं, उसे बातें करने का कम अभ्यास था, इसी से उसकी इस चुपके कारण मैं अधीर होगया था।

मैंने मानालाकी से पूछा, "यह शीशी तुम ने कहां पायी।"

मानालाकी ने कहा, "हुसेनों के मकान में, हम उन के जिस घर में गये थे, उस घर की मेज पर जब यह शीशी पायी उसी समय से मैं सब समझ गया हूं।"

अब समझा कि बदमाश अलिभिया को अज्ञान कर घर से और कहीं ले गये है। अलिभिया के भाग्य में इतना कष्ट और बदा था।"

मैंने पूछा, "यदि वे अलिभिया को समुद्र पार ले गये हों, तो अब क्या करना चाहिये।"

मानालाकी ने कहा, "सब से पहले हमें यह जानना जरूरी है कि, कब किस जहाज में किस बन्दर से वह रवाने हुए है।"

मैंने विरक्त हो कहा, "यह कैसे मालूम होगा?"

मानालाकी ने कहा, "यही खबर लेने तो इस जगह आये हैं, इस समय खबर लगाने का भार मेरे मित्र कनूष्टानिडिस स्वयम् ग्रहण करेंगे, इस जगह से लेकर दुनियां भर में ऐसा धूर्त आदमी और कोई नहीं है।"

मैंने कनूष्टानिडिस से पूछा, "यदि तुम यह सब खबर लासको तो, उन की खोज के लिये जहाज में ठीक कर सकूंगा।"

कनूष्टानिडिस ने कहा, "यह कौनसी मुश्किल बात है, कटार से लेकर तोप तक जितनी चाहिये, वह इसी समय आपके लिये इकट्ठी कर दे सकता हूं। आप यदि मुझे पूरी सहायता दे सकें, तो मैं आपके साथ चल सकता हूं। आपके साथ चलकर काम पूरा किये बिना मैं नहीं लौटूंगा।"

कनूष्टानिडिस की बात कहां तक बिश्वास करने लायक है यह जानने के लिये मैं प्रश्न सूचक दृष्टि से मानालाकी की तरफ देखने लगा, उसने मुझे कनूष्टानिडिस का प्रस्ताव मंजूर करने के लिये इशारा किया।

मैंने कहा, "अच्छा यह सब खबर पहले ले लो, तब फिर आपके साथ मैं अरब को चलूंगा।"

कनूष्टानिडिस ने कहा, "मुझे कितना रुपया इनाम दोगे ?"

मैंने कहा, "तुम कितना रुपया चाहते हो कहो।"

कनूष्टानिडिस ने कहा, "काम बडा कठिन है, इस में जान जोखों तक है ! विशेषतः जो लडकी चोरी गयी है, वह एक धनवान की लडकी है, मैं अधिक रुपये नहीं चाहता, आप मुझे दश हजार रुपये देना।"

मैंने देखा, "कुल इनाम दश हजार रुपये का है। मानालाकी काम पूरा कर सके तो उसे यह रुपया देना स्वीकार किया था; यद्यपि वह काम पूरा नहीं करसका तो भी उसने परिश्रम खूब किया है, इस अवस्था में उसे भी कुछ देना चाहिये, इस लिये मैं कनूष्टानिडिस को पांच हजार रुपये देना चाहता था, किन्तु वह इस पर राजी नहीं हुआ। फिर बहुत वादानुवाद के उपरान्त उसे सात हजार रुपये पर राजी किया।

कनूष्टानिडिस हमें अपने घर में अपेक्षा करने के लिये कह कपडे पहन बाहर हुआ। बिना कुछ खबर लिये मेरी इच्छा लाटभवन छोड कर जानेकी नहीं थी, मैं और मानालाकी उसके मकान में बैठ चुरुट पीने लगे।

रातको प्रायः ग्यारह बजे कनूष्टानिडिस लौट कर आया, वह क्या कर आया है, काम पूरा होने की सम्भावना है कि नहीं, यह उसके चेहरे का भाव देख कर समझ में नहीं आया।

मैंने व्यग्रभाव से पूछा, "कुछ खबर लगी क्या ? अलिभिया को क्या सचही दूसरे देशको लेगये ?"

कनूष्टानिडिस ने कहा, "हां गञ्जालभिस नामक एक आदमी स्पेनदेशीय जहाज की बोट में उन्हें ले गया है।"

मेरी छाती धड़कने लगी, मैंने फिर पूछा, "बोट कब छूटा ?"

कनूष्टानिडिस ने कहा, "प्रायः नौ बजे बोट छूटा है।"

मैंने कहा, तो इस हिसाब से दो घंटे पहले उन ने यात्रा की है, इस समय पीछा करने से भी उनको पकड लेने की आशा है, किन्तु खूब तेज बोट चाहिये, तुमने बोट कर लिया है ?"

कनूष्टानिडिस ने कहा, "हां मैंने एक खूब अच्छी बोट करलीहै, पचास मील के बीच में ऐसी तेज चलने वाली बोट और नहीं है।"

मैंने कहा, "अच्छा किया, हमको अब और देर नहीं करनी चाहिये, जितनी जल्दी हो स्टीमर छोडना चाहिये, किन्तु इससे पहले मुझे एक बार लाटभवन जाना जरूरी है। मुझे यह सब अपने मित्रों को सुनाना है और कुछ खर्च के लिये लेना है।"

कनूष्टानिडिस ने बन्दर पर एक जगह निर्दिष्ट कर कहा "लाट भवन से लौट आकर उस जगह मिलना।" तब मैं लाटभवन में पहुंचा, देखा कि उस जगह सब मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं; सब ही उदास बैठे हैं। मानो सदानन्दमय प्रासाद में शोक-दुख छागया है।

मुझे देख ड्यूक ने पूछा, "अलिभिया कहां है ?"

मैंने कहा, "अभी मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता। जान लेने पर भी मैं अभी आपको नहीं बतलाऊंगा।"

मेरी बात सुनकर लाटसाहब एवम् ड्यूक दोनों ने ही सविस्मय मेरी तरफ देखा, किन्तु उन ने यह जानने के लिये जोर नहीं दिया, तब भी वे लोग अत्यन्त उत्कण्ठित हुए।

मैंने लाट साहब को लक्ष्य कर कहा, "मुझे दूर देश जाना पडेगा, मैं उस जगह किस लिये जाऊंगा, किस उपाय से जाऊंगा वह इस समय आप से नहीं कहूंगा। विशेष कारण से मैं कह नहीं सकता। किन्तु सब बातें एक कागज पर लिख उसे एक लिफाफे में बन्द कर उसके ऊपर लाख से मोहर कर आपके पास रखजाऊंगा; काम कर मैं यदि दो सप्ताह में लौट कर न आ सकूं किम्वा आप को मेरी कुछ खबर न मिले तो आप मेरे इस पत्रको पढ़ना। फिर आपको जो दीखे सो करना। मैं जो जो करता हूं उस में मेरा कुछ स्वार्थ नहीं है; आपके हितके लिये वह करता हूं, यह बात

आप याद रखियेगा। इस विषय में मुझ से तर्क वितर्क न कीजियेगा यदि मैं अलिभिया का पुनरुद्धार न कर सका, तो आप यह निश्चय जानना कि मैंने अपनी चेष्टा में बिन्दुमात्र त्रुटि नहीं की।"

ड्यूक ने कहा, "तुम्हारे ऊपर मेरा सम्पूर्ण विश्वास है, तुम मेरे लिये जो कर रहे हो, उस के लिये मैं तुम्हारा चिरकृतज्ञ रहूंगा। किन्तु दुश्चिन्ता के कारण मैं अधीर होगया हूं, मेरी स्त्री की अवस्था और भी शोचनीय है, और कुछ दिन इसी तरह से काटने पड़े तो मैं पागल होजाऊंगा।"

मैंने कहा, "मुझ से जितनी जल्दी होसका उतनी जल्दी लौटने की चेष्टा करूंगा। अब मैं जाता हूं। मुझे दो एक चीजें लेनी हैं।" फिर लाट साहब की तरफ देखकर मैंने कहा, "मैं जो अङ्गरेजों की प्रजा हूं इस के प्रमाण स्वरूप में अपने आफिस से आपको एक सार्टीफिकट देना होगा।"

लाट साहब ने कहा, "उसके मिलनेमें आपको देर नहीं लगेगी।"

मेरे खड़े होते ही ड्यूक ने मुझसे कहा, "तुम बहुत कठिन काम का भार ले दूर देश जारहे हो, साथमें कुछ रुपयों का रखना जरूरी है, रुपयों का तो तुमने कुछ भी जिकर नहीं किया?"

मेरी आर्थिक अवस्था ऐसी अच्छी नहीं थी। विशेषतः इस समय जितना रुपया मुझे साथ लेना चाहिये था, वह भी मेरे पास नहीं था, किन्तु ड्यूक की मानसिक अवस्था जितनी शोचनीय थी, उस में किस तरह उन से रुपयों का जिकर करता? किन्तु जब उन ने स्वयम् यह बात छेड़ी तब मुझे संकोच करना नहीं चाहिये, मैंने ड्यूक से रुपये ले लिये, फिर अपने कमरे में जा अपने मतलब की चीजें इकट्ठी करलीं एवम् लाट साहब के पास जिस पत्र के रख जाने की बात थी वह फौरन लिख डाला। यह सब काम कर चुकने पर फिर लाट साहब के सामने आया।

उस पत्र पर मोहर कर इन्हें दे और दो एक बातें कर कनूष्टानिडिस से बन्दर पर मिलने की जगह की तरफ चला, मैंने अपने कमर बन्द की जेब में गिन्नियां रखलीं। बन्दर पर पहुंचकर देखा निर्दिष्टस्थान पर मानालाकी और कनूष्टानिडिस खड़े हैं।

मुझे देखकर मानालाकी ने कहा, "अब और देर नहीं करनी चाहिये, बोट प्रस्तुत है, चलो।"

कनूष्टानिडिस एक सुदीर्घ तेज चलने वाले बोट के पास हमको ले गया और कहा, "यह बोट ठीक किया है।" माझियों ने बोट को एक सेठी से भिडा दिया तब हम बोट पर सवार हुए। दोनों तरफ दांडी देने वालों का दल झुप झुप करता हुआ दांड देने लगा। उस के ऊपर पाल ताना गया, उस आधीरात के समय, भूमध्य-सागर में चन्द्रालोकित लहरों को चीरता हुआ हमारा छोटा बोट मानों तेज पतंग के समान उडकर चलने लगा, हजारों लेम्पों की रोशनी से रोशन जिब्राल्टर सुविस्तीर्ण पार्वत्य बन्दर हमारे पीछे छूट गया।

अठारहवां परिच्छेद।

अद्भुत चातुर्य्य।

हमारी नाव चलने के समय हवा जितनी तेज थी, कुछ देर उपरान्त वह कम होगयी; सुतराम् हमने जितनी जल्दी अरब पहुंचना विचारा था उतनी जल्दी नहीं पहुंच सके, हमारी नाव को पहुंचने में प्राय छः घंटे लगे; इन छः घण्टों में मैं नाव पर स्थिर बैठ नहीं सका, अलिमिया के भाग्य में क्या बदा है, यह अनुमान कर सकने के कारण मैं छटपटाता था। किन्तु मेरे साथी दोनों ग्रीक सुस्थिर भाव से बैठे हुए बातें कर रहे थे। वे रुपये के लोभ से मेरे साथ आये थे, उनको दुश्चिन्ता होने का कोई कारण नहीं था। इन कई घण्टोंमें उन ने दो बाण्डिल चुरुट भस्मकर दिये; क्रमशः रात शेष होने लगी, सवेरे की लाली आकाश में चमकने लगी। साथ ही साथ अरब राज्य की पर्वत श्रेणी घनघोर बादलों के समान दिखलायी पडने लगी। प्रायः आध घण्टे में समुद्र तीर अच्छी तरह दिखलायी देने लगा, सब रात जगने से मेरी आंखों में आग जलती थी, सुबह की ठण्ठी हवा के लगने से मुझे नींद आगयी।

बहुत देर तक मैं नहीं सोने पाया, नाव ने समुद्र किनारे लङ्गर डाला, मानालाकी ने मुझे जगाया। हम तीनों जने किनारे पर उतरे समुद्र किनारे एक मसजिद थी, उस के पास होकर निकलने से मसजिद के उपासक मुसलमानों के कण्ठ की आवाज हमारे कान में पहुंची, हम बन्दर के बाजार से होकर हाजी अबसलाम नामक एक मुसलमान के मकान पर जा उपस्थित हुए। हाजी साहब

तब मकान पर नहीं थे, उपासना शेष होने पर वे मकान पर आये और उनने हमारी बडी खातिर की। हम लोग थक गये थे इस लिये हाजी साहब ने तुरन्त काफी का बन्दोवस्त किया। काफी पी लेने पर हाजी साहब ने मेरे इतने जल्दी अरब लौट कर आने का कारण पूछा। इस मनुष्य को मैं बडी श्रद्धा से देखता और विश्वास करता था। मैंने कोई कोई बात छिपाकर अपने आने का कारण संक्षेप में बतला दिया, उनने कुछ सोचकर यह कहा कि मैं अपनी सामर्थ के माफिक तुम्हारी सहायता करने में त्रुटि नहीं करूंगा, फिर एक नौकर को बुला, धीरे से उसके कान में न मालूम क्या कहा, नौकर तुरन्त बाहर चला गया।

प्रायः बीस मिनट बाद नौकरने आ खबर दी वह हमारे लिये तीन घोड़े लाया है, घोडे सड़क पर खड़े हैं, वे हमारे पसन्द हैं वा नहीं इस लिये देखने को उसने हमसे कहा, घोडे बहुत अच्छे न होने पर भी हम चलने के लिये इतने व्यस्त हो रहे थे, कि उनको ही खरीद लिया रास्तेमें एक दल यात्री हमारे साथ चले, इन यात्रियों में एक डोली में एक स्त्री जाती थी।

घोडे देखने में अच्छे न होने पर खूब तेज चलने लगे, दो पहर के समय हम पूर्व वर्णित चट्टी पर पहुंचे, किन्तु डोली ले जो यात्री लोग हमारे साथ आरहे थे, वे बहुत पीछे रह गये, हमने घोडे छोड बहुत समय तक विश्राम किया। तथापि उनको नहीं देखा, ऐसा होने का कोई कारण दिखलायी नहीं देता। हमारे घोड़े इतनी तेजी के साथ नहीं आये, डोली के कहार यदि तेजी से चलते तो फौरन वे हम से आ मिलते। कई घण्टे बाद ख्याल हुआ, कि वे यात्री लोग चट्टी पर न ठहर सीधे चले गये हैं, किन्तु गांव के लोगों से पूछने पर किसी ने भी यह खबर न दी। मानालाकी ने मुझ से कहा, वे लोग निश्चय ही दूसरे रास्ते से राजधानी की तरफ गये हैं, किन्तु कनूष्टानिडिस ने कहा वे अभी तक पीछे ही हैं।

मैंने कहा, हम को यहां आये बहुत देर हुई, उस हिसाब से उन का पीछे होना कहां तक सम्भव है?"

कनूष्टानिडिस ने कहा, "हम घोडों पर आये हैं और वे पैदल आरहे हैं, हम प्रायः पांच कोश बढ़ आये हैं वे किस तरह हम को पकड़ सकेंगे?"

जो हो, हम ने उन साथी यात्रियों के लिये अपेक्षा न कर धीरे धीरे अपने घोडे चलाने शिरू किये। कनूष्टानिडिस ने कहा, "डोली जब समुद्र किनारे से आरही है और राजधानी को जारही है तब यह एक बार जानना जरूरी है कि उस डोली में कौन है, हम जिस की खोज में यहां आये हैं, वह भी इस डोली में होसकती है। यह ख्याल पहले मुझे नहीं हुआ था, किन्तु डोली के पीछे रहजाने से मुझे अनेक सन्देह होते हैं, इस दशा में हमको बहुत अगाडी न बढ कहीं रास्ते में ही छिप कर रहना चाहिये, डोली ले जाने वाले इसी रास्ते से राजधानीको जावेंगे, जब वे यह जान जावेंगे कि हम लोग बहुत अगाडी बढ़ गये हैं, तब वे धीरे धीरे इस रास्ते से आवेंगे।"

कनूष्टानिडिस की यह सलाह ठीक समझी, हम लोग रास्ते की एक खजूर की कुञ्ज में छिपकर रहे प्रायः एक घण्टे के उपरान्त उन लोगों की आवाज हमें सुनायी दी। मानालाकी समाचार लेने के लिये कुछ आगे बढ़ा एवम् प्रायः पांच मिनट उपरान्त उस ने हांपते हांपते आ कहा, " इब्राहीम हुसेन डोली के आगे आगे घोडे पर सवार हो आरहा है एवम् उसका भाई मूलीहुसेन डोली के पीछे आरहा है, डोली के दोनों तरफ सुलतानके अस्त्रधारी सिपाही कतार बांधे आरहे हैं।"

पहले जिन यात्रियों को हमने देखा था, यह वे तो नहीं हैं। तब यह कौन हैं ? जो हो, हुसेन दोनों भाई जब इस दल में हैं, तब इस डोली में ही अलिमिया है, इस में सन्देह नहीं।

मैंने मानालाकी से कहा, " यह तो बडे सन्देह की बात है सही, किन्तु हमको तयार रहना होगा, कनूष्टानिडिस का अनुमान इस समय सत्य मालूम होता है।"

हम जिस जगह छिपे थे, कहार लोग हो हो कर उसी जगह डोली लेकर आये, हम लोगों ने खजूर की कुञ्ज की आड से बाहर निकल अपने घोडे उनकी ही तरफ बढाये एवम् उन लोगों को डर दिखलाने के लिये हमने ऊपर की तरफ बन्दूकें छुडायीं। पहरे वाले सिपाहियों के पास बन्दूकें नहीं थीं, केवल तलवार और बल्लम थे बन्दूक की आवाज सुन वे लोग डोली का साथ छोड प्राण जाने के भय से न मालूम किधर भाग गये, इब्राहीम और मूली हुसेन ने भी

उनका ही अनुकरण किया; सुलतान के जनाने के छब्बीस गुलाम डोली के साथ आरहे थे, विपत देख वह भी डोली को छोड भाग गये, डोली सड़क पर रह गयी।

मैंने हंस कर कहा, "देखते हो यह तो बड़े ही कापुरुष हैं, इतनी जल्दी वे डर जावेंगे यह पहले मुझे ख्याल भी नहीं था।" मैं घोडे पर से फौरन उतर कर डोली के पास आया, खुशी भरे शब्दों में मैंने कहा, "लेडी अलिभिया, आपको अब कुछ भी डर नहीं है, मैं आगया हूं।"

मैंने कांपते हुए हाथ से डोली के ऊपर का कपडा हटा दिया; किन्तु भीतर की तरफ देखते ही फौरन डोली से तीन हाथ हटकर खड़ा होगया। अति आनन्द के उपरान्त अति दुख होने पर मुझे मूर्छा होने के से लक्षण दिखलाई पडे, क्यों कि उस डोली में अलिभिया नहीं थी, उसके एवज में एक आवनूस के समान काले रंगकी युवती बैठी थी, उसने डोली का परदा हटाकर मुझ से अरबी भाषा में पूछा, "आप कौन हैं? आपने मेरे आदमियों को इस तरह क्यों भगा दिया?"

मैं उसकी बात का कुछ उत्तर न दे विस्मय से स्तम्भित भाव से उसी जगह खडा रहा; मानालाकी ने क्रोध से चिल्लाकर कहा, "मेरे साथ यह चालाकी?" किन्तु कनूष्टानिडिस कुछ भी नहीं बोला।

जो हो, मैंने तुरन्त सम्हल कर डोली में बैठी हुई उस स्त्री से पूछा, "इब्राहीम हुसेन और मूली हुसेन जिस स्त्री को समुद्र किनारे से लाये थे उसे कहां छोड आये क्या तुम्हें मालूम है?"

मेरी बात सुन उस स्त्री ने ऐसी कुत्सित भाषा में मुझे गाली दी कि, मैं क्रोध को रोक न सका, मैंने उसका हाथ पकड डोली में से बाहर खींचकर पटक दिया। मैंने यह काम बहुत ही बुरा किया इस में सन्देह नहीं, किन्तु क्रोध में मुझे ज्ञान नहीं रहा था; नहीं तो स्त्री के शरीर से मैं कभी भी हाथ नहीं लगाता।

वह स्त्री धूल में पडी हुई कांपने लगी, यह दशा देख मुझे दया आयी, मैंने उसे सान्त्वना देकर कहा, "मैंने तुम से कोई बुरी बात नहींपूछी; तुम सहजमें ही मेरी बात का उत्तर देसकतीथीं.किन्तु उत्तर न दे तुमने मुझे गालियां दीं, इस लिये ही मैं अपना क्रोध नहीं रोक

सका; खैर जाने दो, यदि भला चाहो तो अब भी बतलाओ, उस सुन्दरी अङ्गरेज कन्या को हुसैनों ने कहां छिपाकर रखा है?"

मुसलमान युवती ने कहा, "मेरा कसूर माफ कीजिये; आप ने मेरे आदमियों को भगा दिया था इस लिये मुझे क्रोध आया, इसी से आपको मैंने कुछ कहा। आप जिस कृष्टानी की बात पूछते हैं मैं उस के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानती; मैं सुलतान के बेगम–महल में रहती हूं, उसी जगह जाती हूं, आपने मेरा जो अपमान किया है वह सुलतान से छिपा नहीं रहेगा, आपके भाग्य में बहुत दुख बदा है।"

मैंने उस स्त्री की बातों पर ध्यान न दे मानालाकी से पूछा, "यह क्या मामला है : धूर्तों ने हमारी आखों में कैसी धूल दी। यही स्त्री क्या हमारे साथ समुद्र किनारे से आरही थी?"

मानालाकी इस बात का जवाब न दे किमूकर्त्तव्य–विमूढभाव से खडा रहा; किन्तु कनृष्टानिडिस ने कहा, "अलिभिया को लेकर सुलतान के आदमी किसी दूसरे रास्ते से जा रहे हैं; हम आते हैं यह जानते ही उन ने यह ढंग रचा था; जो हो, इस समय विलम्ब करने की जरूरत नहीं है, इब्राहीम हुसेन और मूली हुसेन यदि हम से पहले राजधानी में पहुंच जावेंगे तो हमें अपना काम पूरा करना अत्यन्त कठिन होजावेगा। हो सकता है कि हमें कैद खाने में सड़ना पड़े। सुलतान के जेल में हमारे प्राण जाने भी कुछ कठिन नहीं है।"

हम तुरन्त राजधानी की तरफ रवाने हुए, उस स्त्री ने एक दम हमें गाली देना शिरू किया। किन्तु उस तरफ ध्यान देने का हमें अवसर नहीं था।

प्रायः सूर्य्य अस्त होते ही, राजधानी के फाटक बन्द होने के कुछ ही पहले हमने राजधानी में प्रवेश किया। पहरे वालों ने तेज निगाह से हमारी तरफ देखा, हमें सन्देह हुआ कि हुसेनों ने पहले ही यहां आकर पहरे वालों को चेता दिया है। जो हो, हमारे सौभाग्यवशतः तोरण दरवाजे पर हमें किसी ने नहीं रोका और न टोका हम तीनों जने घोड़े पर सवार हुए बाजार में होकर चलने लगे, इतने में ही एक दोनों हाथ कटे हुए भिखारी ने मुझ से भीख मांगी किन्तु उसने मुंह से न बोल इशारे से भीख चाही, उसके मुंह खोलने पर देखा कि मुंह में जीभ नहीं है। इस से समझा कि सुलतान की आज्ञा से उसके दोनों हाथ और जीभ काटी गयी हैं।

उन्नीसवां परिच्छेद।

सुलतान का भीषण आदेश।

अरब राज्य में मेरा एक विश्वासी मित्र रहता था; मानालाकी से भी उसका परिचय था; मैं जानता था कि वह विश्वासघात कर मुझे विपत्त में नहीं डालेगा, कितने ही कारणों से वह मेरा कृतज्ञ था, हम तीनों जने घोड़ों पर सवार हुए उसके घरके दरवाजे पर पहुंचे उस ने और उसकी स्त्री ने हमें बडे आदर के साथ अपने घर में लिया। इस मित्र की स्त्री एक अर्म्मानी सौदागर की लड़की है।

हम लोग बहुत थक गये थे, अत्यन्त भूख भी लग रही थी, मित्र ने तुरन्तही हमारे आहार का प्रबन्ध कर दिया। भोजन के उपरान्त हम लोग तमाकू पीने लगे। और मित्र से एक एक करके शहर के कुल समाचार ले लिये, बहुत समय तक बातें हो चुकने पर वह मित्र किसी काम के लिये कहीं चलागया।

अब हम यह विचार करने लगे कि क्या करना चाहिये। मैं बहुत हताश होगया था, मुझे ख्याल होने लगा कि, अलिभिया का अब उद्धार नहीं कर सकूंगा, हो सकता है कि आज रातको ही वह सुलतान के जनाने में ले जाई जावे; उस जगह से उसका उद्धार करने में हमारी मृत्यु है। किन्तु प्राण देकर उसका उद्धार कर सकूं तो भी मैं संकोच नहीं करूगा; अब क्या करना चाहिये?

कनूष्टानिडिसने कहा, "आप इतने व्याकुल मत हूजिये व्याकुल होने से कुछ लाभ नहीं, उस से क्षति की ही सम्भावना है। मेरे ऊपर सब भार देकर आप निश्चिन्त रहिये, लेडी अलिभिया सुलतान के अन्तःपुर में पहुंची है वा नहीं सब से पहले यही जानना होगा; यदि यह मालूम हो जावे कि अलिभिया सुलतान के अन्तःपुर में पहुंचा दी गयी हैं, तो फिर किस तरह हमारे यहां आने का सम्बाद उसे दिया जाय, यह स्थिर करना पड़ेगा।"

कनूष्टानिडिस की बात सुनकर मानालाकी ने उत्साह पूर्वक कहा "मेरा मित्र बड़ा बहादुर हैं, इतना चतुर आदमी मैंने जिन्दगी भर में न देखा। आप निश्चिन्त हूजिये, मित्र क्या क्या करता है यह देखिये।"

सत्य बात तो यह है कि, कनूष्टानिडिस का चेहरा देखकर पहले मुझे उसके प्रति बड़ी अश्रद्धा हुई थी, किन्तु क्रमशः उसका कार्य्य दक्षता का परिचय मिलने पर मैं उसका पक्षपाती हो गया; देखा कि वह कभी निरुत्साह नहीं होता। उसका चातुर्य्य भी असाधारण है। मुझे सम्पूर्ण हताश होने पर भी उसी के ऊपर निर्भर करना पड़ा।

बहुत रात बीतने पर मैं शय्या पर लेटा किन्तु नींद नहीं आयी। बिछोने पर पड़ा हुआ करवट बदलने लगा; शेष रात में कुछ निद्रा आयी, उस निद्रा में अनेक दुःस्वप्न देखे।

सुबह नींद खुलने पर देखा, " कनूष्टानिडिस उस कमरे में नहीं है। मानालाकी से मालूम हुआ कि, वह बहुत सबेरे का बाहर गया है

मानालाकी ने कहा, " कनूष्टानिडिस बिना कुछ किये लौटकर नहीं आवेगा। उसके लौट आने पर हम कुछ न कुछ नयी खबर जरूर सुनेंगे।"

मैंने मानालाकी से कहा, " तुम तो शिरू से ही मुझे आशा भरोसा देते आरहे हो। किन्तु अभी तक तो तुम्हारे द्वारा कुछ काम नहीं हुआ; तुम्हारा यह मित्र कहां तक क्या करेगा इसका ही क्यों कर भरोसा करूं ? बाहर जाने से पहले वह हमें कुछ भी नहीं जतला गया; हम से सलाह कर जाना उचित था, सो भी उसने नहीं किया।"

मानालाकी ने क्रोधित हो कहा, " आप क्या मन में यह समझते हैं कि कनूष्टानिडिस विश्वासघात करेगा? आपको ऐसा समझना अन्याय है; उसका स्वभाव चरित्र मैं खूब जानता हूं, और यदि वह सत्य ही विश्वासघात करे, तो वह मेरा परम मित्र होने पर भी मेरे हाथ से बच नहीं सकता।"

सुबह कुछ जल पान कर मैं तमाकू पीने बैठा, एक बार बाहर जाने के लिये मेरी बड़ी इच्छा होती थी, किन्तु फिर यह ख्याल होता था कि कोई मुझे पहचान ले वा मैं पकड़ा जाऊं इस लिये बाहर नहीं गया; स्थिर किया कि, यदि बहुत ही जरूरी काम होगा तो छद्म वेश से रात में बाहर जाऊंगा।

मानालाकी ने कहा, " आप वासे में रहिये मुझे अपने लिये कुछ चाहिये, इस लिये मैं अभी बाज़ार से घूमकर आता हूं। "

मानालाकी बाहर जाता था, ऐसे समय में गृह स्वामी ने मेरे पास आ खबर दी, " कि एक अपरिचित आदमी आपसे मिलने आया है, वह बाहर दरवाजे पर खड़ा है ।

मैं इस नगर में आया हूं यह बात किसी अपरिचित व्यक्ति को मालूम होना सम्भव नहीं था, तथापि कौन मुझ से मिलने आया है ? वह शत्रु वा मित्र है ? एक बार विचार हुआ कि उस से मिलूं नहीं फिर विचार हुआ कि मिलने में क्या नुकसान है ? यदि वह शत्रु पक्ष का आदमी हो तो न मिलने से भी कुछ लाभ नहीं, और अभिप्राय क्या है सो भी मालूम नहीं पडेगा ।

उस आये हुए अपरिचित मनुष्यने हमारे सामने उपस्थित हो झुक-सलाम की । मैंने उस से पूछा, " हम से आप क्या चाहते हैं ? "

उसने फिर सलाम कर कहा, " मैं आपके पास चाकरी की आशा से आया हूं । "

उसकी बात सुन मुझे विश्वास हुआ कि यह सुलतानका गुप्तचर है, हमारी गति पर दृष्टि रखने के लिये यह चाकरी करना चाहताहै ।

मैंने कहा, " हम मुसाफर आदमी हैं हमें नौकर की दरकार नहीं है । यहां चाकरी नहीं मिलेगी । "

देखा कि आदमी बड़ा हठीला है, ताड़ने पर भी नहीं जाता । मेरी बात सुन उसने कहा, " हुजूर मेरे ऊपर अविश्वास करते हैं, किन्तु मैं कितने विश्वास और काम का आदमी हूं, मेरे ऊपर किसी काम का भार देने से मालूम होगा । दुहाई आप की मुझे ताड़िये नहीं, जितनी कम तनखा देंगे उतने ही पर मैं आपकी गुलामी करूंगा । "

मैंने एक बार मानालाकी के मुंह की तरफ देखा, यह जानने के लिये कि उसकी क्या मनशा है, देखा कि मानालाकी दोनों आखें कुछ बन्दकर मुसक्या रहा है ।

मानालाकी क्यों हँसा इस का मतलब न समझ मैंने उस आये हुए मनुष्य से कहा, नहीं महाशय हमको किसी आदमी की दरकार नहीं हैं, क्यों तुम हमें व्यर्थ दिक करते हो ? "

उम्मेदवार ने अपने कण्ठ का स्वर बदल कर कहा, " महाशय क्या आप मुझे सम्पूर्ण अपरिचित समझते हैं ? "

अहो कितने आश्चर्य की बात है, यह क्या कनूष्टानिडिस है ? "

कनूष्टानिडिस ने कहा, " आपने मुझे छद्म वेश में नहीं पहचाना

इस से मुझे बडी खुशी हुई है। अब मैं काम की बात क ता हूं सुनिये मैं छद्मवेश से सुलतान के प्रासाद में हो आया हूं, कौशल से अनेक सम्बाद ले आया हूं।"

मैंने उतावलेपने से पूछा, "क्या ? खबर ले आये हो ?"

"लेडी अलिभिया इस समय कहां है सो खबर मिली है।"

मानालाकी ने मेरी तरफ देख कर कहा, मेरे मित्र को यह जानना कुछ कठिन नहीं है। मैंने तो कहा था कि वह कुछ विशेष सम्बाद लिये बिना नहीं लौटेगा।"

मैंने मानालाकी की बात पर ध्यान न दे व्यग्रभावसे कनूष्टानिडिस से पूछा, "लेडी अलिभिया इस समय कहां है ? उसे किस समय प्रासाद में ले गये ?"

कनूष्टानिडिस ने कहा, उसे अभी प्रासाद में नहीं ले गये, वह इस नगर के एक और मकान में है, सुलतान आज उस से मिलने जावेगा।"

मैंने दान्त पीस कर ललाट से हाथ लगाया, मेरी आंखोंके सामने ब्राह्माण्ड घूमने लगा।

मैंने उत्कण्ठित भाव से कनूष्टानिडिस से पूछा, "लेडी अलिभिया इस समय किस मकान में है यह खबर लग गयी क्या ?"

कनूष्टानिडिस ने कहा, "यह खबर बिना लिये ही मैं लौट आया क्या ?"

मैंने कहा, "हम उस को फन्दे में से निकाल ने के लिये आये हैं यह उसे जतला आये क्या ?"

कनूष्टानिडिस ने कहा, "नहीं अभी तो नहीं, किन्तु चेष्टाकर देख सकता हूं, पर यह काम सहज नहीं है, इस में यथेष्ट विपत्त की सम्भावना है, जिस मकान में वह इस समय रह रही है, उस मकान के चारों तरफ असंख्य सशस्त्र पहरे वाले पहरे पर नियुक्त हैं, उस तरफ जाने का उपाय नहीं है।"

मैंने कहा, "काम बहुत कठिन है, इस में सन्देह नहीं, किन्तु मेरा विश्वास है कि, यह तुम्हारे लिये असम्भव नहीं है।"

मानालाकी ने शिर हिला मेरी बात का समर्थन कर कहा, "हां यह सही है यह बिलकुल सही है।"

कनूष्टानिडिस फिर चला गया, सब दिन में वह लौटकर नहीं

आया। सन्ध्या ढल चुकने पर उसने आकर जो खबर दी वह बिन्दु मात्र आशा प्रद नहीं। उसकी जवानी सुना कि, सुलतान खूब सज-धज और ठाट के साथ अलिभिया से मिलने गया था। प्रासाद में लौट कर आने पर उसे अत्यन्त क्रोधित और विचलित देखा है। अलिभिया ने सुलतान का प्रस्ताव घृणा के साथ अस्वीकार कियाहै सुलतान का अपमान किया है। सुलतान ने कह दिया है कि, कल अलिभिया को प्रासाद में लाकर कैद करेंगे, तिस पर भी यदि अलिभिया उसके प्रस्ताव को मंजूर न करेगी, तो उसे मार डाला जावेगा? अलिभिया ने भी कह दिया है, यदि उसके प्रति बिन्दु-मात्र भी अत्याचार किया गया, तो वह आत्म हत्याकर सुलतान के हाथ से बचेगी। हम जो उस को उद्धार करने के लिये आये हैं, यह खबर उस के पास भेजदी है एवम् सम्भवतः वह भी जान गयी है।

मैंने लम्बी सांस ले कहा, "आज यदि अलिभिया को फन्दे में से न निकालसके तो फिर उसके निकाल लानेकी आशा नहीं, उस के सुलतान के प्रासाद में चलेजाने पर हमको हताश हो लौटना पड़ेगा, उस की अपेक्षा समुद्र में डूब कर मरना अच्छा है।"

मानालाकी ने दृढ स्वर में कहा, "हां आज रातमें ही उसे निकालना होगा। इस समय वह जिस मकान में है मैं उसी मकान को अब जाता हूं; देखूंगा कि किस की ताकत है जो मानालाकी का रास्ता रोके? मरना मञ्जूर है, किन्तु काम बिना पूरा किये मैं उस को नहीं छूडूंगा।"

मानालाकी की बात पूरी होते होते ही सडक पर बहुत आदमियों का शोर सुनायी दिया, मानों सैकडों आदमी क्रोध में पागल की तरह पुकार रहे हैं।

मानालाकी ने कहा, "यह दङ्गा कहां होगया? इतने आदमी एक साथ पुकारते क्यों हैं?"

मामला क्या है, समझ में नहीं आया, किन्तु चिल्लाहट निकट होने लगी, ऐसा मालूम होने लगा कि सहस्त्रों मनुष्य इस में शामिल हैं; उनकी आवाज से गगन विदीर्ण होने लगा।

मैंने कहा, "कनूष्टानिडिस यही उत्तम सुयोग है, चारों तरफ जो गोलमाल शिरू हुआ है, इस से मैं खुद अलिभिया के घर में उपस्थित होसकूंगा। तुम मुझे रास्ता बतलाते चलो।"

कनूष्टानिडिस ने कहा, "मैं तयार हूं, आप लोग मेरे साथ चलिये, साथ में अस्त्र हैं तो ?"

मैं और मानालाकी दोनों ने पाकेट से पिस्तौल बाहर निकालकर उसे दिखलायीं पिस्तौलों में गोली भरी हुई थीं।

सडक पर आदमिमों की चिल्लाहट क्रमशः बढ़ने लगी; भीड भी खूब बढने लगी, चारों तरफ गोलमाल ही गोलमाल होने लगा। सुलतान की प्रजा पागल की तरह सडक पर घूमती थी। हम लोगों ने कुछ ही दूर चलकर सुना, एक आदमी चिल्ला कर कह रहा है "सुलतान ने कृष्टानी से विवाह करने के लिये एक कृष्टानी को पकड मँगाया है, उस से उनका विवाह होजाने से इस राज्य के कृष्टान ही कर्त्ता होजावेंगे, इस लिये पहले उस कृष्टानी का खून करो।"

समझा, अलिभिया को जान मे मार डालने के लिये क्रोधित प्रजा पागल हो रही है, मैं कांपने लगा।

बीसवां परिच्छेद।

उद्धार।

अलिभिया की हत्या करने के लिये नगर वासियों का इस प्रकार का आग्रह देख मेरे भय और चिन्ता की सीमा न रही। मैं शिर से पैर तक थर थर कांपने लगा, मैं अपने ऊपर आफत आने की बात भूल गया एवम् अलिभिया का किस तरह निकाल हो यह सोचने लगा। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि अलिभिया के समान सम्पूर्ण निःसम्पर्कीय रमणी के लिये और कोई कभी इतना भीत और व्याकुल नहीं हुआ।

सड़क पर खूब भीड है, सब आदमी क्रोधित हैं सब ही उन्मत्त हैं; सुलतान ने प्रधान बेगम को त्याग कर एक बिदेशी भिन्न धर्म्मावलम्बनी युवती को समुद्र पार से लाकर प्रधान बेगम बनाना चाहा है, यह बात क्षण भर में ही दावानल के समान नगर भर में समान फैल गयी। नगरवासी गण दलवद्ध हो सुलतान के विरुद्ध खडे हो गये, प्रतिक्षण विद्रोही लोगों का दल बढने लगा, वे लोग "अल्ला हो अकबर" कह कह कर चारों तरफ नगर में शोर मचाने लगे, उस भीषण दृश्य को देख साहसिक वीर का भी

हृदय भय से कांप जाता; वैसा दृश्य जीवन में कभी नहीं देखा उन्मत्त प्रायः ऐसे लोगों का चीत्कार शब्द और कभी मैंने नहीं सुना समझा यह सब उत्तेजित प्रजाका विद्रोहानल सहज में शान्त नहीं होगा। अलिभिया के केवल खून से ही उनकी दारुण प्यास नहीं बुझेगी, यह लोग नगर लूटेंगे, शान्ति भंग करेंगे, नर रक्त की सडक पर नदी बहावेंगे। अलिभिया सी सम्पूर्ण निरपराधिनी, निष्कलङ्क चरित्रा, पवित्र कुसुम रूपणी रमणीके प्रति इतने कोप कारण क्या है, सो समझ नहीं सका, मेरा अनुमान है कि भीतर ही भीतर कोई षड्यन्त्र चल रहा है, पूर्वी देश के रहने वालों की प्रकृति बडी अदुभुत है, उत्तेजना का विशेष कारण होने पर भी वे उत्तेजित नहीं होते पर इस समय में उत्तेजित होने का कोई कारण न रहने पर भी उत्तेजित हो चारों तरफ दंगा मचा रहे हैं।

जो हो, हम उत्तेजित जनसमूह से निगाह न मिला कनूष्टानिडिस के पीछे पीछे चलने लगे; कितनी ही जगह आदमियों की भीड से सडक का रास्ता रुका था, सुतराम् हमको गलियों में होकर चलना पडा; इस लिये जितना बिलम्ब होता था उस से मुझे बड़ी व्याकुलता पैदा होती थी, हम जितनी तेजी से चलने लगे कि प्राण के भय से भी आदमी नहीं चलता, हम काम पूरा कर सकेंगे कि नहीं, यथा स्थान पर पहुंच कर अलिभिया को जीता पावेंगे कि नहीं इस में भी सन्देह है।

एक गली के मोड पर कनूष्टानिडिस ने खडे हो कहा, "एक गली का मोड और घूमने पर वह मकान दिखलायी देगा, अब बहुत दूर नहीं है।"

कनूष्टानिडिस की बात से मन में कुछ साहस हुआ। विद्रोही दल जब तक वहां नहीं पहुंचा था; अनुमान होता है कि वे लोग यह नहीं जानते थे कि अलिभिया कहां है। अथवा वे लोग यथेष्ट अस्त-शस्त्र इकट्ठे न कर सकने के कारण सशस्त्र पहरे वालों का सामना करने में हिचकते थे।

हम लोग यथा स्थान पर पहुंच क्या करना चाहिये यह विचारने लगे। कनूष्टानिडिस ने कहा, "आप दोनों जने एक आड में खडे हो मेरी अपेक्षा कीजिये, मैं सदर दरवाजे पर पहुंच दरवाजे के पहरेवाले से मिलकर मकान के भीतर जाना चाहूंगा वह निश्चयही मेरे प्रस्ताव

को स्वीकार नहीं करेगा। तब मैं उसके साथ झगडा करूंगा मेरे साथ झगडा करने के समय उसकी निगाह दूसरी तरफ नहीं जावेगी उस समय आप तुरन्त उसके ऊपर टूट पडना और ऐसे ढङ्ग से उस का गला दवाना कि जिस से वह आवाज भी न निकाल सके। इतने में मैं और मानालाकी दरवाजा खोल भीतर चले जावेंगे और आप भी हमारे पीछे ही मकान में भीतर आ दरवाजा बन्द कर लेना। उस मकान में अधिक पहरे वाले नहीं हैं यह खबर मुझे मिल चुकी है। भीतर जो कुछ पहरे वाले हैं उनको पराजय करना हमारे लिये कुछ कठिन नहीं, उस की कुछ चिन्ता नहीं, भीतर पहुंचने पर जैसा उचित समझेंगे वैसा करेंगे।"

मकान में भीतर जाने का और कोई उपाय न मिलने के कारण फिर यही उपाय काम में लाना निश्चय किया।

मैं और मानालाकी दरवाजे से कुछ ही दूर पर छिपे खडे रहे; कनूष्टानिडिस ने दरवाजे पर पहुंच द्वारवान से लड़ना झगड़ना शिरू किया; फिर कनूष्टानिडिस ने दाहिना हाथ ऊंचाकर हमको इशारा किया, इशारा पाते ही हम तुरन्त उस द्वारवान ऊपर टूट पडे एवम् जोर से उसका गला दवा दिया, पहरे वाला दरवाजे की सीढियों पर गिर गया और उसके गहरी चोट आयी, फौरनही दरवाजा खुल गया; उसी क्षण मानालाकी ने भीतर जा मुझे इशारा किया, मैं अपने रूमाल से उस पहरे वाले के गले को बांध फौरन ही भीतर पहुंचा। हमारे आक्रमण के कारण ही द्वारवान मूर्छित हो गया था, उस समय न मालूम मेरे शरीर में कहां से बल बढ गया था, कह नहीं सकता।

मैंने मकान में प्रवेश कर दरवाजा बन्द करते करते उन्मत्त वासियों का "अल्ला ओ अकबर" शब्द सुना। मैंने मानालाकी से कहा, यह देखो नगर वासी भी आ पहुंचे हैं, और पांच मिनट में ही वे इस मकान पर आक्रमण करेंगे। और एक क्षण भी देर न करना चाहिये, तुरन्त बढ़ो।"

मैं घर पहुंच हाथ में रिभालवर ले सीडियों की तलाश में पागल की तरह घूमने लगा, सौभाग्य बशतः सीड़ियों के मिलने में देर नहीं हुई, ऊपर चढ़कर देखा कि वरामदे में छै पहरे वाले पहरा दे रहे हैं, उनके सरदार को मैंने पहचान लिया, वह सुलतान के देह रक्षकों में से एक था।

हमको इस तरह वहां पहुंचते देख कर पहरे वाले ने तेज हो हम से भीतर आने का कारण पूछा, मैंने उस से वाद बिवाद करना अच्छा न समझा, उस के तलवार बाहर निकालने के पहले ही मैंने उसके दाहिने को लक्ष्य कर पिस्तोल छुड़ायी, उसके हाथ में गोली समा गयी वह उस पीड़ा से दुखी हो नहीं बैठ गया। इतने में दूसरे पहरे वाले ने मेरे ऊपर तलवार चलाई, मैंने उसका वार बचाया नहीं तो उसी वार से मेरा माथा चूर चूर हो जाता। मेरे ऊपर उसका आघात होते देख मानालाकी ने बन्दूक उसके माथे में इतने जोर से मारी कि वह वहीं बेहोश हो गिर पड़ा। तीसरे पहरे वाले ने तलवार हाथ में लेकर हमारे ऊपर आक्रमण किया, कनूष्टानेडिस ने उसके माथे का लक्ष्य कर बन्दूक छुडायी, क्षण भर में उसके प्राण निकल गये और धरती पर गिर पडा।

तीन पहरे वालों की यह दशा देख बाकी के तीन पहरे वाले अपने अपने प्राण ले भाग गये। तब मैंने अपने दोनों साथियों से कहा, देखो किस घर में अलिभिया को कैद कर रक्खा है; उसे तलाश करने में देर हुई तो पहरे वाले उन्मत्त नगर वासियों को साथ ले यहां आजावेंगे, तब भागने का कोई उपाय नहीं रहेगा।"

हम तीनों जने फुरती से उस मकान के कमरे देखने लगे, किन्तु किसी कमरे में अलिभिया को नहीं पाया। तब मैं अत्यन्त उत्तेजित भाव से अलिभिया २ कह कर पुकारने लगा, किन्तु उसके उत्तर में किसीका भी शब्द सुनायी नपड़ा।

बहुत देर बाद उसी मकान की एक कोठरी की तरफ से किसी के बिलाप करने की सी आवाज आयी, देखा कि उस कोठरी के दरवाजे में बाहर से ताला लगा हुआ है, मैंने ठोकरों से उसके किवाड़ तोड़ डाले।

किवाड़ हटाकर देखने में आया कि लेडी अलिभिया दोनों हाथ छाती पर रखे हुए खड़ी है। उसका सुन्दर मुँह मलीन हो गया है, उसकी आंखों से आंसू गिर रहे हैं।

मुझे देखते ही अलिभिया एक दम फूटकर रोने लगी और चिल्लाकर कहा, "मेरी रक्षा कीजिये, मेरी रक्षा कीजिये।"

मैंने कहा, "मैं तुम्हें इस फन्दे में से निकालने के लिये आया हूं, आप अब और न डरिये, मेरे ऊपर आप भरोसा रक्खें।,,

मानालाकी मेरे पीछे खडा था, मैंने उस कोठरी के पिंजर की तरफ इशारा किया, वह मेरा मतलब समझ उस पिंजर की परीक्षा करने गया; फिर आकर मुझ से कहा, " पिंजर अत्यन्त शक्त मालूम होता है किन्तु हम दोनों चेष्टा करेंगे तो उसे तोड सकेंगे।"

हम दोनों ने उस पिंजर के पास जोर जोर से ठोकर मारीं, बार बार की ठोकरों से पिंजर की तानें नव गयी और हिलने लगीं। तब फिर उसकी तानों को अलग कर दिया।

उस टूटे हुए पिंजर में से नीचे की तरफ देखा कि उस मकान में उन्मत् नगरवासी प्रवेश कर रहे हैं; इतनी देर से वे क्यों कर इस मकानमें प्रवेश नहीं कर सके यह विचार कर विस्मित हुआ। फिर समझा पहरे वालों ने विपत्त की आशंका से दरवाजा खोला नहीं, अन्त में वे बलपूर्वक मकान में घुसे हैं।

उस टूटे हुए पिंजर द्वारा नीचे उतर सकते हैं कि नहीं यही सोचने लगा; वह बहुत ऊंचा नहीं था, उस जगह से नीचे तक केवल आठ हाथ का फासला होगा; मैं सहज में वहां से कूद सकता था, किन्तु अलिभिया को लेकर कैसे कूद सकता हूं?

मैंने उस कोठरी के चारों तरफ निगाह फेंक कर देखा, कोठरी छोटी होने पर भी खूब सजी हुई थी, उसकी एक खूंटी पर एक बहु मूल्य शाल टंगा हुआ था; मैंने उस शालको उतार कर अलिभिया से कहा, "आप यदि साहस करें तो इस शाल के द्वारा आपको नीचे उतार दे सकता हूं; आप शालका एक कौना खूब जोर से पकडे रहना, मैं उसका दूसरा कौना पकड कर आपको धीरे धीरे नीचे उतार दूंगा; किन्तु सावधान, आप यदि घबड़ाकर शाल को छोड देवेंगी, तो गिर जावेंगी और गहरी चोट लगेगी, तो फिर आपका यहां से निकलना और भी कठिन हो जावेगा।"

अलिभिया ने कहा, " मैं यह तो कर सकती हूं, आप और विलम्बन कीजिये, नीचे चौक में लोगों की चिल्लाहट सुनायी देती है न? वे लोग निश्चय ही मेरी हत्या करने को आये हैं।"

मैंने उससे और कुछ न कह शालका एक कौना उसे पकड़ा दिया, उसने उसे दोनों हाथों से खूब जकड कर पकड़ लिया, मैंने उसे टूटे हुए पिञ्जर से धीरे धीरे नीचे उतार दिया। मानालाकी

भी उस शालको पकडे रहा। अलिभिया के नीचे उतरने पर कनूष्टा-निडिस भी उसी रास्ते नीचे उतर गया, फिर मानालाकी कूदेगया सब से पीछे मैं कूद कर अलिभियाके पास जा खड़ा हुआ।

जिस तरफ हम उतरे थे उस तरफ उस समय कोई आदमी नहीं था।

किन्तु अभी तक हमारे ऊपर से विपत्त नहीं टली थी हम जिस जगह उतरे थे उस जगह चारों तरफ दीवाल बनी हुई थी, अब इस दीवाल को किस तरह फलांगें यह विचारने लगा। कुछ देर सोचने पर एक उपाय पाया, मानालाकी से पूछा, "मैं तुम्हारे कन्धे पर खडा होजाऊं तो क्या तुम खडे रहसकते हो?"

मानालाकी ने कहा, "यह क्या कठिन है? हां मैं अच्छी तरह खड़ा रहसकता हूं।"

मुझे बचपन से ही व्यायाम का अभ्यास है; मानालाकी की बात सुन उसके दोनों कन्धों पर पैर रख मैं खडा होगया, तब मैं सहज में ही उस दीवाल के उपर चढ गया।

मेरे दीवाल पर पहुंच जाने पर मानालाकी ने अलिभिया को कन्धे पर रखलिया मैंने झुककर उसे भी दीवाल पर चढ़ा लिया। मानालाकी ने इस तरह कनूष्टानिडिस को भी चढ़ा दिया। नीचे मानालाकी अकेला खड़ा रह गया किन्तु उसके समान जवान के लिये पाञ्च हाथ ऊंची दीवाल पर चढना कुछ कठिन नहीं, वह फौरन ही दीवाल पर चढआया।

उस दीवाल से उतरने में कुछ भी कठिनाई नहीं पडी, दीवाल से उतरते समय सुना कि क्रोधित नगर वासी उस मकान के ऊपर चढकर हुंकार मार रहे हैं, और कुछ ही मिनट देर होती तो हम उन के पञ्जे में पड़जाते।

मैंने मानालाकी से पूछा, "किस रास्ते से चलना होगा, समझ में नहीं आता तुम क्या रास्ता जानते हो?"

मानालाकीने कहा, "हां जानताहूं, कहिये अब क्या करना चाहिये"

मैंने कहा, "हमको शीघ्र ही अपने वासे पर पहुंच कर तीनों घोडे तयार कर तुरन्त ही नगर से बाहर होना चाहिये, यदि कुछ भी विलम्ब हुआ तो हमारी सब चेष्टा विफल होगी।"

मेरी बात सुन मानालाकी तुरन्त दौडकर वासे की तरफ जाने

लगा और कनूष्टानिडिस मुझे रास्ता बतलाता चला, अलिभिया दौडकर नहीं चलसकती थी इस लिये हम धीरे धीरे चलने लगे। प्रतिक्षण मुझे डर मालूम होता था कि अलिभिया कहीं मूर्छित हो रास्ते में ही न पड़जावे।

मैंने अपनी आशंका की बात अलिभियासे कही उसने जवाब दिया "आप डरिये नहीं, जैसे हो वैसे मैं इस रास्ते को तय करूंगी। आशा करती हूं कि हम लोगों को बहुत दूर नहीं जाना पडेगा।"

कनूष्टानिडिस ने कहा, "न हमको बहुत दूर जाना नहीं पडेगा। ज़रा और चलने से ही हम अपने वासे पर पहुंचेंगे।"

प्रायः दश मिनट पीछे हम अपने वासे के सामने जा पहुंचे; विद्रोही उस समय उस जगह नहीं थे। सुतराम् रास्ते में हमें कोई रुकावट नहीं आयी; दरवाजे पर देखा, मानालाकी तीनों घोडों को सजाये हुए हमारे लिये प्रतीक्षा कर रहा है।

मैं, मानालाकी और कनूष्टानिडिस तीनों अपने अपने घोडों पर सवार होगये, फिर अलिभिया को मैंने अपने पीछे घोडे पर चढ़ा लिया। अलिभिया ने इस तरह चलने से पहले मना किया, किन्तु प्राण जाने के भय से वह फिर उसी तरह घोड़े पर चढने को राजी हुई। मैंने एक हाथ से उसे पकड घोडा दौड़ा दिया, मुझे ख्याल हुआ कि ऐसी सुन्दरी की जान बचाने में यदि अपने प्राण भी जावें तो भी सुख है। अलिभिया की जान बचाने के लिये मुझे कोई काम कठिन नहीं था।

रास्ते में कोई आदमी नहीं मिला, हम घोडा दौडाते हुए नगर के तोरण दरवाजे पर पहुंचे, देखा कि तोरण दरवाजा बन्द है, हम लोगों को घोडे पर सवार हुए आते देख एक द्वारवान हमारे सामने आकर खडा होगया, वह दरवाजा खोलने लिये किसी तरह भी राजी नहीं हुआ। मैंने विचार किया जोर दिखलाने से कुछ फल नहीं होगा, क्यों कि उस जगह पहरे वाले बहुत थे, विशेषतः हमारे साथ एक स्त्री थी, सुतराम् बल प्रयोग करने की जगह हमने इनाम देना उचित समझा। मैंने जेब में से एक मुट्ठी गिन्नी निकाल कर कहा, "दरवाजा खोल दो तो यह इनाम पावोगे।"

बहु संख्यक गिन्नी देखकर द्वारवान का कर्त्तव्य-ज्ञान जाता रहा, उस ने अपने साथियों से सलाह कर तुरन्त दरवाजा खोल दिया

मैं गिन्नी पहरे वालों के सामने फेंक दरवाजे से बाहर हुआ। मानाछाकी और कनूष्टानिडिस भी इस खुले हुए दरवाजे से तुरन्त शहर के बाहर आये। अब हम कुछ निश्चिन्त हुए।

चलते चलते प्रतिक्षण ऐसा ख्याल होता था कि सुलतान के सिपाही जरूर ही हमारे पीछे आ रहे हैं, तो भी हम अपने घोड़े खूब तेज दौड़ा नहीं सके, हम दो जने एक घोडे पर सवार थे, उस में दो आदमियों को लेकर तेज दौडने की शक्ति नहीं थी। लेडी अलिभिया दोनों हाथों से मुझे जकड कर पकडे घोडे पर बैठी थी एवम् बार बार कृतज्ञ-दृष्टि से मुझे देखने लगी। किन्तु मैंने इसके लिये ऐसा क्या किया है? जो कुछ किया वह अपनी आत्म-सन्मान रक्षा के लिये ही किया है, उसे बिना बचाये मैं दारुण शोच से छुटकारा नहीं पासकता था, किन्तु अभी मेरा कर्त्तव्य समाप्त नहीं हुआ, किन्तु वह कर्त्तव्य क्या है सो पीछे जानोगे।

प्रायः आधीरात को मेरा घोड़ा बहुत थक गया, हमने सडक पर कुछ समय तक विश्राम किया। उस आधीरात को अनगिनती तारों की रोशनी में समुद्र के निकट अलिभिया के साथ बैठकर जो आनन्द मुझे मिला उसके वर्णन करने के लिये भाषा में कोई शब्द नहीं हैं, किन्तु अभीतक सम्पूर्ण रूप से निश्चिन्त नहीं हुआ। जब तक इस देश की हद से बाहर न निकल जावेंगे तब तक शान्ति पाने की आशा नहीं।

हमारे घोड़े को कुछ देर तक आराम करलेने पर हमने फिर चलना शिरू किया, इस लम्बे सफर को घोडे पर सवार हो तय करने से अलिभिया अत्यन्त अस्वस्थ होगयी, किन्तु उपाय नहीं, इसी अवस्था में और भी कुछ दूर तक जाना पडेगा, चलते चलते लेडी अलिभिया ने मुझ से पूछा, "मिःगिबसन् सब बातें मुझे जादूगरी की सी मालूम होती हैं आपने ठीक समय पर किस तरह मुझे वहां से निकाला, सो समझ नहीं सकी, दुर्वृत्त मुसलमानों ने मुझे चुरा लाकर इस जगह रक्खा था, यह आप कैसे जान गये?"

मैंने कहा, "लेडी अलिभिया यह सब बातें बहुत लम्बी हैं, अभी इन बातों के कहने को समय नहीं है, समय मिलने पर सब बातें आपसे कहूंगा। घोडे की पीठ पर सवार हो यह लम्बा रास्ता पार करने में तुम को बहुत कष्ट होता है, यह मैं जानता हूं, किन्तु आपका कष्ट दूर करने का कोई उपाय नहीं है।"

अलिभिया ने कहा, " कष्ट भले ही हो, किन्तु कई दिन से जो कष्ट शत्रु के हाथ से पा रही थी उस के मुकाबले यह कष्ट कुछ भी मालूम नहीं पडता।"

मैंने कहा, "आप जो यह कष्ट सहन कर रही हैं, इस से अत्यन्त लाभ हुआ। यदि मेरे यह ग्रीक दोनों साथी मेरे साथ यहां तक न आते तो मैं अकेला आपको कभी इस फन्दे में से न निकाल सकता।"

मैंने मानालाकी और कनूष्टानिडिस के साथ अलिभिया का परिचय करा दिया, अलिभिया बार२ उनको कृतज्ञता जतलाने लगी।

मानालाकी ने कहा, " मैंने यथेष्ट इनाम के बदले आपका यह सामान्य काम किया है, इस लिये कृतज्ञता जतलाना अनावश्यक है, आपको महाविपद से निकाल सके यह हमारा परम सौभाग्य है, आप कभी हम गरीबों को भी याद रखना।"

इक्कीसवां परिच्छेद।

रहस्य भेद ।

सुबह होगया, तब भी हमारा रास्ता पूरा नहीं हुआ, फिर एक घोडे पर दो आदमियों को चढ़कर चलने से अत्यन्त कष्ट होने लगा, मैं घोडे पर से उतर पैदल चलने लगा। मैं बाकी का रास्ता पैदल चलकर तय करने को तयार था, किन्तु मानालाकी अपना घोडा मुझे देने को बहुत आग्रह करने लगा, तब फिर मुझे उसके घोडे पर सवार होना पड़ा, वह हमारे साथ पैदल चलने लगा।

अबकी बार अलिभिया को घोडे पर सवार होने में सुविधा मालूम पडने लगी, घोडे पर वह सवार होना खूब जानती थी, किन्तु यह घोडा उस श्रेणी का नहीं, इसकी जीन दूसरे ढंग की थी, लगाम भी दूसरे ढंग कीथी, किन्तु मैं जिस घोडे पर सवार हो समुद्र की तरफ जा रहा था, ऐसे घोडों पर सवार होकर रमणियों को चलना बड़ा कठिन है।

हम दोनो पास पास चलते हुए बातें करने लगे, मैंने अलिभिया से कहा, " आप दो कर्म्मचारियों के साथ बाजार आयीं थीं, फिर दुकान में से हठात् कैसे गायब होगयीं, यह जानने के लिये मुझे बड़ा कौतूहल है।"

अलिभिया ने कहा, "आप का कौतूहल दूर करना मेरा सब से पहला काम है; किन्तु मैं वे सब बातें ठीक ठीक बतला सकूं ऐसा नहीं, भयङ्कर बिपत्तमें पडनेसे सब बातें याद नहीं रहीं। मैं लाटसाहब के सैक्रेटरी और एडीकाङ्ग के साथ बाज़ार में सामान खरीदने आयी थी; एक दो दुकानें घूमकर मैं और दुकान में गयी; वह दुकान एक स्त्री की थी; मेरे दोनों साथी दुकान के पास ही बाहर खडे रहे। मेरे दुकान में पहुंचने के कुछ ही देर बाद दो देशी आदमी उस दुकान में आये, वे लोग न मालूम कौन थे सो कह नहीं सकती। उन के दुकान में पैर रखते ही न मालूम दुकानदार से देशी भाषा में क्या परामर्श करना शिरू किया, मैं उनकी बातें नहीं समझ सकी। उनकी बातें समाप्त होने पर दुकानदार ने मुझ से कहा, "आप जो चीजें चाहती हैं वे भीतर की तरफ गुदाम में हैं, गुदाम में से बाहर निकालने में बहुत समय लगेगा, सुतराम् आप अनुग्रह पूर्वक इनके साथ गुदाम में जावें तो यह दिखला सकेंगे।" दुकान दार की बात सुन मैं बेधड़क उन लोगों के साथ गुदाम की तरफ चली; मेरे गुदाम में प्रवेश करतेही आये हुए दोनों में से एक ने मेरे ऊपर पीछे से आक्रमण किया; और दूसरे ने मेरे चिल्लाने से पहले ही मूंह बांध दिया, फिर चिल्लाने की शक्ति न रही; दुकानदार पास खडा हुआ अत्यन्त निश्चिन्त भाव से इस झगडे को देखता रहा; इतना भयानक झगडा देखकर भी वह तनक विस्मित वा विचालित नहीं हुआ।"

आश्चर्य की बात यह है कि हमने उस से कितनी ही बार पूछा किन्तु उसने नहीं बतलाया; मैंने मानालाकी को बुला दुकानदार की बदमाशी का हाल सुनाया।

मानालाकी ने कहा, "पहले मैं जिब्राल्टर पहुंच जाऊं, तब मैं भालियसी को यथा योग्य शिक्षा दूंगा। मैं पहले से ही यह समझ गया था, कि दुकानदार के बे मालूम यह काम नहीं हुआ।"

मैंने लेडी अलिभिया से कहा, "फिर क्या हुआ सो कहो।"

अलिभिया कहने लगी, मेरा मुंह बांध देने के उपरान्त उन लोगों ने मेरे दोनों हाथ पीछे की तरफ रस्सी से खे जकड कर बांध दिये। यह देखिये वे दाग अभी तक मेरे हाथों में हैं।" अलिभिया ने अपने सुन्दर सुगोल सफेद हाथ मुझे दिखलाये। देखा कि, रस्सी के दाग

अभी तक नहीं मिटे हैं, मानों खून झलक रहा है ऐसे हो रहे थे; उन दागों को देखकर मुझे इतना क्रोध आया कि, उस समय इब्राहीम हुसेन और मूली हुसेन होते तो मैं उनको गोली से मार डालता।

अलिभिया फिर कहने लगी, "बदमाश बांधकर मुझे एक छोटी कोठरी में ले गये; उस जगह प्रायः एक घंटे तक मुझे कैद रखा; वे लोग दरवाजा बन्द कर न मालूम कहां चले गये कह नहीं सकती बहुत देर बाद उनमें से एक आदमी एक पिस्तौल लेकर आया, और उसने कड़ककर कहा, "यदि तुम मेरे साथ न चलोगी, और मेरे कहे माफिक काम न करोगी तो तुमको इस पिस्तौल से फौरन मार डालूंगा।" मैं पहले उसकी इस बात पर राजी नहीं हुई, उस से कहा, मेरा बाप सामान्य आदमी नहीं है, वे शीघ्र ही मेरी खोज में निकलेंगे, इस अत्याचार की बात उन से छिपी नहीं रहेगी, वे बहुत दुखी होंगे। मेरी बात सुन वे दोनों बदमाश कुछ भी नहीं डरे। मुझे फिर गोली से मार डालने का भय दिखलाया, फिर हार कर मैंने उनकी बात मानना ही स्वीकार किया; उन ने मेरे हाथ खोल दिये, मुझे उनके साथ जाना पड़ेगा, यदि मैं भागने की चेष्टा करूंगी, किम्बा किसी से सहायता की प्रार्थना करूंगी, तो यह लोग फौरन मेरे ऊपर गोली चलावेंगे; मैं चुपचाप इनके साथ चली चलूंगी तो मेरे प्राण जाने का कुछ भी भय नहीं है। यह सोचकर मैं चुपचाप उनके साथ चलने लगी; दुःख से कष्ट से अपमान से मेरा हृदय विदीर्ण होने लगा। मुझे वे कहां ले जा रहे हैं और किधर जा रहे हैं यह मैं न जान सकी; मुझे विश्वास था, कि यह लोग मुझे मार डालने के लिये ले जा रहे हैं, इसके सिवाय उनका उद्देश्य क्या हो सकता है? किन्तु मुझे मार डालने से उनको क्या लाभ है सो मैं स्थिर नहीं कर सकी, मेरे साथ इतना रुपया उस समय नहीं था, मेरे शरीर पर भी उस समय इतने अधिक जेवर नहीं थे कि, इस के लोभ से वे मुझे मारते। मिःगिवसन्! उस समय मेरे मनकी अवस्था ऐसी होगयी थी, कि उसका वर्णन करना बिलकुल कठिन है। मैंने उन से छोड़ देने के लिये बहुत बिनती की, उनको बहुत रुपया दूंगी यह भी लोभ दिखलाया था, किन्तु वे मुझे छोड़ने के लिये किसी तरह भी राजी नहीं हुए, यहां तक कि मैं ने उन से नक़द दश हजार रुपये देने तक को कहा तो भी वे राजी नहीं हुए; उन ने कहा, "हमको रुपये की दरकार नहीं है, हम तुम्हें चाहते हैं।"

आलिभिया के इस दुःख की कहानी सुनकर मेरा हृदय विदीर्ण होने लगा बदमाशों की निष्ठुरता का परिचय पा मैं क्रोध से चिल्ला उठा; और कहा, यदि यह सब बातें उस समय मैं जानता होता तो उसी जगह उन दोनों नरपशुओं की हत्या कर अपना क्रोध ठण्डा करता। आप को न पाकर हमने जिब्राल्टर में कोई ऐसी जगह नहीं छोडी कि जहां आपके लिये न गये हों, किन्तु हमारी सब चेष्टा, यत्न परिश्रम वृथा हुआ। फिर क्या हुआ कहो?"

आलिभिया कहने लगी, "वे दोनो आदमी मुझे ले एक गली के भीतर होकर एक पहाड के ऊंचे स्थान पर चलने लगे एवम् मुझे एक गन्दे मकान में लेगये, ऐसा दुर्गन्ध मय मकान मैंने जीवन भर कभी नहीं देखा; उस घर में पहुंचते ही उन में से एक आदमी ने एक बोतल में से एक पतली चीज ग्लास में ढालकर मुझ से पीने को कहा; वह क्या चीज है यह बिना जाने मैंने पीने से मना किया वे मुझे बार बार भय दिखलाने लगे, किन्तु मैंने स्थिर किया कि प्राण जाने पर उसे पीऊंगी नहीं, वह विष था या और कुछ सो कह नहीं सकती। उनकी बात पर राजी न होने से उन ने मुझे क्लोरो-फार्म से बेहोश कर दिया, सुतराम् उसके उपरान्त क्या हुआ सो नहीं जानती। मैंने होश होने पर देखा कि मैं एक नाव में सो रही हूं; चारों तरफ निगाह उठाकर देखा कि वे लोग मुझे चुराकर कहां ले जारहे हैं, इस तरह लेजानेसे इनका उद्देश्य क्या है यह न जानसकने के कारण मैंने उनसे पूछा, किन्तु उन्होंने कुछ भी जवाब नहीं दिया, मैं व्याकुल भाव से रोने लगी, मेरे रोने से उनके हृदय में बिन्दुमात्र दया नहीं आयी। मैं अपने मा बाप की यादकर और भी व्याकुल हुई। उसी तरह चलती रही नाव ठहरी नहीं, सफर भी समाप्त नहीं हुआ, मुझे ख्याल हुआ कि, सदा यह लोग इसी तरह समुद्र में मुझे घुमाते रहेंगे। बहुत देर बाद नाव समुद्र किनारे लगी, मेरे साथी मुझे नाव पर से उतार एक कोठरी में लेगये उस कोठरी में प्रायः एक घण्टे तक मुझे रहना पडा, तिस पीछे मेरे लिये डोली आयी, उन ने मुझे उस डोली में बैठने को कहा, डोली लेजाने वाले मुझे बिठला कर फौरन चलने लगे, डोली के साथ एक दल अस्त्रधारी पहरे वालों का था, वे किस के सिपाही थे, मुझे कहां लेजारहे हैं यह न जान सकी, किन्तु वे इतनी जल्दी करने लगे, उस से मुझे अनुमान हुआ कि वे किसी को पीछे आनेके भयसे जल्दी कररहे हैं।"

अलिभिया की बात सुन मेरे मन में ख्याल हुआ, कि नाव से उतरते ही हम ने जो डोली देखी थी सम्भवतः उस डोली में ही अलिभिया थी, तब यदि यह मालूम होता तो, सहज में ही काम पूरा होता और कष्ट सहना नहीं पड़ता, किन्तु यह बात अलिभिया के सामने प्रकट करना आवश्यक नहीं समझी।

अलिभिया कहने लगी, "डोली वाले मुझे एक नगर में ले गये, वह कौन देश था सो भी नहीं जाना। आप लोग मुझे जिस मकान में से लाये थे डोली वाले उसी मकान में मुझे कर गये थे। अभीतक मुझे विश्वास था कि मैं मारडालने के लिये ही लायी गयी हूं, और मैं ऐसी जगह रक्खी गयी हूं कि मेरे मा बाप को इसका बिन्दुमात्र पता नहीं लगेगा। सुतराम् इस जीवन में इन के फन्दे से निकलने की आशा जाती रही। अन्त में मामला क्या है कुछ कुछ समझने लगी, उस देश का सुलतान मेरा विना जाना हुआ नहीं है, कुछ दिन पहले वह हमारे देश में गयाथा, मेरे पिता ने एक दिन उसे बड़े आदरसे नौता देकर खिलाया था, उसी समय हमारे सब कुटुम्बियों के साथ उसकी मुलाकात हुई थी। इङ्गलेण्ड में सुलतान ने मेरे पिता से मित्रता का व्यवहार किया था, किन्तु उसकी राजधानी में पहुंचकर मैंने उसका सच्चा परिचय पाया। वह उस मकान में आ मुझ से मिला, फिर उसने मेरे सामने एक ऐसा बुरा प्रस्ताव उपस्थित किया कि मिःगिवसन्! मैं वह तुम्हारे सामने कह नहीं सकती। उस की बात सुनकर क्रोध के मारे मेरा सब शरीर जलने लगा, मेरी जवान पर जो आया वही कहकर मैं सुलतान को गाली देने लगी। सुलतान ने मेरी बातें सुन क्रोध में उन्मत्त प्रायः हो कांपते कांपते कहा, "यदि तुम मेरे प्रस्ताव को स्वीकार न करोगी तो मेरी आज्ञा से तुम्हारे नाक कान काट लिये जावेंगे, जीभ में छेद कर दिया जावेगा, फिर सख्त तकलीफ देकर तुम्हारी जानली जावेगी।" चलते समय सुलतान मुझ से इतना और कहगया कि कल तुम्हें अपने महलों में मैं लेजाऊंगा। सुलतान की बातें सुनकर मेरे भयकी सीमा न रही, मैंने अपमान से बचने के लिये आत्म हत्या करना ठान लिया, किन्तु सुलतान के जाने के कुछ ही उपरान्त मालूम हुआ कि मेरा कोई बन्धु मुझे यहां से निकालने की चेष्टा कर रहा है, वह बन्धु आपही हैं, यह मैं अनुमान नहीं कर सकी, उस रातको सड़क पर मनुष्यों का भयानक कोलाहल सुन कर मुझे ख्याल हुआ कि,

सुलतान के नौकर मुझे मारडालने की गरज से आरहे हैं। मैं अपने कैदखाने की कोठरी में मरने के लिये तयार खड़ी थी, ऐसे समय में आप अपने दोंनो मित्रों के साथ उस कोठरी के किवाड़ तोड़ मेरे सामने पहुंचे। उस के उपरान्त जो २ हुआ है वह आप जानते हैं।"

बाईसवां परिच्छेद।

अद्भुत चातुर्य्य।

अलिभिया की बात समाप्त होने पर मैं पन्द्रह मिनट तक कुछ नहीं बोला, बालुकापूर्ण सुविस्तीर्ण मरुपथ में चुपचाप घोडे पर सवार हुआ चलने लगा। क्रमशः समय अधिक होने लगा, किन्तु समुद्र तीर वर्त्ती बन्दर उस जगह से अधिक दूर नहीं था, हम चेष्टा करनें से दो पहर पहले ही बन्दर पर पहुंच सकते हैं, किन्तु दिन में उस जगह पहुंचने से कुछ नयी विपत्त में पडसकते हैं, इस आशंका से मैंने स्थिर किया कि सब दिन जङ्गल में छिप कर काटें और रात को अन्धेरे में बन्दर पर चलें। मानालाकी और कनूष्टानिडिस से इन सम्बन्ध में सलाह की, उनने भी इसी युक्ति का समर्थन किया। हम लोग तब रास्ते से कुछ दूर पर ताड के वृक्षों के नीचे विश्राम करने के लिये बैठे; रास्ते की थकावट से हम लोग इतने व्याकुल हो गये थे, कि कुछ समय तक विश्राम करना भी जरूरी था।

कई घण्टे विश्राम के उपरान्त हम फिर घोड़ों पर सवार हुए एवम् दो घण्टे में ही बन्दर पर पहुंच गये। मेरे जिस मित्र ने पहले घोडे मंगवा दिये थे उसी के यहां फिर ठहरे। मानालाकी और कनूष्टानिडिस ने उसी रातको नाव करने के लिये कहा, जितनी जल्दी बन्दर से चलसकें उतना ही अच्छा है क्यों कि सुलतानके गुप्त चर न मालूम कब बन्दर पर हमारी खोज में आजावेंगे यह कौन कहसकता है? और अभीतक वे लोग हमारी खोज में लगे हैं वा नहीं यह न जान सके।

उस मित्र के घर भोजन करने के उपरान्त मानालाकी और कनूष्टानिडिस नाव भाडे पर करने के लिये बाहर हुए। उस रातको अत्यन्त गरमी थी, हम गरमी के कारण घर में घबडाने लगे। लेडी अलिभिया से कहा, "जैसी तेज गरमी है इस से घर में बैठ नहीं

सकते। चलिये छत के ऊपर बैठें, अनुमान होता है कि छत के ऊपर इतनी गरमी नहीं लगेगी।"

अलिभिया ने मेरा प्रस्ताव स्वीकार किया हम दोंनो छत पर जा बैठ गये, उस समय आकाश में पूरब की तरफ चन्द्रमा उदय हो आये थे, उस सुन्दर चन्द्रमा की रोशनीमें रात बडी शोभायमान मालूम होती थी, किन्तु उस समय मुझे प्राकृतिक सौन्दर्य्य उपभोग करने की इच्छा नहीं थी, उस समय मेरे हृदय में अनेक चिन्तायें उपस्थित थीं, मुझे अपने जीवन के विषय में कितनी ही बातें सूझने लगीं; ख्याल होने लगा मेरा जीवन नाटकके तीन अङ्कों में विभक्त कर दिया जासकता है। पहले अंक में उद्देश्य हीन आनन्दपूर्ण बाल जीवन, उस समय कुल पृथ्वी मेरे खेल की चीज थी; जीवन के वे सुखके दिन यादकर मैं लम्बी सांस लेने लगा। फिर जिस दिन घटना चक्र में पड सुलतान के कारागारमें गया था उसी समय से मेरे जीवन नाटक का द्वितीय अंक का आरम्भ है एवम् जिस दिन लेडी अलिभिया से इङ्गलेण्ड में मेरी भेट हुई थी उसी दिन से मेरे जीवन का तीसरे अंक का पर्दा उठा है। चौथे अंक में क्या होगा कौन कहसकता है?

मुझे चुप देख अलिभिया ने कहा, "मिःगिवसन्! आपको इतना गम्भीर क्यों देखती हूं?"

मैंने कहा, "आज आपको यह सब बातें सुनाऊंगा, उनको सुनकर आप समझेंगी मेरे गम्भीर और विमर्ष होने का कारण क्या है; आज मैं अपने गुरुतर अपराध को स्वीकार कर मैं अपने अमार्जनीय अपराध का किञ्चित प्रायश्चित करूंगा।"

चन्द्रमा की चांदनी में अलिभिया का मुंह देखकर मैंने जाना कि, वह मेरी बात सुनकर अत्यन्त विस्मित हुई है। अलिभिया कुछ समय तक सविस्मय मेरी तरफ देखती रही, फिर पूछा, "मिःगिवसन्! आपने ऐसा कौन अपराध किया है कि, उसे मुझे सुनाये बिना काम नहीं चलेगा? वह निश्चय ही कोई बुरी बात है। जिस के कहने में आपको कष्ट होगा, ऐसी कोई बात सुनने की मुझे बिन्दुमात्र इच्छा नहीं है।"

मैंने कहा, "आपकी इच्छा न होने परभी वह बात मुझे आज कहनी पडेगी, आप धैर्य्य धारण कर सुनिये।"

अलिभिया ने कुछ भी जवाब नहीं दिया चुपचाप मेरे मुंह की तरफ देखने लगी।

मैंने कहा, "लेडी अलिभिया आज मैं आपको जो बात सुनाऊंगा, वह आप्रासङ्गिक नहीं है। मैं बहुत दिन तक शान्त चित्त से स्वदेश में रह नहीं सका हूं। युवावस्था से नाना देशों में घूमता फिरता हूं, जीवका के लिये मुझे अनेक समय विपज्जनक काम करने पडे हैं, कई महीने पहले मैं एक गुरुतर काम का भारले अरब राजधानी में गया था, मेरा वह काम सुलतान के अनुकूल नहीं था, सुतराम् पकड जाने पर जीवित रहने की कोई आशा नहीं थी।"

अलिभिया ने कहा, "यदि ऐसी कोई विपत्त उपस्थित होती तो आप सहज में ही ब्रिटिश कौंन्सिल से सहायता की प्रार्थना कर सकते थे।"

मैंने कहा, "नहीं यह बात नहीं थी, मैंने जिस काम का भार लिया था उस की खबर पाने पर ब्रिटिश कौन्सिल भी मुझे सहायता नहीं देती, इस लिये मैं उनसे सहायता मांग नहीं सकता था ऐसे समय में सुलतान को मेरी गुप्तबात मालूम पडगयी, मैंने छिपकर भगने की कोशिश की, किन्तु कृतकार्य्य नहीं हो सका। सुलतान के सिपाही रास्ते में से मुझे पकड़ कर ले गये, फिर मुझे कसवे में कैद कर रक्खा।"

अलिभिया ने पूछा, "कसबा क्या?"

मैंने कहा, "सुलतान का सा कारागार पृथ्वी पर और कहीं है वा नहीं, यह नहीं जानता; उस कारागार के सम्बन्ध में आपके मन में ठीक धारणा उत्पन्न कराना कठिनहै, इङ्गलेण्डके दरिद्र से दरिद्रकी कुटी भी उस के मुकाबले स्वर्ग तुल्य है, उस कारागार के भीतर नित्य जो अत्याचार, उत्पीडन इत्यादि होता है, उसे जिसने देखा है, उस के सिवाय और कोई विश्वास नहीं करसकता। वह नरक तुल्य स्थान है, उसी अन्धेरे नरक में मैं पड़ा रहा।"

अलिभिया ने दुःख से पूछा, "आहा कैसा कष्ट होता होगा।"

मैंने कहा, "लेडी अलिभिया आप मेरे उस कष्ट की बात सुन सहानुभूति प्रकट करती हैं, किन्तु मैं इस के योग्य नहीं हूं असल बात के कहने के लिये ही मेरा यह सब छल है। उस कारागार में में पडते ही मेरी यन्त्रणा की सीमा न रही। मैंने समझा था कि इस नरक से मेरा अब छुटकारा नहीं होगा। यह होसकता है कि मेरे दोनों हाथ काट डाले जावें और नहीं तो मेरी जीभ काटली जावेगी,

यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है। क्यों कि मैं प्रति दिन ही इस तरह के दृष्टान्त देखता था। मुझे नित्य कुछ सूखे खजूर खाने को दिये जाते थे। जो पानी पीने को दिया था उसका रंग हरा होता था। इस प्रकार के असहनीय कष्टों से मैं पागल के समान होगया था। अन्त में एक दिन सुलतान की आज्ञानुसार मैं उनके सामने हाज़िर किया गया। इस सुलतान को आपने इङ्गलेण्ड में देखा था, उस जगह वह जितना सभ्य, भद्र और विनयी देखा था, उसकी प्रकृति वैसी नहीं है। सुलतान ने मुझे जतलाया कि मैं अपने अपराध के लिये कठिन दण्ड पाऊंगा; मुझे प्राण दण्ड मिलेगा। उसने जो सब बातें कह कर मुझे डर दिखलायाथा वह सब बातें आपसे न कहना ही अच्छा है। मैंने प्राण दण्ड की प्रतीक्षा में कारागार में कई एक दिन और वास किया। मैंने स्थिर किया कि यदि मरना ही पडे तो अङ्ग्रेज किस तरह मरते हैं यह सुल्तान को दिखलाऊंगा कापुरुष के समान प्राण त्याग नहीं करूंगा। मेरी उत्कण्ठा की मात्रा एक दम बढ़ गयी, क्यों कि दिन पर दिन जाने लगे किन्तु मुझे प्राणदण्ड नहीं मिला।"

अलिभिया ने कहा, "आपकी उत्कण्ठा समझ गयी हूं, उसके बाद फिर क्या हुआ सो कहो।"

मैंने कहा, "सुलतान ने फिर मुझे अपने सामने बुलाया और कहा, यदि तुम अपने प्राण बचाना चाहते हो तो मेरे प्रस्ताव को स्वीकार करो, यदि मैं उनका एक काम कर सकूंगा तो पुरस्कार स्वरूप में अपनी जिन्दगी और स्वाधीनता पाऊंगा।"

अलिभिया ने पूछा, "उस का प्रस्ताव क्या था? आप अवश्य ही उस प्रस्ताव के सहमत हुए होंगे।"

मैंने कहा, "मैंने इस विषय के सम्बन्ध में कुछ समय विचार ने के लिये लिया। दूसरे दिन फिर सुलतान के सामने हाज़िर किया गया। कारागार की तकलीफ और न सह सकने के कारण मैंने सुलतान से कहा, आप का प्रस्ताव क्या है, कहिये तकलीफ और सही नहीं जाती। जैसे हो मैं इस कारागार से छूटना चाहता हूं। मैंने उनकी आज्ञा पालन करने की सौगन्ध खायी।"

अलिभिया ने कहा, "इस लिये आप को कौन अपराधी ठहरा सकता है? एक तरह सबही अपने प्राण रखनेके लिये बिना संकोच के दूसरे कीशरण लेते हैं।"

मैंने कहा "आप मेरी सब बातें सुनकर मन्तव्य प्रकाश करना। सुलतान ने मुझे अति कठिन प्रण में बांध लिया था; वह प्रण अबभी याद करने से मेरा हृदय विदीर्ण होजाता है।"

अलिभिआने पूछा, "सुलतानने आपको क्या करनेके लिये कहाथा?"

मैंने बड़ी मुश्किल से कहा, " उन दो बदमाशों ने जिस कामका मार लिया था, वही काम करने को सुलतान ने मुझ से कहा था।"

मेरी बात सुन कुछ समय तक अलिभिया चुप रही, फिर मुझ से कहा, " इन दोंनो बदमाशों ने क्या किया था, सो आपको मालूम नहीं, उनने मुझे सुलतान के हाथ में सौंपने के लिये जिब्राल्टर से चुराया था; मुझे असह्य यन्त्रणा दी थी, इस मामले के साथ आपकी बातों का क्या सम्बन्ध है?"

मैंने चिल्लाकर कहा, "आपको चोरी करला सुलतान को सौंपने के लिये मुझे सुलतान ने कठिन प्रण में बांध लिया था, हे परमेश्वर! मेरा अपराध क्षमा करना।"

मेरी बात सुन कर अलिभिया सहम गयी, वह सजीव पुतली के समान मालूम पड़ने लगी। उस समय चन्द्रमा आकाश में बहुत ऊंचे चढ़चुके थे, उस चांदनी में मैं अलिभिया के मुंह की तरफ ताकता रहा, नगर का कोलाहल उस समय तक बन्द नहीं हुआ था, मुसलमानों की मसजिद से उस समय भी भजनों की आवाज आरही थी, किन्तु वे सब शब्द मेरे कानों में प्रवेश नहीं करते थे, मैं भी जड़के समान बैठा रहा।

बहुत देर बाद अलिभिया ने लम्बी सांस ले कहा, " मिःगिवसन् अनुमान होता है कि आप मुझ से दिल्लगी करते हैं; मैं बचपन से ही आपको जानती हूं, आप की यह बातें विश्वास योग्य नहीं है, मैं इन बातों पर विश्वास कर नहीं सकती।"

मैंने उसकी बात का कुछ भी जवाब नहीं दिया, क्या कहूं, मुझे कुछ भी कहना नहीं था।

अलिभिया ने मेरे कन्धे पर हाथ रख कहा, " मिःगिवसन् आप मेरे भाई के मित्र हो, मुझे आप बहिन के समान मानते हो, आप इस प्रकार के असम्भव प्रण में बँधोगे, यह क्या विश्वास के योग्य बात है? आप स्वीकार कीजिये आपकी यह बात सच नहीं है, आप मुझ से परिहास करते हैं।"

तो भी मैं निरुत्तर रहा। समझा, मेरी बात पर विश्वास न करने के के लिये अलिभिया यथासाध्य चेष्टा करती है, मैं यदि कहूं कि यह बात सच नहीं है, काल्पनिक उपकहानी मात्र है, तो यह अत्यन्त आनन्दित होगी, इस में सन्देह नहीं; किन्तु सत्य बात छिपाने की मेरी इच्छा नहीं थी, इसी लिये मैं चुप रहा।

मुझे चुपदेख कर लेडी अलिभिया और भी मेरे पास हट कर आगयी, मेरा हाथ पकड़ कर कहा, "मिःगिवसन् आप कहिये कि यह बात सत्य नहीं परिहास मात्र है; आप मेरे हितैषी बन्धु हैं अपना जीवन विपन्न कर मुझे आपने सुलतान के फन्दे में से निकाला है, आप क्या कभी ऐसी निष्ठुर प्रतिज्ञा में बँध सकते हैं? नहीं, नहीं, यह झूंठी बात है।"

मुझे एक बार ख्याल हुआ, सच कहकर मैंने अच्छा नहीं किया किन्तु अब उसके ढकने का उपाय नहीं है, अब भी उसे अस्वीकार कर सकता हूं, किन्तु मेरा प्रायश्चित कितना ही कठिन क्यों न हो, सत्य छिपाऊंगा नहीं, मैं किस चरित्र का मनुष्य हूं, लेडी अलिभिया यह जानती है; यदि वह मुझे नरपिशाच ख्याल कर घृणा करेगी, तो भी मैं अम्लान-वदनसे सहन करूंगा; कठिन प्रायश्चित आवश्यकहै।

यह सब बातें सोचकर मैंने कांपते हुए कण्ठ से कहा, "लेडी अलिभिया मैंबड़ा हतभाग्य हूं; किन्तु आप की सहानुभूति के योग्य पात्र नहीं हूं, मैं सत्य कहता हूं, आपको सुलतान के निकट पहुंचाने की प्रतिज्ञा में बन्धकर मैंने सुलतान से अपने जीवन और स्वाधीनताकी भिक्षा ली है, मैंने प्रतिज्ञा की थी कि यदि मैं आपको सुलतान के हाथ में न सौंप सका तो मैं अरब में जा अपने को सुलतान को सौंपूंगा, मेरे प्रति जिस दण्ड की आज्ञा होगी वही सहन करूंगा।"

मेरी बात सुन अलिभिया ने एक भी शब्द अपने मुंह से नहीं निकाला, किन्तु जिस भाव से वह मेरी तरफ देखती रही, उस की वह दृष्टि जीवन में कभी न भूलूंगा; वह दृष्टि सन्देह और वेदना से भरी थी, उस से उसके दग्ध हृदय की व्याकुलता प्रकट हुई थी।

बहुत देर बाद अलिभिया ने कहा, "मिःगिवसन् आपके पक्ष में ऐसा काम बिलकुल असम्भव है। आप हमारे बन्धुहैं, इस तरह बन्धु बन्धु का सर्वनाश नहीं करसकता, मुझे आपकी बात पर विश्वास नहीं हुआ।"

मैंने रुकी हुई जबान से कहा, "आप विश्वास भलें ही न करें,

किन्तु यह बात सत्य है, मुझे अपने प्रति जो घृणा हुई है आप उसकी अपेक्षा कभी अधिकतर घृणा नहीं कर सकतीं।"

अलिभिया ने इस बार भी कुछ नहीं कहा, किन्तु देखा, इस बार वह कई हाथ दूर हटकर खडी होगयी; मैं उसके मुंह की तरफ देख रहा था, मुंह पर पाहिलेकी तरह पत्थर की पुतलीका सा भावनहींथा।

इसी तरह प्रायः पांच मिनट बीते। लेडी अलिभिया ने बडे धीरे धीरे कहा, "मिः गिबसन् यदि आपकी बात सच भी हो, तो आप जिस कठिन यन्त्रणा के कारण इस प्रस्ताव के सहमत हुए थे, वह मैं जानगयी हूं; आप यह बात मुझ से न कहते तो भी मैं जान जाती किन्तु आपने अपनी इच्छा से ही यन्त्रणा की सब बातें पहले प्रकट कर दी हैं इसी से मैं जान गयी हूं कि आपका हृदय कितना स्वच्छ है; समझी, आप पापके प्रायश्चित के लिये ही सब कुछ करने को तयार हैं। सुलतान के निकट यदि यह अवेध प्रतिज्ञा में बन्ध कर जो पाप किया है, मुझे शत्रु के हाथ में से निकाल कर उस पाप का उपयुक्त प्रायश्चित कर चुके; यदि नारी—हृदय की दुर्बलता के वश क्षण भर के लिये मैंने आप को अविश्वास की निगाह से देखा है कृपा कर आप उसे क्षमा करना, आइये हम दोनों इस दुखदायी बात को भूल जावें, और इस बात की प्रतिज्ञा करें कि यह बात हमारे जीननमें और कभी याद न आवे।"

रमणी के मूंह से ऐसी सदाशयता पूर्ण बात जीवन में और कभी सुनी है वा नहीं सन्देह है, मैं विस्मित मुग्ध और पुलकित हो गया, क्या कहूं कुछ कहने को न मिला, मैं चुप चाप बैठा रहा। कितनी देर तक उस भाव से रहा, कह नहीं सकता, किन्तु अल्पक्षण परे ही घर के मालिक ने आकर कहा, कि बड़े कष्ट से उसने हमारे लिये एक नाव भाड़े पर की है, मानालाकी और कन्ष्टानिडिस हमारे लिये नीचे खड़े प्रतीक्षा कर रहे हैं।

हम और देर न कर नीचे उतर आये अलिभिया के चेहरे की तरफ देखा, उसकामूंह अत्यन्त मलीन है, उसके मनमें कुछ भी उत्साह नहीं है। वह अब भी मुझे सन्देह की निगाह से देखती है वा नहीं यह समझ में नहीं आता। हम घर के मालिक से बिदा ले दश मिनट में समुद्र तीर पर उपास्थित हुए, इस बीच में अलिभिया ने एक बात भी नहीं कही, और मैं भी नहीं बोला। निः शब्द हम बोट पर

सवार हुए एवम् अलिभिया को बोट के कमरे में जाने के लिये कहा, अलिभिया मेरी बात पर ध्यान न दे नाव में बाहर ही बैठी रही, अनुकूल वायु-प्रवाह होने से नाव जिब्राल्टर की तरफ जल्दी चलने लगी। अलिभिया को सुलतान के फंदे में से निकालकर मेरा हृदय जितना आनन्द पूर्ण होना चाहिये था, उतना आनन्द नहीं हुआ नि-दारुण उदासी और जड़ता से हृदय पूर्ण होगया।

चन्द्रमा की चांदनी में समुद्र के ऊपर बड़ी नाव में बैठे हुए जिब्राल्टर की तरफ जाते हुए मुझे ख्याल हुआ कि, मानों किसी अनजान देश को मैं रवाने हो रहा हूं। नाव के मल्लाह आनन्द से अरबी भाषा में बातें कर रहे थे, मानालाकी और कनूष्टानिडिस भी ध्यान पूर्वक तासें खेल रहे थे। तरंगों की टक्कर से नाव भी झोटा खा रही थी एवम् जल की छल छल आवाज हमारे कानों में प्रवेश कर रही थी। सब रात नाव में सवार रहने पर सबेरे जिब्राल्टर के टीले हमारी निगाह पडने लगे। नाव के ऊपर लेडी अलिभिया से मेरी बहुत बातें नहीं हुईं, इतने समय के उपरान्त उसने मुझसे कहा "मिः गिवसन् आपका भाव देखने से अनुमान होता है, कि आप बड़े कष्ट से समय बिता रहे हैं, आप कहिये कि मेरे क्या करने से आप प्रसन्न होंगे, आप के दिल दुखने का कारण मैं जान गयी हूं, आपके मनकी वेदना दूर करना मेरा सब से पहला काम है, यदि मैं यह नहीं कर सकूं तो मैं मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं, आप ने अपने मनकी सब बातें खुलकर मुझ से कही हैं, आपका साहस और वीरत्व अतुलनीय है। स्वीकार करती हूं कि आपने प्राण रक्षा के लिये अन्याय कर्म करना मंजूर किया था, किन्तु आपने उस लालच को छोडमेरा उद्धार करने में महा विपत्ति के सामने पडने में तनक भी संकोच नहीं किया, आपका प्रण सिद्ध हुआ है, इस लिये मैं चिर दिन आपके निकट कृतज्ञ रहूंगी, इसके सिवाय मुझे कहना है, आप क्षोभ त्याग कीजिये, गयी हुई बातों को भूल जाइये।" अलिभिया ने प्रसन्न मुख हो अपना दाहिना हाथ मेरी तरफ बढाया।

मैंने उसका हाथ पकड जोर से कहा, "अलिभिया, आप मुझ से घृणा कीजिये, मेरा अनादर कीजिये, मुझे क्षमा न करना, मैं आपकी क्षमा के बिलकुल अयोग्य हूं। मैं महा अपराधी हूं, किन्तु तथापि परमेश्वर जानता है कि मैं आपका कितना भला चाहता हूं।"

अलिभिया ने अपना हाथ मेरे हाथ में से खींचकर कहा, " मिः गिवसन् आप की बात सुनकर मुझे बडा दुख हुआ।"

मैंने कहा, " मैं अपने मनकी बातें आप से न कहता। मेरे मनकी बातें मेरे मन में ही रहतीं, इस जीवन में और किसी के साम ने भी न कहता; आप मुझे क्षमा कीजिये, मैंने आपके अपकारकी चेष्टा करके भी ऐसे प्रेम का जाल बिछाया है, यह मेरे पक्ष में बहुत ही बुरी बात है; मैंने जो कुछ कहा है उसे भूल जाइये, मुझे नितान्त गँवार समझिये; चिर दिन ख्याल रखिये कि मैं आपके विश्वास के योग्य नहीं हूं।"

अलिभिया ने मेरे कंधे पर हाथ रख कहा, " मिःगिबसन् आप ऐसी बातें क्यों कहते हैं ? मैंने क्या कहा नहीं, कि मैं अन्तः करण से आपको क्षमा करती हूं ? आपने भी जब यह कह दिया कि मैं आप का भला चाहता हूं तब फिर यह मन की वेदना क्यों ? आप तो जान ते हैं आपके प्राणपण चेष्टा करे बिना मेरा सुलतान के फंदे में से निकलना बिलकुल असम्भव था; इस लिये मैं फिर कहती हूं, अप्रीति कर बीती बातें भूल जाइये, मनको स्थिर कीजिये, यह देखिये जिब्रा-ल्टर के पहाड साफ साफ दिखायी देते हैं, हमारी यात्रा भी प्रायः शेष हो आयी है, अब हमको उदासभाव से समय बिताना उचित नहीं समझा, स्वाधीनता प्राप्त कर पिता माता को देखने की आशा से अलिभिया का मन प्रसन्न हो रहा है। किन्तु मुझे प्रसन्न होने का कारण क्या है ? मेरा हृदय श्मशान के समान निरानन्दमय है, मेरा आनन्द, उत्साह, सुख, शान्ति सबही सुस्त पड़ गये हैं।

क्रमशः हमारी नाव जिब्राल्टर के बन्दर के पास पहुंची, हमारा किनारे पर उतरने का समय हुआ। अलिभिया ने कहा, " मैं अब कुछ ही समय में अपने बाप मा को देख सकूंगी, मेरे हृदय में आनन्द नहीं समाता; आपके अनुग्रह से मैं फिर सुखका मुंह देखने में समर्थ हुई।"

मैंने कहा, " लेडी अलिभिया मैंने आपके लिये कुछ विशेष नहीं किया, मैंने अपने गुरुतर अपराध का किंचित मात्र प्रायश्चित किया है, आपने अपने बडप्पन के गुण से मेरा अपराध क्षमा कर दिया है सही, किन्तु मैं अपने को आप कैसे भी क्षमा नहीं कर सकता, आप कुछ दिन में ही स्वदेश को लौट जावेंगी, फिर आपसे मिलना

असम्भव है, इस लिये कभी कभी इस हतभाग्य की बात याद करने से ही मैं सुखी होउंगा, मेरी प्रेतात्मा उस से तृप्ति होवेगी।"

मेरी बात सुनकर अलिभिया के रोमाञ्च खडे हो गये, और उस ने पूछा, "आप की इस बात का क्या मतलब है? हम लोगों के किनारे उतरने का समय होगया है; आप मेरे साथ चलिये। मेरे माता पिता मेरे उद्धार की बात सुन अत्यन्त आनन्दित होंगे; आप क्या उन से कृतज्ञता प्रकाश कराने में संकोच करते हैं?"

मैंने शिर हिलाकर कहा, "ना, मैं किनारे पर नहीं उतरूंगा, मुझे बिदा दान कीजिये। मानालाकी आपको आप के पिता के पास लेही जावेंगे, आप अब सहजमें ही उसके ऊपर निर्भरकर सकती हैं"

अलिभिया ने पूछा "किनारे पर नहीं उतरोगे तो कहां जावोगे? आप हमारे साथ चलने में अनिच्छा क्यों प्रकट करते हैं? आपका मतलब समझ में नहीं आया, साफ साफ कहिये।"

मैंने जवाब कुछ भी नहीं दिया, शिर झुकाये बैठा रहा।

अलिभिया ने फिर मुझ से पूछा।

अबकी बार मैंने कहा, "इसी नाव से मैं अरब लौट जाऊंगा।"

मेरी बात सुनके उसकेरोमाञ्च खडे हो गये, एक टक मेरी तरफ देखते हुए उसने कहा आप क्या कहते हैं, अरब क्यों लौट जावेंगे?"

अरब क्यों लौट जाऊंगा, यह बात उससे कहने की इच्छा नहीं थी; किन्तु यह जानने के लिये उसका बहुत आग्रह करने पर मैंने कहा, "उस जगह मुझे एक काम है, उस जगह बिना जाये काम नहीं चलेगा।"

अलिभिया ने कहा, "मिः गिवसन् आप अपने मनका भाव मुझ से छिपाते हैं, किन्तु आप का अभिप्राय मैं जानती हूं आप सुलतान के निकट जो प्रण कर आये थे वह नहीं कर सके इस लिये अपनी प्रतिज्ञानुसार सुलतान को आत्मसमर्पण करने जाते हो, क्यों यह बात क्या सत्य नहीं है?"

मैं यह बात अस्वीकार नहीं कर सका, किन्तु स्वीकार करने की कोई आवश्यकता नहीं देखी, सुलतान का काम पूरा करूंगा इस लिये मैं उस से रुपया लाया था, उसका काम पूरा न कर सकने के कारण मैं लौट कर जा उस से दंड ग्रहण करूंगा, इसी अंगीकार में बँधा हूं, इस अवस्था में मुझे अरब न जाने का उपाय ही क्या है?

स्वीकार करता हूं कि मैं अनायास ही दूर देश जा सकता हूं, सुलतान की शक्ति के बाहर है कि वह मुझे तलाश कर पकड मँगवावे और दंड दे; किन्तु मैं किस तरह प्रतिज्ञा भंग करूंगा ? तुच्छ प्राण के भय से कापुरुष की तरह भागूंगा ? अपने चरित्र में कलंक-कालिमा लेपन करूंगा ? न मैं ऐसा नहीं करसकता ।

अलिभिया ने कहा, "आप अरब पहुंचने पर बडी विपत्त में पडेंगे, यह क्या आप जानते नहीं है ? आपकी चेष्टा से ही मैंने छुटकारा पाया है, यह बात सुलतान जरूर जान गया है; आपको अपने कब्जे में पा सुलतान खूब यन्त्रण दे आपके प्राण लेगा, आप क्यों आत्म हत्या करने को जाते हैं ? ऐसा पागलपने का काम क्यों करते हैं ?"

मैंने कहा, "मेरा काम पागलपने का नहीं है; आदमी के समान मैंने सुलतान के काम करने के लिये उस से बहुत रुपये लिये हैं, किन्तु मैं उसके लिये कुछ भी नहीं कर सका, इस अवस्था में उसके पास जा दण्ड ग्रहण करने के सिवाय और क्या उपाय है ?"

आलिभिया ने कहा, " आप बुद्धिमान होकर निर्बोध की सी बातें क्यों करते हैं ? जबरदस्तीको कोई किसी अन्याय के काम की प्रतिज्ञा कराले और वह पूर्ण न होसके तो इस में कुछ भी पाप नहीं है। मैं सुलतान का पूर्ण परिचय पा चुकी हूं, वह अति जघन्य चरित्र का आदमी है, उसके हृदय में दया बिलकुल नहीं है, आप के प्रति बिन्दुमात्र भी दया प्रकट नहीं करेगा । मैं आपके यह सब प्रलाप वाक्य सुनना नहीं चाहती, आप चलिये, आपको मैं छोड नहीं सकती हमारे साथ आपको स्वदेश चलना पडेगा ।"

मैंने कहा, " न , आप मुझ से ऐसा अनुरोध न कीजिये, मैं अपना संकल्प तोड नहीं सकता, मैंने कर्त्तव्य स्थिर किया है, मेरा जो कर्त्तव्य है, आत्म सन्मान रक्षा के लिये वह मुझे करना ही पडेगा ।"

अलिभिया इस वार रोने लगी, रुकी हुई आवाज में कहा, " तो मैं आपको क्या कहूं, परमेश्वर आपकी रक्षा करेगा ।"

अलिभिया नाव से किनारे पर उतरी, मानालाकी इतने समय से मेरा अभिप्राय समझा नहीं था, मुझे नाव पर बैठा देख उसने पूछा " आप क्यों नहीं उतरते ?"

मैंने अपना अभिप्राय छिपाकर कहा, " मानालाकी ! तुम लेडी अलिभिया को लाटभवन ले जाओ, उस जगह तुम डयूक से फौरन

इनाम पाओगे, कनूष्टानिडिस को भी जो इनाम देना स्वीकार कर लिया है वह भी तुरन्त मिलजावेगा, मैं इसी बोट पर अरब लौट कर जाता हूं।"

मानालाकी मेरी बात सुन बहुत समय तक सविस्मय मेरे मूंह की तरफ ताकता रहा, मानों मेरी बात पर उसे विश्वास नहीं होता। फिर उसने अत्यन्त तेजभाव से कहा, आप क्या पागल होगये हैं? ऐसी पागलों के समान बात क्यों कहते हैं? पागल भी तो ऐसा काम नहीं करता। इतने दिनों में भी क्या आप सुलतान को नहीं पहचान सके? जो हो आप यदि नितान्त ही अरब लौट कर जाना चाहते हैं तो मैं भी आपके साथ चलूंगा। आप मेरे मित्र हैं आपको बिपत में पटक कर मैं अलग नहीं रहूंगा; कनूष्टानिडिस लेडी अलिभिया को लाटभवन में पहुंचा आओ, मैं अब एक कदम भी नहीं बढूंगा।"

मैंने हंसकर कहा, "तुम मेरे साथ क्यों जाओगे? तुम सुलतान के निकट किसी प्रतिज्ञा में बंधे नहीं हो, मेरे साथ चलकर क्यों प्राण देते हो? मैं अकेला ही जाऊंगा किसी तरह तुम्हें साथ नहीं ले चलूंगा।"

मानालाकी मुझे छोडनेको कैसे भी राजी नहीं हुआ, अन्त में जब मैं बहुत जिद्द करने लगा, अत्यन्त विरक्त होगया तब उसने मेरी बात मानी और कहा, "आप जब इतने नाराज होते हैं तो मैं आपके विरुद्ध कोई काम नहीं करूंगा, मैं इसी जगह रहूंगा, आपके अरब से न लौट कर आने तक मैं आपकी प्रतीक्षा करूंगा, जब देखूंगा कि आप लौटे नहीं, और लौटने की आशा न रहेगी तब समझूंगा, कि सुलतान ने आपको मार डाला है, तब मैं अरब जाऊंगा, और अपने इन हाथों से सुलतान का माथा फोडूंगा। यदि यह न किया तो मेरा नाम मानालाकी नहीं।"

मैंने इस सम्बन्ध में कुछ भी न कह मल्लाहों से नाव चलाने को कहा, अलिभिया ने एक बार मेरी तरफ कातर दृष्टि से देखा, फिर आखें पोंछ मानालाकी के साथ लाटभवन की तरफ रवाने हुई, मैं दीर्घनिश्वास त्याग भाराक्रान्त हृदय से अरब की तरफ जाने लगा।



तेईसवां परिच्छेद।

उपसंहार।

मुझे अब और अधिक कहना नहीं है।

दूसरे दिन सन्ध्या को अरब के किनारे नाव पहुंची, मैंने अपने पूर्वोक्त मित्र के पास सब बातें खुलकर कहीं एवम् एक घोडे पर सवार हो अवसन्न हृदय से राजधानी की तरफ चला।

मेरे मन में बिन्दुमात्र आशा वा उत्साह नहीं था, जो मरने को जाता है, उसे आनन्द, उत्साह प्रफुल्लता कुछ भी नहीं रहता, मेरी भी आज वही दशा है। दो दिन बाद मैं अति धीमी चाल से राजधानी में पहुंचा, तब सन्ध्या हो चुकी थी, मैं बाजार में होकर धीरे २ मेरे पूर्व वर्णित वासे पर पहुंचा और घोडे पर से उतरा। दरवाजे पर मेरे मित्र ने आ स्वागत किया।

मित्र ने मुझे देख अति विस्मय से कहा, मैं क्या स्वप्न देखता हूं तुम फिर यहां आये हो! तुम्हें बहुत थका हुआ देखता हूं, भीतर आ विश्राम करो, फिर सब बातें सुनूंगा।"

कई घंटे बिश्राम कर लेने पर मित्र के साथ भोजन करने बैठा, मुझे भूख बहुत नहीं थी, मित्र के कहने से अनिच्छा रहते हुए भी कुछ खाया। भोजन के उपरान्त मित्र के साथ छत पर गया। बातों ही बातों में उसने कहा, "तुम लौटकर आये सो अच्छा नहीं किया; तुम जो लेडी अलिभिया को लूट कर ले गये हो यह बात सुलतान को मालूम होगयी है। उस ने शपथ करली है कि जैसे हो, वैसे तुम को पकडकर मंगा खूब यन्त्रणा दे मार डालेगा।"

मैंने कहा, "सुलतान से मिलने के लिये ही मैं आया हूं।"

मेरी बात सुनते ही मित्र सन्न होगया, दोनों हाथ माथे पर रख कहा, "तुमको निश्चय भूत लगा है, क्रोधित शेर के पिंजडे में प्रवेश कर कौन जीता निकला है? मेरी सलाह मानो, जैसे हो वैसे आज रातको ही इस जगह से चलेजाओ, तुम इस जगह लौटकर आये हो यह बात कुछ छिपी नहींरहेगी,सुलतान यह खबर पाते ही तुम्हें पकड मँगा अत्यन्त यन्त्रणा देप्राण दण्ड देगा।"

मैंने कहा, "विधि के अङ्क कोई नहीं मेट सकता, सुलतान के हाथ से यदि मरना बदा है तो कहीं भी भाग कर जान नहीं बचा

सकता। बचने की आशा रखता तो मैं कैसे भी यहां लौटकर नहीं आता। यह सब बातें जाने दो, कुछ नयी खबर है क्या ?"

मित्र के साथ अनेक बातों में रात कट गयी, स्थिर किया कि "दूसरे दिन दोपहर को सुलतान के दरबार में हाजिर होऊंगा, मरना है ही, फिर सुलतान के सामने कोई बात छिपाकर नहीं रखूंगा उसको सब बातें खुलासा कर समझाऊंगा, अङ्गरेज प्रतिज्ञा पालन करने के लिये किस तरह निःसंकोच मृत्यु का आलिङ्गन करता है।

बहुत रात बीते सोया, सुनकर विस्मित होंगे, उस रातको मुझे खूब गहरी नींद आयी। शिरके ऊपर मृत्यु खड़ी थी, तथापि मुझे स्वप्न हीन चैन से नींद आयी मुझे अपने अन्तिम समय में भी लेडी अलिभिया की बात बार बार याद आने लगी।

दूसरे दिन दो पहर से पहले मैं बाहर नहीं निकला, मैं जब कि इच्छा पूर्वक सुलतानको आत्मसमर्पण करने आया हूं तब सुलतान के गुप्तचरों द्वारा अपने को पकडवाने की मेरी इच्छा नहीं थी।

दूसरे दिन मेरा मित्र किसी काम के लिये बाहर गया, मैं मकान म बैठा मौत के लिये तयार होने लगा। समय ग्यारह बजे का है, ऐसे समय में सडक पर नगर बासियों का हल्ला सुनायी दिया। उसका मतलब समझ नहीं सका, इसका कारण क्या है, इसकी चिन्ता करने के लिये भी मुझे अवसर नहीं था। जो मरने के लिये तयार है, उसे क्या परवाह चाहे संसार रसातल को क्यों न चला जावे। तो भी इतना समझ में आया कि मामला बहुत बड़ा है। इतने में ही मेरा मित्र बडे उत्तेजित्त भाव से घर में आया।

मैंने उस से पूछा, "मामला क्या है ? इतना गोलमाल क्यों है ?"

मित्र ने हांपते हुए कहा, और क्या कहूं भाई, तुम्हारा नसीब अच्छा है, इस यात्रा में बच गये, तुमको सुलतान के पास अब और जाना नहीं होगा।"

मैंने सविस्मय पूछा, "मामला क्या है, खुलकर क्यों नहीं कहते तुम्हारी बात मैं कुछ भी नहीं समझा, क्या हुआ ? सुलतान ने क्या मेरा अपराध क्षमा कर कोई सूचना प्रकट की है ? सुलतान के दरबार में मुझे क्यों नहीं जाना पडेगा ?"

मित्र ने कहा ठहरो मुझे दम लेने दो, फिर मैं तुम्हारी बात का उत्तर देता हू। तुम्हें सुलतान के दरबार में जाना नहीं पडेगा क्यों

कि, अब वह नहीं है; एक विद्रोही जन ने उसको छुरा से मार डाला है। सुलतान मसजिद में नवाज पढ़ने गया था, नवाज पढ़कर वह लौट कर जा रहा था ऐसे समय में यह घटना हुई। तुम्हारे ऊपर परमेश्वर की बड़ी कृपा है, जिस से तुम्हारी जान बचगयी।"

मैंने ताज्जुब से पूछा, "तुम क्या कह रहे हो? यह बात क्या सच है? इस पर मेरा विश्वास नहीं होता।"

मित्र ने कहा, "परमेश्वर की सौगन्ध मैं सचकह रहा हूं, यह क्या दिल्लगी की बात है? इतनी बड़ी बात कह कर क्या कोई दिल्लगी करने का साहस कर सकता है? और तुम क्या ख्याल करते हो कि मैं तुम्हें ऐसी विपत्त के समय झूठ बोलकर भुलाऊंगा? यह खबर शहर के लोगों की जबानी सुनी है, राजधानी के एक सिरे से दूसरे सिरे तक महाकोलाहल हो रहा है; उन्मत्त विद्रोही लोगों ने नगर को लूटना शिरू किया है; उनका कोलाहल क्या तुम्हें सुनायी नहीं दिया?"

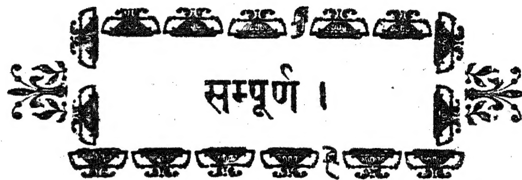
जो आदमी समुद्र में डूबता हुआ देवानुग्रह से किसी बे मालुम उपाय से बचजावे, तब उसके मनकी दशा जिस तरह की होगी, मेरे मन की भी वैसी ही हुई। छाती के ऊपर से मानो बीस मन पत्थर का बोझा हट गया। मैंने दोनों घोंटू टेक कर सविनय ईश्वर को धन्यबाद दिया, और शान्ति प्राप्तकी।

सुनने में आया कि सुलतान के यथेच्छाचार के कारण प्रजा के हृदय में जो आग धुंधक रही थी, सहसा उसके प्रज्वलित होने से सुलतान को भस्म कर दिया।

मैं इस घटना के उपरान्त अरब से चलकर दक्षिण अफ्रीका को गया एवम् वहां वाणिज्य-व्यवसाय में प्रवृत हुआ; भाग्यलक्ष्मी मेरे प्रति प्रसन्न हुई थी। कुछ दिनों में ही मैं प्रचूर धन का अधिकारी होगया; गवर्नमेण्ट ने भी मेरा खूब सन्मान किया, किन्तु मैंने उस समय तक विवाह नहीं किया। अलिभिया की बात आज तक भूल नहीं सका। उसके प्रति मेरा अनुराग बिन्दुमात्र भी नहीं घटा। सुना है कि अलिभिया ने भी अभीतक विवाह नहीं किया। मैं पार्लिमेण्ट का महासभ्य बनने के लिये दो एक महीने में ही स्वदेश जाऊंगा

अर्थबल से हो सका तो मैं कृतकार्य्य हो सकूंगा । स्वदेश में पहुंचने पर अलिभिया से निश्चय मिलूंगा; उसकी मीठी बातों से मेरे प्राण परितुष्ट होंगे । और क्या होगा, सो अब किस तरह कह सकता हूं ?





सम्पूर्ण ।

